राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

Www.gauravshalibharat.com

गौरवशाली भारत

नई दिल्ली से प्रकाशित

वर्ष : 12
अंक : 68
पृष्ठ : 08
नई दिल्ली
गुरुवार 22 सितंबर 2022
मूल्य : 1.50/-
RNI No .DELHIN/2011/38334

मुख्य अपडेट

पेज 3 दिल्ली में 15 सेमी ऑटोमेटिक पिस्टल और 45 कारतूस के साथ हथियार तस्कर गिरफ्तार

पेज 5 वाराणसी फिर शर्मसार: स्कूल बस में एलकेजी की बच्ची से छेड़छाड़, सीसीटीवी फुटेज में वारदात कैद, चार पर केस

पेज 7 'प्रमोशन नहीं मिला तो बॉस समेत पूरे परिवार को उतारा मौत के घाट, 8 साल बाद हुआ गिरफ्तार

दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने मुंबई में जब्त की 1,725 करोड़ की हेरोइन

तस्करी के पीछे अफगानी नागरिक का हाथ

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने मुंबई के नवा शेवा पोर्ट पर हेरोइन से भरी कंटेनर जब्त की है। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने बताया है कि जब्त की गई हेरोइन की बजन करीब 22 टन के आसपास है। यह हेरोइन लीकोरिस से लेपी गई थी। लीकोरिस को आम बोलचाल की भाषा में हम मुलेठी के नाम से जानते हैं। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने बताया कि जब्त की गई 22 टन हेरोइन की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में तकरीबन

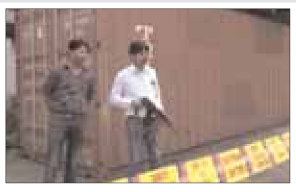

1,725 करोड़ रुपए के आसपास है।

दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने बताया कि जब्त की गई हेरोइन को पाकिस्तान से भेजा गया है। इस हेरोइन को भेजने वाली कंपनी अफगानिस्तान की है। साथ ही हेरोइन की कंसाइनिंग कंपनी दुबई की है। स्पेशल सेल ने बताया कि इस पूरे प्रकरण के पीछे एक अफगानी नागरिक का हाथ है जिसे गिरफ्तार कर लिया गया है।

दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल के एचएस धालीवाल ने बताया कि अफगानी नागरिक ही इस पूरे तस्करी का मास्टरमाइंड है। जब्त की गई 22 टन हेरोइन की कीमत कम से कम 1,725 करोड़ रुपए है। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

राजू श्रीवास्तव का दिल्ली एम्स में निधन

हार्ट अटैक के बाद 42 दिन से चल रहा था इलाज, आज दिल्ली में सुबह 9 : 30 बजे अंतिम संस्कार

नई दिल्ली। गजोधर भैया अपनी जिंदगी के मंच से उतर गए। सामने लोग बैठे रहे और काला पर्दा झूल गया। राजू श्रीवास्तव की बीमारी और अस्पताल में भर्ती होने की खबरें बनते-बनाते आखिरी खबर आ गई। बुधवार सुबह 10 बजे के करीब दिल्ली एम्स में उनका निधन हो गया।

उमर 58 साल थी। दिल्ली में ही 10 अगस्त को एक्सरसाइज करते उन्हें हार्ट अटैक आया था। उसके बाद से ही एम्स में भर्ती थे। इलाज में पता चला था कि दिल के एक हिस्से में 100त्न ब्लॉकेज है।

पिछले 42 दिनों में कई बार बेहतर होती सेहत की खबरें आती रहीं। लेकिन आखिरकार आखिरी खबर आई राजू चला गया, ये कहते हुए कि जिंदगी में ऐसा काम करो कि यमराज भी आएं तो कहें कि भैंसे पर आप बैठिए, मैं पैदल चलूंगा.. आप नेक आदमी हैं। ये राजू की ही कही है।

सपना हीरो बनने का था और उसका पीछा करते राजू 1982 में मुंबई आ गए। लेकिन जिंदगी तो जिंदगी है। पहला काम ऑटो ड्राइवर का मिला। लेकिन अपना काम वहां भी जारी रखा। अपने चुटकुलों से सवारियों को हंसाते और मंजिल पर पहुंचाते। ऐसे ही एक दिन एक सवारी ने पहला स्टेज परफॉर्मेंस दिला दिया। पैसे मिले 50 रुपए। फिर तो ऐसा बारहा होने लगा।

राजू ज्यादातर समय अमिताभ की नकल करते और उन्हीं की तरह दिखने की कोशिश भी होती। यही पहचान बनती गई। फिल्म में मौका मिला 1988 में आकर, तेजाब से। हीरो अनिल कपूर थे।

जॉनी लीवर के साथ राजू भी दिखे। दूरदर्शन पर 1994 के शो टी टाइम मनोरंजन में मौका मिला। इसके बाद ग्रेट इंडियन लाफ्टर चैलेंज राजू ने तीसरा स्थान हासिल किया। यहां से पहचान बढ़नी शुरू हुई। फिर कॉमेडी का महा मुकाबला, कॉमेडी सर्कस, देख भाई देख, लाफ इंडिया लाफ, कॉमेडी नाइट विद कपिल, द कपिल शर्मा शो और गैंग्स ऑफ हंसीपुर जैसे शो करते चले गए।

जालंधर की लवली यूनिवर्सिटी में हंगामा

स्टूडेंट ने हॉस्टल में सुसाइड किया, केरल के प्रोफेसर को जिम्मेदार ठहराया

जालंधर। चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी वीडियो कांड विवाद अभी थमा भी नहीं है कि जालंधर की लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी में मंगलवार आधी रात हंगामा हो गया। यूनिवर्सिटी के हॉस्टल में एक छात्र ने सुसाइड कर लिया। केरल के रहने वाले अगिन के कमरे से सुसाइड नोट भी मिला है। उसने 2 हफ्ते पहले ही LPU में एडमिशन लिया था और इससे पहले वह NIT कालीकट में पढ़ रहा था।

अगिन ने अपनी मौत के लिए केरल के कोझीकोड़ स्थित NIT कालीकट के प्रोफेसर प्रसाद कृष्णा को जिम्मेदार ठहराया है। उसने सुसाइड नोट में लिखा है- मेरी मौत के लिए सीधे तौर पर NIT कालीकट के प्रोफेसर प्रसाद कृष्णा जिम्मेदार हैं। उन्होंने मुझे प्रताड़ित किया और भावनात्मक रूप से जोड़-तोड़ कर कॉलेज छोड़ने के लिए मजबूर किया। मुझे अपने फैसले पर बहुत पछतावा है। मुझे क्षमा करें, शायद मैं सबके लिए

बोझ बन रहा हूं। अगिन कालीकट NIT में बैचलर ऑफ डिजाइनिंग का सेकेंड ईयर का छात्र था। वहां कोई विवाद हो जाने पर प्रोफेसर प्रसाद कृष्णा ने उसे NIT छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। दो हफ्ते पहले ही उसने LPU में फर्स्ट इयर में एडमिशन लिया था। 2 साल बर्बाद हो जाने की वजह से अगिन तनाव में था।

साथी के सुसाइड के बाद छात्रों का हंगामा

हॉस्टल में स्टूडेंट के खुदकुशी करने का खुलासा तब हुआ, जब LPU के गुस्साए छात्रों ने हंगामा शुरू कर दिया। आधी रात डेढ़ बजे के आसपास हॉस्टल्स में रहने वाले ज्यादातर छात्र कैंपस में जमा हो गए और 'वी वॉन्ट जस्टिस' के नारे लगाने शुरू कर दिए। कुछ छात्रों ने LPU के मेनगेट से बाहर निकलकर जालंधर-नई दिल्ली नेशनल हाईवे पर भी जाने की कोशिश की। हालांकि गेट पर तैनात सिक्योरिटी गार्ड्स और पुलिस ने उन्हें बाहर नहीं निकलने दिया।

पुलिस ने चलाई लाठियां

छात्र LPU प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी कर रहे थे। उनका आरोप था कि जिस स्टूडेंट की मौत हुई है, वह बच सकता था, लेकिन यूनिवर्सिटी में एम्बुलेंस देर से पहुंची। छात्र मांग कर रहे थे कि मृतक के कमरे से जो सुसाइड नोट मिला है, उसे सार्वजनिक किया जाए।

पुलिस और यूनिवर्सिटी मैनेजमेंट ने काफी देर तक छात्रों को मनाने की कोशिश की। जब छात्र नहीं माने और ज्यादा हंगामा करने लगे तो पुलिस ने उन्हें तितर-बितर करने के लिए हल्का बलप्रयोग किया। इसमें कुछ छात्रों को चोटें आईं।

पोस्टमॉर्टम के लिए शव नहीं ले जाने दिया

घटना की सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंचे पुलिस अधिकारियों ने अगिन की बॉडी एम्बुलेंस में डालकर पोस्टमॉर्टम के लिए फगवाड़ा सिविल अस्पताल के लिए रवाना की, मगर प्रदर्शनकारी छात्रों ने एम्बुलेंस का रास्ता रोक लिया। वह शव को यूनिवर्सिटी के बाहर नहीं ले जाने दे रहे थे।

दिल्ली में ट्रक ने सड़क किनारे सो रहे लोगों को रौंदा, 4 की मौत; 2 घायल

सभी लोग रोड किनारे डिवाइडर पर सो रहे थे

नई दिल्ली। बुधवार की सुबह दिल्ली से एक मनहूस खबर आई है। दिल्ली में बड़ा सड़क हादसा हुआ है। तेज रफ्तार की कहर ने यहां 4 लोगों की जान ले ली है।

यहां एक ट्रक ने कुल 6 लोगों को रौंद डाला है। बताया जा रहा है कि यह सभी लोग रोड किनारे डिवाइडर पर सो रहे थे। इस भयानक हादसे में 4 लोगों की मौत हो गई है। 2 लोग इस हादसे में गंभीर रूप से घायल हुए हैं। घायलों का इलाज अभी अस्पताल में चल रहा है।

एजेंसी ने पुलिस के हवाले से जो खबर दी है उसके मुताबिक, एक अज्ञात ट्रक ने करीब 1 बजकर 51 मिनट पर दिल्ली की सड़क पर यह

कत्ल-ए-आम मचाया है। इस हादसे में 4 लोगों की मौत हो गई है। बताया जा रहा है कि सीमापुरी में डीटीसी डिपोट रेडलाइट क्रॉस करते वक्त यह ट्रक सड़क किनारे डिवाइडर पर सो रहे लोगों को कुचलते हुए निकल गई। हादसे में दो लोगों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। एक अन्य को अस्पताल में मृत घोषित कर दिया गया, जबकि चौथे शख्स की मौत अस्पताल में इलाज के दौरान हुई है।

इस हादसे के बाद वहां अफरातफरी मच गई थी। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और मृतकों के शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में यह बताया जा रहा है कि अंधेरे का फायदा उठाकर ट्रक चालक मौके से ट्रक लेकर फरार हो गया। फिलहाल पुलिस अब इस पूरे हादसे की जांच-पड़ताल में जुटी हुई है।

इस हादसे में मरने वालों की पहचान 52 साल के करीम, 25 साल के छोटे खान, 38 साल के शाह आलम और 45 साल के राहुल के तौर पर हुई है। इसके अलावा जो दो अन्य लोग घायल हुए हैं उनकी पहचान 16 साल के मनीष और 30 साल के प्रदीप के तौर पर हुई है।

इस भयानक सड़क हादसे को अंजाम देने वाले ट्रक का पता लगाने के लिए कई टीमें बनाई गई हैं। पुलिस ने इस मामले में केस दर्ज किया है।

करीम, छोटे खान और शाह आलम न्यू सीमा पुरी इलाके के रहने वाले थे। राहुल विक्रम इनक्लेव, शालीमार गार्डन, शाहीबाबाद के रहने वाले थे। हादसे में घायल मनीष गगन विहार, तुसली निकेतन, शाहीबाबाद के रहने वाले हैं तथा प्रदीप ताहीपुर गांव, दिल्ली के रहने वाले हैं।

नफरत भरे भाषणों को जगह देने वाले टीवी चैनलों पर सर्वोच्च न्यायालय ने जताई नाराजगी

एजेंसी

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने बुधवार को मुख्यधारा के समाचार चैनलों पर बहस करने के तरीके पर नाराजगी व्यक्त की, जो अक्सर नफरत फैलाने वाले भाषणों को जगह देते हैं। साथ ही केंद्र सरकार से पूछा कि इन नफरत भरे भाषणों के मामले में मूक दर्शक क्यों बनी हुई है।

सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने पूछा कि केंद्र सरकार अभद्र भाषा के मुद्दे पर मूकदर्शक क्यों बनी हुई है।

पीठ ने केन्द्र सरकार के वरिष्ठ कानून अधिकारी अतिरिक्त महाधिवक्ता (एएसजी) के एम नटराज से पूछा , क्या समस्या है? भारत सरकार कोई स्टैंड क्यों नहीं ले रही है? सरकार मूकदर्शक क्यों बनी हुई है?।

यह भी कहा गया और सुझाव दिया गया कि केंद्र सरकार को इस मुद्दे पर

प्रतिकूल रुख नहीं अपनाना चाहिए बल्कि अदालत की मदद करनी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने उन मुख्यधारा के टीवी समाचार चैनलों की खिंचाई की जो अक्सर अभद्र भाषा के लिए जगह देते हैं, और आकलन किया कि अभद्र भाषा से राजनेताओं को सबसे अधिक लाभ होता है और टीवी समाचार चैनल अभद्र भाषा के लिए इनको मंच प्रदान करते हैं।

न्यायमूर्ति केएम जोसेफ की अध्यक्षता वाली और न्यायमूर्ति हृषिकेश रॉय की एक पीठ ने कहा, इस प्रकार, टीवी चैनल की बहस में एंकर की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण और पेचीदा होती है और कहा कि यह सुनिश्चित करना उनका कर्तव्य है कि शो में आमंत्रित किया गया मेहमान अभद्र भाषा में लिप्त न हों।

न्यायमूर्ति जोसेफ ने कहा, एंकर की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। मुख्यधारा के मीडिया या सोशल मीडिया पर ये भाषण जो अनियमित हैं। एंकर की भूमिका महत्वपूर्ण है। जैसे ही आप किसी को अभद्र भाषा में जाते देखते हैं, यह एंकर का कर्तव्य है कि वह तुरंत देखें कि वह क्या करता है उस व्यक्ति को ऐसा करने की अनुमति न दें,।

शीर्ष अदालत ने 'हेट स्पीच 'की घटनाओं के खिलाफ कदम उठाने के लिए उचित दिशा-निर्देश की मांग करने वाली याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए ये टिप्पणियां कीं।

पीठ ने कहा कि अभद्र भाषा से राजनेताओं को सबसे ज्यादा फायदा होता है और टीवी न्यूज चैनल अभद्र भाषा को मंच देते हैं।

कोविड - 19 : देश के 11 राज्यों में कोरोना मामलों में बढ़ोतरी

सक्रिय मामलों की दर 0.11 प्रतिशत है, दैनिक संक्रमण दर 1.33 प्रतिशत है और मृत्यु दर 1.19 फीसदी पर बरकरार

नयी दिल्ली। देश में कोरोना संक्रमण मामलों में लगातार उतार-चढ़ाव बना हुआ है। यहां पिछले 24 घंटों में आठ राज्यों और तीन केन्द्र शासित प्रदेश में कोरोना सक्रिय मामलों में बढ़ोतरी हुई है और अन्य राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में इसके मामलों में कमी देखी गयी है।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने बुधवार को बताया कि सुबह सात बजे तक 216.95 टीके दिये जा चुके हैं और इस अवधि में कोरोना महामारी संक्रमण के 4,510 नये मामले सामने आने के साथ संक्रमितों का कुल आंकड़ा बढ़कर 4,45,47,599 हो गया। इसी अवधि

में महामारी से 14 और मरीजों की मौत होने से मृतकों का आंकड़ा बढ़कर 5,28,403 हो गया है। सक्रिय मामलों की दर 0.11 प्रतिशत है, दैनिक संक्रमण दर 1.33 प्रतिशत है और मृत्यु दर 1.19 फीसदी पर बरकरार है।

स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार पिछले 24 घंटे में कोरोना महामारी के सक्रिय मामले 1163 घटने से इनकी संख्या 46,216 रह गई जबकि इसी अवधि में 5,640 मरीज स्वस्थ होने से इनकी इनकी कुल संख्या बढ़कर 4,39,72,980 हो गयी है। देश में स्वस्थ होने की दर 98.71 प्रतिशत है। पिछले 24 घंटों में 3,39,994 कोविड परीक्षण किए गये हैं। जिसके बाद कुल परीक्षणों की संख्या 89.23 करोड़ हो चुकी हैं।

बुनियादी ढांचे के विकास से बदल रही है देश की तस्वीर : गडकरी

एजेंसी

नयी दिल्ली। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा है कि राजस्थान तथा गुजरात सीमा से संतालपुर खंड तक छह लेन वाले राष्ट्रीय राजमार्ग-एनएच-754ए पर हरित परियोजना का काम तेजी से पूरा किया जा रहा है।

गडकरी ने बुधवार को ट्वीट करके कहा कि यह खंड भारतमाला परियोजना चरण-1 के तहत गुजरात में अमृतसर-जामनगर आर्थिक गलियारे का हिस्सा है और इसे 2,030 करोड़ रुपये की लागत से बनाया जा रहा है। परियोजना पर काम पूरा होने के बाद इस खंड में यात्रा का समय दो घंटे और यात्रा की दूरी 60 किमी कम हो जाएगी।

उन्होंने कहा कि प्रदूषण के स्तर को कम करने, खंड के पूरे रास्ते पर बीचोंबीच एवं छायादार मार्ग पर वृक्षारोपण पारिस्थितिकी तंत्र को समृद्ध करेगा और एसडीजी को बढ़ावा देगा। उन्होंने कहा कि यह मार्ग सीमा पर तैनात बलों, सशस्त्र बलों, सैन्य वाहनों आदि की आवाजाही को आसान एवं सुविधाजनक बनाएगा। यह राजमार्ग भारत-पाकिस्तान सीमा के करीब है। नये भारत को विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे का केन्द्र बनाने के संबंध में श्री गडकरी ने कहा कि सरकार उत्कृष्ट संपर्क और विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे के माध्यम से भारत को बदलने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

कोविड टीकाकरण में 216.95 करोड़ से अधिक टीके लगे

नयी दिल्ली। देश भर में राष्ट्रीय कोविड टीकाकरण अभियान के अंतर्गत 216.95 करोड़ से अधिक कोविड टीके लगाए गए हैं।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने बुधवार को यहां बताया कि आज सुबह सात बजे तक दो अरब 16 करोड़ 91 लाख 51 हजार 591 टीके दिये जा चुके हैं। मंत्रालय ने बताया कि पिछले 24 घंटों में कोविड संक्रमण के 4,510 नये मरीज सामने आयें हैं। इनके साथ ही देश में कोरोना रोगियों की संख्या 46 हजार 216 रह गयी है। यह संक्रमित मामलों का 0.10 प्रतिशत है। दैनिक संक्रमण दर 1.33 प्रतिशत हो गयी है। मंत्रालय ने बताया कि इसी अवधि में 5,640 लोग कोविड से मुक्त हुए हैं।

योगी सरकार फेल

3 माह का भ्रूण लेकर एसएसपी दफ्तर पहुंची पीड़िता की सास, कहा-बहू को दिलाएं इंसाफ

रेप कैपिटल यूपी : बरेली में महिला के साथ गैंगरेप, गर्भपात

फरीदपुर। बरेली में एक गर्भवती के साथ गैंगरेप किया गया। गर्भवती खेत की ओर गई थी। इस दौरान युवकों ने उसे दबोच लिया। गर्भ में पल रहे 3 महीने के बच्चे की मौत हो गई। महिला की सास डिब्बे में भ्रूण लेकर एसएसपी आफिस पहुंची। महिला ने न्याय की गुहार लगाई है।

गर्भवती काफी देर तक घर नहीं लौटी तो परिजन उसकी तलाश करने लगे। खेत की ओर पहुंचे तो वहां महिला बेसुध पड़ी थी। उसकी हालत गंभीर थी। उसे अस्पताल ले जाया गया। इसके बावजूद चिकित्सक बच्चे की जान नहीं बचा पाए। घटना बसारतगंज थाने के मझगवां गांव की है। एसपी ग्रामीण राजकुमार अग्रवाल ने मामले की जांच कराकर कार्रवाई करने की बात कही है।

डिब्बे में भ्रूण लेकर पहुंची महिला

नवागत एसएसपी अपने दफ्तर में फरियादियों की सुनवाई कर रहे थे। इस दौरान एक महिला एक डिब्बे में 3 माह का भ्रूण लेकर पहुंची। वह जिला अस्पताल के डॉक्टरों पर गंभीर आरोप लगाने लगी। महिला का आरोप था कि उसकी बहू जिला अस्पताल में भर्ती है। उसकी देखभाल नहीं हो रही है। बहू के साथ गांव के तीन लोगों ने दुष्कर्म किया। इसी विवाद में तीन माह

का भ्रूण भी गिर गया।

परिवार ने दर्ज कराया मुकदमा

एसपी ग्रामीण राजकुमार अग्रवाल ने बताया कि बिशारतगंज थाना क्षेत्र के एक व्यक्ति ने थाने में मुकदमा दर्ज कराया है। आरोप है कि गांव के कुछ लोगों ने उनकी पत्नी से गैंगरेप किया है। इससे उसकी पत्नी का गर्भपात हो गया।

मामले में मुकदमा दर्ज किया गया है। शुरुआती जांच में यह बात सामने आई है कि घटना वाले दिन दोनों पक्षों में विवाद हो गया था।

बाद में ग्रामीणों के बीच बैठकर दोनों पक्षों में लिखित समझौता भी हो गया था। महिला का मेडिकल परीक्षण कराया गया है। पीड़िता के बयान दर्ज कराए जा रहे हैं। मामले की जांच कराई जा रही है।

परिजन तीन दिन तक चुप रहे। पुलिस को सूचना नहीं दी। उसके बाद 16 सितंबर को बिशारतगंज पुलिस को शिकायत की। लेकिन पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज नहीं की। पुलिस वालों ने कहा कि इतने दिन बाद क्यों आई हो। साथ ही पुलिस कह रही थी कि ये मारपीट का मामला है। हालांकि, बाद में एसएसपी के कहने पर रिपोर्ट दर्ज कर ली गई।

एसएसपी बोले- दोनों पक्षों में पहले हो चुका है विवाद

एसएसपी राजकुमार अग्रवाल ने बताया,दोनों पक्षों में पहले भी विवाद हो चुका है। मारपीट की बात सामने आई है। लेकिन पीड़िता की शिकायत पर मुकदमा कर आरोपियों को अरेस्ट कर लिया गया। पीड़िता को मेडिकल के लिए भेजा गया है।

मोदी ने चीन सीमा के मामले पर देश को अंधेरे में रखा : कांग्रेस

एजेंसी

नयी दिल्ली। कांग्रेस ने कहा है कि सीमा पर चीन की घुसपैठ को लेकर मोदी सरकार ने देश को अंधेरे में रखा है और यह खुलासा खुद लद्दाख के ग्रामीणों ने किया है।

कांग्रेस प्रवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा है कि चीन सीमा पर मोदी सरकार बराबर घुसपैठ नहीं होने की बात करती है। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके मंत्रिमंडल के सदस्यों के साथ पूरी सरकार इस तरह की किसी भी घुसपैठ से इनकार करती है।

उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने किस तरह से देश को अंधेरे में रखा है

इसका खुलासा वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) की आखिरी बस्ती लद्दाख के चुसुल के ग्रामीणों ने किया है और कहा है कि सरकार ने उनके गांव के आसपास के बड़े इलाके को बफर जोन घोषित कर दिया है।

प्रवक्ता ने कहा कि इन ग्रामीणों ने कहा है कि जब से कुरांग घाटी के प्वाइंट 15, 16 और 17 पर भारतीय सेना को गश्त करने की मनाही हुई है तब से सरकार ने घास के बड़े बडे क्षेत्रों को नो मैंस लैंड यानी प्रतिबंधित क्षेत्र घोषित कर दिया है। उन्होंने कहा कि सरकार ने इन क्षेत्रों में पशु चराने के लिए भी मना कर दिया है।

उन्होंने मोदी सरकार को हर मोर्चे पर विफल बताया और कहा चाहे रसोई का खर्चा हो या एलएसी का मोर्चा भाजपा की नाकामी से देश की हालत हो गई है पतली, असल मुद्दों से गुमराह करने को बनाया है ईडी को कठपुतली। बाज़ार मंदा, सब्ज़ियां महंगी, कैसे जलेगा चूल्हा। मोदीजी बताइये, क्या ऐसे ही देश चलेगा।

शार्ट न्यूज

जामिया मस्जिद पूरी तरह खुली है, कश्मीर पुलिस ने किया साफ

श्रीनगर। श्रीनगर स्थित ऐतिहासिक जामिया मस्जिद बंद होने पर ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी के दावे का जवाब देते हुए जम्मू-कश्मीर पुलिस ने इसे अफवाह बताते हुए कहा कि मस्जिद पूरी तरह से खुली हुई है और ऐसे मामलों में दूर होने के कारण जानकारी नहीं होने का बहाना नहीं बनाया जा सकता। ओवैसी ने मंगलवार को दावा किया कि श्रीनगर की ऐतिहासिक जामिया मस्जिद हर शुक्रवार को बंद रहती है। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा द्वारा रविवार को दक्षिण कश्मीर के पुलवामा और शोपियां में बहुउद्देशीय सिनेमा हॉल का उद्घाटन करने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए श्री ओवैसी ने ट्वीट किया और सिन्हा से पूछा,श्रीनगर जामिया मस्जिद हर शुक्रवार को क्यों बंद रहती है। उन्होंने कहा,आपने शोपियां और पुलवामा में सिनेमा हॉल खोले हैं, लेकिन श्रीनगर जामिया मस्जिद हर शुक्रवार को बंद क्यों रहती है, कम से कम दोपहर के मैटिनी शो के दौरान इसे बंद न करें। श्रीनगर पुलिस ने हालांकि उसी दिन श्री ओवैसी की ट्वीट पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए इसे कोरी अफवाह करार दिया था और कहा कि दूर रहने को अज्ञानता के लिए बहाना नहीं बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा,जामिया पूरी तरह से खुली है, कोविड के बाद केवल तीन मौकों पर इसे आतंकवादी हमले या कानून और व्यवस्था की स्थिति के इनपुट के कारण शुक्रवार दोपहर की नमाज के लिए अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया था।

मोदी म्यांमार में अवैध रूप से बंदी बनाए गए 300 भारतीयों को छुड़ायें : स्टालिन

चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के.स्टालिन ने बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर म्यांमार में अवैध रूप से बंदी बनाये गए भारतीयों का तत्काल बचाव और उनकी सुरक्षित स्वदेश वापसी सुनिश्चित करने का अनुरोध किया है। प्रधानमंत्री को लिखे अर्द्ध-सरकारी पत्र में श्री स्टालिन ने कहा कि राज्य सरकार को प्राप्त सूचना प्राप्त हुई है कि करीब 50 तमिलों समेत 300 भारतीय म्यांमार में फंसे हुए हैं और गंभीर कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। पत्र की प्रति यहां मीडिया को भी जारी की गयी। उन्होंने कहा कि बताया गया है कि वे शुरुआत में निजी भर्ती एजेंसियों के माध्यम से सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) से जुड़ी नौकरी के लिए थाईलैंड गए थे। अब पता चला कि उन्हें ऑनलाइन अवैध नौकरियों के लिए जबरन थाईलैंड से म्यांमार ले जाया गया था। स्टालिन ने कहा,आगे, रिपोर्ट मिल रही हैं कि काम करने से इन्कार करने वाले भारतीयों पर उनके नियोक्ताओं ने उन पर शारीरिक हमला किया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार 17 ऐसे तमिलों के संपर्क में है जो जल्द से जल्द हस्तक्षेप करने और उन्हें बचाने के लिए सरकार का सहयोग मांग रहे हैं। उन्होंने श्री मोदी से इस मामले में तत्काल हस्तक्षेप करने और उचित माध्यम के जरिये म्यांमार से सभी भारतीयों की तत्काल वापसी सुनिश्चित करने की मांग की है।

पत्नी की हत्या कर शव के 72 टुकड़े करने वाले राजेश गुलाटी की शार्ट टर्म बेल बढ़ी

नैनीताल। उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने देहरादून के बहुचर्चित अनुपमा गुलाटी हत्याकांड में आजीवन कारावास की सजा काट रहे राजेश गुलाटी को राहत देते हुए बुधवार को उसकी अल्पकालिक जमानत (शार्ट टर्म बेल) बढ़ा दी। यह दूसरा बार है जब अदालत ने उन्हें शार्ट टर्म बेल के मामले में राहत दी है। वरिष्ठ न्यायमूर्ति संजय कुमार मिश्रा और न्यायमूर्ति आलोक कुमार वर्मा की युगलपीठ में राजेश गुलाटी की ओर से पेश जमानत याचिका पर आज सुनवाई की। याची की ओर से कहा गया कि उसकी सर्जरी हुई है और चिकित्सकों ने उन्हें आराम करने की सलाह दी है। याचिकाकर्ता की ओर से अदालत के समक्ष मेडिकल दस्तावेज भी पेश किये गये। अदालत ने अंत में राजेश गुलाटी को राहत देते हुए 21 दिन की अल्पावधि जमानत बढ़ा दी। इससे पहले भी अदालत ने राजेश गुलाटी को 45 दिन और 10 दिन की शार्ट टर्म बेल दी थी। पेशे से सॉफ्टवेयर इंजीनियर राजेश गुलाटी ने 17 अक्टूबर, 2010 को देहरादून में अपनी पत्नी अनुपमा गुलाटी की निर्मम हत्या कर दी थी। शव के 72 टुकड़े कर डीप फ्रिजर में छिपा दिया था। देहरादून की अदालत ने इस हत्याकांड को जघन्य मानते हुए 01 सितम्बर, 2017 को राजेश गुलाटी को आजवीन कारावास की सजा सुना दी थी। गुलाटी की ओर से निचली अदालत के आदेश के खिलाफ 2017 में उच्च न्यायालय में अपील दायर की गयी थी।

न्यायालय ने शिमला नगर निगम परिसीमन मामले में फैसला सुरक्षित रखा

शिमला। हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय ने बुधवार को उपायुक्त शिमला और राज्य सरकार द्वारा शिमला नगर निगम के परिसीमन को चुनौती देने वाली याचिका पर फैसला सुरक्षित रख लिया। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के पूर्व पार्षद राजीव ठाकुर और कांग्रेस के सिमिनंदा द्वारा ने शिमला नगर निगम के परिसीमन को चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय में एक चुनाव याचिका दायर की थी। फागली और समरहिल वार्डों के परिसीमन को रद्द करने के लिए मामले को मंगलवार और बुधवार को न्यायमूर्ति सबीना और न्यायमूर्ति सुशील कुकरेजा की अदालत में सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया गया था। उच्च न्यायालय ने दो नगर निगम वार्ड और तीन अन्य वार्डों में परिसीमन प्रक्रिया के खिलाफ आपत्ति और शिकायत पर विचार करने के लिए दोनों याचिकाकर्ता के पक्ष में पहले ही आदेश पारित कर दिया था। राज्य चुनाव आयोग ने भी इस मामले में उच्च न्यायालय के स्थगन आदेश को रद्द करने के लिए उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटाया और शिमला नगर निगम चुनाव कराने के लिए इस याचिका का विरोध किया जो जून के महीने में निर्धारित किया गया था, लेकिन पहले मामला लंबित होने के कारण उच्च न्यायालय के समक्ष नहीं रखा जा सका। उच्चतम न्यायालय ने राज्य उच्च न्यायालय को याचिका का निपटारा करने का आदेश दिया है और एसईसी की याचिका को आंशिक रूप से स्वीकार करते हुए 29 सितंबर से पहले मामले में फैसला सुनाने की बात कही। जिला प्रशासन ने प्रत्येक वार्ड में मतदाताओं की संख्या को कम करने के लिए हाल ही में शिमला के नगर निगम वार्ड की संख्या मौजूदा 34 से बढ़ाकर 41 कर दी है।

आप ने कांग्रेस पर लगाया अवैध खनन में शामिल नेताओं को पनाह देने का आरोप

चंडीगढ़। आम आदमी पार्टी (आप) ने बुधवार को कांग्रेस पर आरोप लगाया कि वह अपने भ्रष्ट नेताओं को बचा रही है, जिन्होंने आम लोगों के कल्याण के लिए काम करने के बजाय दशकों तक पंजाब को लूटा है। आप के प्रदेश प्रवक्ता मलविंदर सिंह कंग ने यहां संवाददाता सम्मेलन में पंजाब प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वाड़िंग और विपक्ष के नेता प्रताप सिंह बाजवा से सवाल किया कि अगर उनके नेता बेदाग हैं और उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया है तो वे सरकारी जांच से क्यों डरते हैं। श्री कंग ने उन्हें सलाह दी कि वे केवल राजनीति के लिए अपने संदिग्ध नेताओं के पापों को न ढकें और सच्चाई की जीत होने दें। कंग ने नौ जुलाई, 2021 को सीबीआई के एक पत्र का हवाला देते हुए कहा कि सीबीआई ने पंजाब के मुख्य सचिव को तत्कालीन विधानसभा अध्यक्ष और वरिष्ठ कांग्रेस नेता राणा केपी सिंह के खिलाफ अवैध खनन मामले की जांच के लिए एक पत्र लिखा था, लेकिन तत्कालीन मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार ने मामले को दबा दिया था। उन्होंने कहा कि सीबीआई ने मूल दस्तावेजों के साथ एक शिकायत भेजी थी जिसमें कहा गया था कि राणा केपी अवैध खनन में शामिल था और वह रोपड़ और आनंदपुर साहिब में अपने सहयोगियों के माध्यम से क्रशर मालिकों से सुरक्षा राशि के रूप में लाखों का मासिक भुगतान प्राप्त कर रहा था, लेकिन तत्कालीन सरकार ने इस मामले की जांच नहीं की। कंग ने कांग्रेस को भ्रष्ट लोगों की पार्टी करार दिया और कहा कि पिछली सरकारों के दौरान बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार और घोटाले हुए थे और मान सरकार उचित जांच के बाद सभी भ्रष्ट लोगों को पकड़ने के लिए बिना किसी पूर्वाग्रह के काम कर रही है। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि पंजाब सरकार और जांच एजेंसियों को सहयोग करने के बजाय कांग्रेस नेतृत्व अभी भी अपने नेताओं को छुपा रहा है।

राहुल की भारत जोड़ो यात्रा में लगा सावरकर का पोस्टर

कांग्रेसियों को पता चला तो गांधी जी की फोटो से ढक दिया

कोच्चि। कन्याकुमारी से कश्मीर तक निकाली जा रही राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा गुरुवार को केरल के कोच्चि पहुंचेगी। यात्रा के स्वागत के लिए यहां स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के पोस्टर लगाए गए थे। इनमें स्वतंत्रता सेनानी विनायक दामोदर सावरकर का पोस्टर भी लगाया गया था। कांग्रेसियों को जैसे ही इसकी जानकारी लगी, उन्होंने आनन-फानन में उसके ऊपर गांधी जी की फोटो लगा दी। सात सितंबर को कन्याकुमारी से शुरू हुई यात्रा गुरुवार को कोच्चि पहुंचेगी। यहां राहुल गांधी प्रेस कॉन्फ्रेंस भी करेंगे। यात्रा के स्वागत के लिए यहां लंबे-लंबे बैनर लगाए गए हैं, जिसमें स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की फोटो है। एक बैनर में गोविंद बल्लभ पंत और चंद्रशेखर आजाद की फोटो के बीच में विनायक दामोदर सावरकर की भी फोटो लगी थी। जैसे ही इसकी जानकारी कांग्रेसियों को लगी, तुरंत गांधी जी का एक पोस्टर मंगाया और सावरकर की फोटो के ऊपर लगा दिया। सोशल मीडिया पर इसके फोटो और वीडियो वायरल हो रहे हैं। कांग्रेस की ओर से इस पर कोई कमेंट नहीं आया है। तीन साल पहले दिल्ली के रामलीला मैदान पर कांग्रेस ने मोदी सरकार के खिलाफ 'भारत बचाओ' रैली की थी। इस रैली में राहुल गांधी काफी तल्ख नजर आए थे। उन्होंने कहा था कि ये देश पीछे नहीं हटता। मुझे कहते हैं कि सही बात बोलने के लिए माफी मांगूं। भाइयों-बहनों, मेरा नाम राहुल सावरकर नहीं, राहुल गांधी है। मैं सच्चाई के लिए कभी माफी नहीं मांगूंगा और न कोई कांग्रेस वाला माफी मांगेगा।

3570 किमी की भारत जोड़ो यात्रा

तमिलनाडु के कन्याकुमारी से शुरू हुई भारत जोड़ो यात्रा इन दिनों केरल में है। यहां से यात्रा आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, यूपी, दिल्ली, हरियाणा और पंजाब होते हुए केंद्र शासित प्रदेश कश्मीर तक जाएगी। राहुल की यह यात्रा करीब 3570 किमी है।

केटीआर,कजाकिस्तान में 'डिजिटल ब्रिज फोरम' में आमंत्रित

हैदराबाद। तेलंगाना के सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री के टी रामाराव को 28 सितंबर से कजाकिस्तान के नूर-सुल्तानिन में होने वाले दो दिवसीय '2022 डिजिटल ब्रिज फोरम' में सम्मानित अतिथि के रुप में आमंत्रित किया गया है। कजाकिस्तान सरकार की ओर से कजाकिस्तान गणराज्य के डिजिटल विकास, नवाचार और एयरोस्पेस उद्योग मंत्री बगदात मुसिन द्वारा तेलंगाना में केटीआर के नाम से लोकप्रिय मंत्री को निमंत्रण दिया गया है। फोरम की मेजबानी मंत्रालय करेगा। 'मध्य एशिया एक मंच के रूप में' विषय के तहत, आईटी और नवाचारों में प्रवृत्तियों, चुनौतियों और प्रगति का पता लगाया जाएगा।

ओडिशा : अतिरिक्त तहसीलदार की करोड़ों की संपत्ति का खुलासा

भुवनेश्वर। ओडिशा सतर्कता विभाग के अधिकारियों ने बुधवार को सुंदरगढ़ जिले में तंगरापल्ली के अतिरिक्त तहसीलदार कुलमणि पटेल के पास करोड़ों रुपये की आय से अधिक संपत्ति का पता लगाया। विभागीय सूत्रों ने यहां बताया कि आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने के आरोप पर कार्रवाई करते हुए सतर्कता विभाग की ओर से सुंदरगढ़ जिले में कुलमणि के आठ ठिकानों पर चार पुलिस उपाधीक्षकों, दस इंस्पेक्टर, चार एएसआई और अन्य कर्मचारियों के नेतृत्व में एक साथ तलाशी ली गयी ।छापेमारी लेफ्रिपाड़ा में कुलमणि तीन मंजिला इमारत, चिताभंगा में दो मंजिला इमारत, डुमरबहल में तीन और डुमरबहल में दो मकानों , तंगरापल्ली में उनके कार्यालय कक्ष, चिताभागा में उनके रिश्तेदार के मकान और सुंदरगढ़ जिले के सिपुकछार में प्राथमिक विद्यालय में उनकी पत्नी के कार्यालय कक्ष में एक साथ की गई। अधिकारियों ने तलाशी के दौरान अब तक लेफ्रिपाड़ा में एक तीन मंजिल मकान, चिताभंगा में दो घरों और एक दो मंजिला भवन, डुमरबहल में तीन मकान , डुमरबहल में मकान और सुंदरगढ़ जिले के प्रमुख क्षेत्र में 21 भूखंडों का पता लगाया है ।सतर्कता विभाग की तकनीकी विंग भवनों और भूखंडों का विस्तृत मूल्यांकन कर रही है।

डिग्गी में डूबने से दो व्यक्तियों की मौत

श्रीगंगानगर। राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले में पिछले 24 घंटों के दौरान दो व्यक्तियों की पानी में डूबने से मौत हो गई। श्रीविजयनगर थाना पुलिस के मुताबिक चक 10-बीएलएम निवासी एक बुजुर्ग व्यक्ति पन्नाराम ओड (79) गांव के वाटर वर्क्स की डिग्गी में कूदकर आत्महत्या कर ली। पन्नाराम परसो लापता हो गया था। मंगलवार को उसका शव वाटर वर्क्स की डिग्गी में मिली। उधर, सीमावर्ती श्रीकरणपुर थाना क्षेत्र के चक 15-ओ निवासी तीर्थ सिंह की आज खेत में बनी पानी की डिग्गी में डूब जाने से मौत हो गई। पुलिस के मुताबिक सूचना मिलने पर मौके पर जाकर शव को डिग्गी से निकलवाया गया।

हाईकोर्ट ने पौराणिक लक्ष्मी नारायण मंदिर के 100 मीटर दायरे में मलबा डंपिंग पर लगायी रोक

एजेंसी

नैनीताल। उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने बुधवार को जारी अपने महत्वपूर्ण निर्णय में बदरीनाथ यात्रा मार्ग के अंतिम पड़ाव हाट गांव में आदि शंकराचार्य की ओर से स्थापित लक्ष्मी नारायण मंदिर के 100 मीटर दायरे में कूड़ा एवं मलबा डंपिंग पर रोक लगा दी है।

मामले को हाट गांव के ग्राम प्रधान राजेन्द्र हटवाल की ओर से एक जनहित याचिका के माध्यम से चुनौती दी गयी है। इस प्रकरण की सुनवाई मुख्य न्यायाधीश विपिन सांघी और न्यायमूर्ति आरसी खुल्बे की युगलपीठ में हुई। याचिकाकर्ता की ओर से अदालत को बताया गया कि हाट गांव में प्राचीन मंदिरों का समूह है। इसमें लक्ष्मी नारायण मंदिर के अलावा शिव, चंडिका, गणेश और सूर्य कुंड आदि के साथ ही स्थानीय भूम्याल एवं बगडवाल देवताओं के स्थान शामिल हैं। मंदिर का गर्भगृह आज भी यहां मौजूद है।

इन मंदिरों की स्थापना 8वीं-9वीं सदी में आदि शंकराचार्य जी ने की और मान्यता है कि बदरीनाथ की यात्रा यहीं से संचालित होती है और बदरीनाथ का अंतिम पड़ाव होने के कारण इस मंदिर में उन लोगों के लिये पूजा करने के लिये एक वैकल्पिक स्थान प्रदान किया गया जो बदरीनाथ की कठिन यात्रा नहीं कर पाते हैं। इसीलिये एक महत्वपूर्ण पौराणिक स्थल के साथ साथ विरासत का दर्जा दिया गया है।

याचिकाकर्ता की ओर से आगे कहा गया कि टिहरी हाइड्रो डेवलपमेंट कारपोरेशन इंडिया लिमिटेड (टीएचडीसीआईएल) की ओर से अलकनंदा नदी पर बिष्णुगाड-पीपलकोटि जल विद्युत परियोजना का निर्माण किया जा रहा है और कंपनी की ओर से 2008-09 में परियोजना के लिये भूमि का अधिग्रहण किया गया। कंपनी ने कुछ ग्रामीणों को विभिन्न सब्जबाग दिखाकर पुनर्वास शुरू कर दिया।

मेघालय से बंगलादेश को अवैध खनन, कोयला निर्यात करने पर उच्च स्तरीय जांच

एजेंसी

शिलांग। केंद्रीय कोयला मंत्रालय के तहत कोयला नियंत्रक संगठन ने मेघालय के रास्तों से बंगलादेश को अवैध खनन और कोयला निर्यात करने की जांच के लिए एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया गया है।

मेघालय उच्च न्यायालय की खंडपीठ में चंपर एम संगमा द्वारा दायर एक जनहित याचिका (पीआईएल) की सुनवाई के दौरान कोयला नियंत्रक ने मंगलवार को मेघालय उच्च न्यायालय को अवगत कराया।

अदालत ने कहा, कोयला नियंत्रक की ओर से प्रस्तुत किया गया है कि याचिकाकर्ता द्वारा लगाए गए गंभीर आरोपों की जांच के लिए एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया गया है कि मेघालय में अवैध रूप से खनन किए गए कोयले को असम के कोयले के रूप में दिखाया गया है और इेस दस्तावेजों में दर्शाकर पड़ोसी देश को ऐसे कोयले का निर्यात किया जा रहा है।

उच्च न्यायालय ने 19 अक्टूबर को गैसुआपारा निवासी मैकेल टी. संगमा द्वारा दायर एक रिट याचिका पर सुनवाई करने का भी फैसला किया क्योंकि मामले में उठाए गए मुद्दे चैंपर एम. संगमा द्वारा दायर जनहित याचिका जैसा ही था। यह उल्लेख किया जा सकता है कि उच्च न्यायालय ने 26 मई को गुवाहाटी स्थित जय मां कोल प्राइवेट लिमिटेड द्वारा गैसुआपारा भूमि कस्टम स्टेशन, साउथ गारो हिल्स के माध्यम से जारी किए गए ई-वे बिल के साथ कोयले के सभी निर्यात को तब तक रोक दिया था जब तक कि मूल दस्तावेज के बारे में विवरण नहीं बताया जाता है।

अदालत ने राज्य सरकार से प्रारंभिक रिपोर्ट मांगी थी कि जिस कोयले को गैसुआपारा में डंप किया गया था, वह मेघालय में कैसे आया। अदालत ने राज्य में कोयला लाने और कोयले उत्पादन के प्रमाण की भी मांग की।

पूनियां ने सदन में आमेर फोर्ट से कुंडा तक की प्रमुख सड़क बनाने का मुद्दा उठाया

जयपुर। राजस्थान में भारतीय जनता पाटी के प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक डा सतीश पूनियां ने आमेर फोर्ट से कुंडा तक की प्रमुख सड़क बनाने का मुद्दा आज विधानसभा में उठाया। डॉ. पूनियां ने शून्यकाल में नियम 295 के तहत विशेष उल्लेख प्रस्ताव के तहत यह मुद्दा उठाते हुए राज्य सरकार से इस सड़क को जल्द बनवाने की मांग की, जिससे पर्यटकों और आमजन को राहत मिल सके। उन्होंने कहा कि आमेर शहर की आमेर फोर्ट से कुंडा तक की प्रमुख सड़क जो पर्यटन और आमजन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, तीन किलोमीटर लंबी इस सड़क की स्थिति अत्यंत दयनीय है, हाल में हुई बरसात के कारण स्थिति और गंभीर हो गई।

निलंबित आईएफएस किशन चंद्र की गिरफ्तारी पर लगी रोक

नैनीताल। उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने भारतीय वन सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी व कार्बेट टाइगर रिजर्व (सीटीआर) के कालागढ़ वन प्रभाग के निलंबित तत्कालीन उप वन संरक्षक किशन चंद को राहत देते हुए बुधवार को उनकी गिरफ्तारी पर अगली तिथि तक रोक लगा दी है। साथ ही अदालत ने उन्हें 26 सितंबर को जांच अधिकारी के समक्ष पेश होने के भी निर्देश दिए हैं। किशन चंद्र की याचिका पर वरिष्ठ न्यायमूर्ति संजय कुमार मिश्रा की पीठ में सुनवाई हुई। अदालत ने जांच अधिकारी को भी अगली तिथि पर जांच की प्रगति रिपोर्ट अदालत में पेश करने को कहा है। इस मामले में अगली सुनवाई 13 अक्टूबर को होगी। श्री चंद्र पर कार्बेट पार्क के कालागढ़ रेंज में तैनाती के दौरान मोरघट्टी व पाखरो में अवैध तरीके से निर्माण कार्य कराने और पेड़ों का अवैध पातन का आरोप है। राष्ट्रीय बाघ प्राधिकरण (एनसीटीए) व उच्च न्यायालय के आदेश पर की गयी प्रारंभिक जांच में भी इसकी पुष्टि हुई है। सरकार की ओर से श्री चंद्र को कुछ समय पहले निलंबित कर दिया गया था। साथ ही पूरे प्रकरण की जांच सतर्कता विभाग को सौंप दी। विजिलेंस की ओर से पिछले महीने आठ अगस्त को आरोपी के खिलाफ वन संरक्षण अधिनियम, 1980, भारतीय वन अधिनियम व भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम जैसी गंभीर धाराओं में अभियोग पंजीकृत कर जांच की जा रही है।

फ़िरोज़पुर, मोगा जिलों में विकास कामों में तेज़ी लाने के निर्देश

चंडीगढ़। पंजाब के सर्वपक्षीय विकास को सुनिश्चित करने के लिये मुख्य सचिव विजय कुमार जंजुआ ने आज फ़िरोज़पुर और मोगा जिलों के विकास कामों में तेज़ी लाने के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए।

फ़िरोज़पुर और मोगा जिलों के विकास का जायज़ा लेने के लिए बुलायी बैठक की अध्यक्षता करते हुये मुख्य सचिव ने कहा कि काम को समयबद्ध और नतीजा मुखी ढंग से निपटाया जाना चाहिए। देश के 28 राज्यों के 112 जिलों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में तेज़ी से सुधार करने के उद्देश्य से जनवरी 2018 में ऐसपीरेशनल डिस्ट्रिक्ट प्रोग्राम (एडीपी) शुरू किया गया था। इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत पंजाब के दो जिलों मोगा और फ़िरोज़पुर का चयन किया गया है।

जंजुआ ने कहा कि इन जिलों की शिनाख़्त कम्पोजिट इंडेक्स के आधार पर की गई है जिसमें गरीबी, खराब सेहत और पोषण, शिक्षा की स्थिति और कम ढांचागत विकास सम्बन्धी चुनौतियां शामिल हैं।

भारत के सबसे बड़े 'ग्लोबल स्पिन कॉन्क्लेव' की शुरुआत

चेन्नई। तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में बुधवार को हथकरघा, हस्तशिल्प और तकनीकी वस्त्रों को बढ़ावा देने के लिए भारत के सबसे बड़े 'ग्लोबल स्पिन कॉन्क्लेव' की शुरुआत हुई।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन सूक्ष्म, लघु और मध्यम (एमएसएमई) मंत्रालय की सहायता से वर्ल्ड एसोसिएशन फॉर स्मॉल एंड मीडियम एंटरप्राइजेज (डब्ल्यूएएसएमई) और आईएएमखादी फाउंडेशन (आईएएमखादी) द्वारा किया जा रहा है। तमिलनाडु का हथकरघा, हस्तशिल्प, वस्त्र और खादी विभाग इस सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है जबकि इसे नॉलेज पार्टनर के रूप में वस्त्र मंत्रालय और सह-आयोजक के रूप में निफ्ट फाउंडेशन फॉर डिजाइन एंड इनोवेशन (एनएफडीआई) द्वारा समर्थन प्रदान किया जा रहा है।

यह भारत में कपड़ा क्षेत्र के सबसे बड़े सम्मेलनों में से एक है, इसका उद्घाटन तमिलनाडु के हथकरघा और कपड़ा मंत्री आर गांधी ने केंद्रीय एमएसएमई मंत्रालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, हथकरघा, हस्तशिल्प और कपड़ा मंत्रालय के अधिकारियों और हथकरघा और कपड़ा क्षेत्र के प्रमुख संगठनों को-ऑप्टेक्स, खादी क्राफ्ट, पूमफुहार की उपस्थिति में किया।

इस सम्मेलन का उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय मानकों को पूरा करने के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं, नयी तकनीकों, नवाचारों और उत्पाद गुणों को अपनाकर भारतीय वस्त्र उद्योग को वैश्वीकरण की ओर लेकर जाना है, जो अंतरराष्ट्रीय बाजार के लिए आकर्षक और नये डिजाइनों को तैयार करने में मदद करेगा, जिससे व्यापार के नये अवसर उत्पन्न होंगे और देश के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए एमएसएमई और ज्यादा सशक्त बनेगा।

कॉन्क्लेव में पैनल चर्चाओं की श्रृंखला होगी जिसमें रूस, मॉरीशस, यूएई, नाइजीरिया के विशेषज्ञ सहित 30 से ज्यादा उद्योगों और क्षेत्रों के लोग शामिल होंगे।

को-ऑप्टेक्स और आईएएमखादी फाउंडेशन के बीच सोशल फुटप्रिंटिंग पर, ट्रेस्यार्न के साथ ब्लॉक चेन पर और कुछ अन्य समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर भी किये जाएंगे।

मिजोरम के ब्रू समुदाय के लोगों को फिर से बसाने की समय सीमा बढ़ाई गई

अगरतला। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने त्रिपुरा में विस्थापित मिजोरम के ब्रू समुदाय के लोगों को फिर से बसाने की समय सीमा को बढ़ा दिया है।

त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा ने मंगलवार को दिल्ली में पुनर्वास की प्रगति की समीक्षा के बाद राज्य में मिजोरम के विस्थापित ब्रू समुदाय के लोगों के पुनर्वास के लिए समय सीमा बढ़ाने के लिए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का आभार व्यक्त किया।

श्री साहा ने कहा,केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने पुनर्वास प्रक्रिया को पूरा करने की समय सीमा बढ़ाने और त्रिपुरा में मिजोरम के आंतरिक रूप से विस्थापित ब्रू समुदाय के परिवारों को वित्तीय सहायता प्रदान करने का काम जारी रखने के राज्य सरकार के प्रस्ताव को सैद्धांतिक मंजूरी दे दी है।

पुनर्वास पूरा करने के लिए हालांकि कोई समय सीमा तय नहीं की गई है। श्री शाह ने राज्य सरकार को इस प्रक्रिया को जल्द से जल्द पूरा करने की सलाह दी। वे अभी भी अस्थायी शिविरों में रह रहे और निर्दिष्ट गांवों में स्थानांतरित होने की प्रतीक्षा कर रहे ब्रू समुदाय के परिवारों को वित्तीय सहायता देना जारी रखने के लिए सहमत हुए हैं।

पुनर्वास को पूरा करने के लिए समय सीमा बढ़ाने के अनुरोध पर श्री शाह ने गृह मंत्री के साथ केंद्र और राज्य दोनों के अधिकारियों के साथ विस्तृत चर्चा की। इस साल अगस्त तक कुल मिलाकर 6,159 परिवारों के 37,136 लोग चतुर्भुज समझौते के बाद स्थायी रूप से बसने के योग्य पाए गए, लेकिन अब तक 3,332 परिवारों को स्थानांतरित किया गया है।

जनवरी 2020 में केंद्रीय गृह मंत्रालय (एमएचए), त्रिपुरा और मिजोरम की सरकारों तथा ब्रू समुदाय के नेताओं के बीच त्रिपुरा के चार जिलों में 12 स्थानों पर 37,136 विस्थापित ब्रू समुदाय के लोगों के पुनर्वास के लिए एक चतुर्भुज समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे। इसके तहत लगभग 51 प्रतिशत परिवारों को तीन स्थानों पर स्थानांतरित कर दिया गया है।

समझौते के अनुसार, शिविरों में रहने वाले प्रत्येक ब्रू समुदाय के परिवार को एक पक्का घर बनाने के लिए 40गुना30 फीट जमीन के अलावा, चार लाख रुपये की सावधि जमा और अगले दो वर्षों के लिए मुफ्त राशन आपूर्ति के साथ 5,000 रुपये की मासिक वित्तीय सहायता मिलेगी। केंद्र सरकार प्रत्येक परिवार को आवास के लिए 1.5 लाख रुपये की राशि प्रदान कर रही है।

केंद्र ने त्रिपुरा में ब्रू बस्ती के लिए 600 करोड़ रुपये के पैकेज को मंजूरी दी है। राज्य सरकार को भूमि अधिग्रहण के लिए 150 लाख रुपये की राशि निर्धारित की गई और शेष ब्रू समुदाय के लोगों के कल्याण और इलाकों में बुनियादी ढांचे के विकास के लिए खर्च की जाएगी।

प्रमुख स्कीमों के लिए 646 करोड़ रुपए जारी- चीमा

चंडीगढ़, 21 सितम्बर (वार्ता) पंजाब के वित्त, योजना, आबकारी और कराधान मंत्री हरपाल सिंह चीमा ने कहा है कि वित्त विभाग की तरफ से प्रमुख स्कीमों के लिए 646 करोड़ रुपए के फंड जारी किये गए हैं।

श्री चीमा ने आज यहां कहा कि इस बारे में 345 करोड़ रुपए की राशि जारी होने के बाद खजाने के पास किसी भी केंद्रीय प्रायोजित स्कीम (सी एस एस) या इससे सम्बन्धित राज्य के हिस्से सम्बन्धी कोई बकाया नहीं है। उन्होंने विभागों को हिदायत दी कि इन फंडों का समयबद्ध ढंग से प्रयोग किया जाये न कि वित्तीय साल के आखिर तक इंतज़ार किया जाये। अनुपयोग के कारण फंडों के लैप्स होने वाले मामलों को वित्त विभाग की तरफ से गंभीरता से लिया जायेगा।

उन्होंने बताया कि वित्त विभाग की तरफ से 'मेजर वर्क्स' हेड के अंतर्गत 240 करोड़ रुपए जारी किये गए हैं। मिल्कफेड को 36 करोड़ रुपए और सरबत सेहत बीमा योजना के लिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग

भाजपा आज करेगी पंजाब विधानसभा का घेराव

एजेंसी

चंडीगढ़। भारतीय जनता पार्टी की पंजाब इकाई भगवंत मान सरकार द्वारा पार्टी पर आम आदमी पार्टी विधायकों की खरीद-फरोख्त के लगाए गए आरोपों को लेकर विधानसभा के कल एक दिवसीय विशेष सत्र पर में विधानसभा का घेराव करेगी। पार्टी प्रवक्ता के अनुसार भाजपा ने विधानसभा तक रोष मार्च निकालने की घोषणा की।

मान सरकार एक दिवसीय सत्र के दौरान जनता के टैक्स करोड़ों रुपए बर्बाद करेगी। आम आदमी पार्टी की भाजपा पर आरोप लगाने की आदत बहुत पुरानी है। आप सरकार के मंत्रियों एवं विधायकों को खरीदने के लिए 25 करोड़ रुपए प्रति विधायक की ऑफर की गई है, तो वित्त मंत्री हरपाल चीमा बताएं कि भाजपा द्वारा दिए गए 1375 करोड़ रुपए कहां हैं। प्रवक्ता ने कहा कि आप के विधायकों से टेलीफोन के माध्यम से संपर्क किया गया था। किसी के मोबाइल फोन पर कॉल की जाती है तो उस मोबाइल फोन की स्क्रीन पर कॉल करने वाले का नम्बर जरूर आता है, लेकिन श्री चीमा ने मीडिया के समक्ष यह क्यों नहीं बताया कि किया कि वह टेलीफोन नम्बर कौन से थे। उनके पास ऑडियो और वीडियो रिकॉर्डिंग दोनों हैं।

इनके पास दोनों सबूत हैं तो उन्हें अभी तक मीडिया या जनता के सामने क्यों पेश नहीं किया गया। भाजपा के अनुसार आम आदमी पार्टी के बहुमत है और इनके 92 विधायक हैं और विधानसभा में ये खुद को खुद ही शाबाशी देने के बाद कहेंगें कि हम सब इकट्ठे हैं और हमारे विधायक बिकाऊ नहीं थे।

आप पार्टी जनता के प्रति अपनी जवाबदेही से भाग रही है और इसलिए भगवंत मान सरकार ऐसे नाटक रच रही है।

शार्ट न्यूज

मेवाड़ में हिन्दी सप्ताह पर हुए अनेक कार्यक्रम

गाजियाबाद। वसुंधरा स्थित मेवाड़ इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट ने हिन्दी सप्ताह के तहत विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया। इसमें शिक्षा विभाग के विद्यार्थियों ने भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इन गतिविधियों में निबंध लेखन, कविता वाचन, शिक्षाविद् आलोक सक्सेना का हिन्दी भाषा का हमारे दैनिक जीवन में महत्व विषय पर अतिथि व्याख्यान, नारा लेखन, दोहा वाचन, स्वरचित कविता पाठ आदि शामिल थे। सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं ने हिन्दी में लिखी कविताओं के उचित आरोह-अवरोह, उनके वाचन और उच्चारण के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी दी। डॉ. स्मृति लता सिन्हा के कविता पाठ से हिन्दी सप्ताह का समापन हुआ।

फरीदाबाद : तोड़े जाएंगे कब्जा कर बनाए 118 धार्मिक स्थल, नगर निगम ने तैयार की सूची

फरीदाबाद। फरीदाबाद में सरकारी जमीन पर कब्जा करके अवैध रूप से बनाए गए 118 धार्मिक स्थलों को तोड़ा जाएगा। सोमवार को चंडीगढ़ एवं हरियाणा हाईकोर्ट की सख्ती के बाद नगर निगम रिपोर्ट तैयार करने में जुट गया है। नगर निगम को कार्रवाई की रिपोर्ट हरियाणा सरकार को सौंपनी होगी। इस आधार पर हरियाणा सरकार कोर्ट में अपना जवाब दाखिल करेगी। हालांकि कार्रवाई की तारीख अभी तय नहीं हुई है। गौरतलब है कि सोमवार को आदेश जारी कर कोर्ट ने हरियाणा सरकार से कार्रवाई रिपोर्ट तलब की है। वर्ष 2009 में सुप्रीम कोर्ट ने सरकारी जमीन पर कब्जा करके अवैध रूप से बने धार्मिक स्थलों को हटाने के आदेश हरियाणा सरकार को दिए थे। इसके बाद सरकार ने 29 सितंबर 2009 से पहले बने धार्मिक स्थलों को लेकर नीति बनाई थी। जिसके तहत शहर का सर्वे करवाया गया था। जिसमें निगम के शहरी परिधि में सरकारी जमीन पर 118 धार्मिक स्थलों की सूची तैयार की गई। इनमें पार्क, रोड, स्कूल आदि क्षेत्रों में 40 स्थल बने हुए थे।

बीच सड़क बर्थडे का जश्न, हुड़दंग का वीडियो वायरल होने पर ऐक्शन में पुलिस

गाजियाबाद। गाजियाबाद एलिवेटेड रोड पर जन्मदिन पार्टी करने का एक और वीडियो वायरल हो रहा है। वीडियो राजनगर एक्सटेंशन से यूपी गेट वाली लेन का बताया जा रहा है। कई युवक केक काटकर एक दूसरे को दे रहे हैं। सड़क पर खड़े एक व्यक्ति के पूछने पर बताया कि दोस्त का जन्मदिन है। वीडियो में दिख रहा है कि 15-20 युवक एलीवेटेड रोड पर किनारे गाड़ी खड़ी कर केक काट रहे हैं और कुछ युवक गाड़ी की छत पर चढ़कर बैठे हुए हैं। पुलिस का कहना है कि वायरल वीडियो की जांच की जा रही है। मंगलवार शाम एक वाहन चालक ने सड़क किनारे खड़ी कार और कई दोपहिया वाहन खड़े देखकर अपनी गाड़ी रोक दी। वाहन चालक ने सड़क के दूसरी तरफ चल रही जन्मदिन पार्टी का वीडियो बनाया। यह वीडियो साहिबाबाद थानाक्षेत्र का है। वाहन चालक के पूछने पर युवकों ने बताया कि छोटे भाई का बर्थडे है। वीडियो बना रहे वाहन चालक ने जब सवाल किया कि क्या एलीवेटेड रोड जन्मदिन मनाने के लिए होते हैं क्या तो युवक कुछ नहीं बोले। नाम पूछने पर एक युवक ने बताया उसका नाम राहुल है। वीडियो के संबंध में एसपी ट्रांस हिंडन ज्ञानेंद्र सिंह का कहना है कि जांच के आदेश दिये जा चुके हैं। वीडियो की जांच कराई जा रही है। जल्द ही आरोपियों के खिलाफ शख्त कार्रवाई की जाएगी।

कार पार्किंग को लेकर विवाद, अस्पताल के बाउंसर ने युवक को सरिया से पीटा

नोएडा। नोएडा में अस्पताल के बाउंसर ने सरिया से युवक हमला कर दिया। इस घटना का सीसीटीवी फुटेज सामने आया है। यहां कुछ युवक एक कार के पास आकर रुकते हैं। थोड़ी देर बाद बाउंसर हाथ में सरिया लेकर आया। उसके पीठ पर हमला कर दिया। हमले के बाद युवक भागने लगा। लेकिन फिर कार के गेट के पास खड़े दूसरे व्यक्ति को मारने के लिए दौड़ा, तो वह भाग निकला। दोनों युवकों को दौड़ा लिया। बताया जा रहा है कि यह विवाद कार पार्किंग को लेकर हुआ। मामले की शिकायत थाना फेज-2 पुलिस से की गई है। इसी बीच अस्पताल प्रबंधन ने आरोपी बाउंसर को निकाल दिया है। पुलिस का कहना है कि नोएडा के रहने वाले युवक अपने एक परिचित को देखने यर्थाथ अस्पताल में गए थे। जाने से पहले उन्होंने अस्पताल के बाहर अपनी गाड़ी पार्क की। इसको लेकर जाने से पहले ही बाउंसर राहुल के साथ विवाद हुआ।

अनुबंध पर काम करने वाले अस्थायी कर्मियों को मिले दिवाली बोनस, श्रम विभाग ने जारी की एडवाइजरी

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार ने अपने सभी विभागों और एजेंसियों को अपना यहां आउटसोर्स कंपनियों के जरिए अनुबंध पर तैनात कर्मियों को दिवाली पर बोनस देने को कहा है। श्रम विभाग ने आउटसोर्स कंपनियों के जरिए तैनात कर्मियों की शिकायतों के बाद यह निर्देश जारी किया है। श्रम आयुक्त की ओर से जारी एडवाइजरी में कहा गया है कि सभी ठेकेदार प्रतिष्ठान, जिन्होंने लेखा वर्ष के दौरान किसी भी दिन 20 या अधिक श्रमिकों को तैनात किया है, वह बोनस भुगतान अधिनियम, 1965 के अंतर्गत आते हैं। उनकी वैधानिक जिम्मेदारी है कि वह अपने कर्मचारियों को बोनस का भुगतान करें। बताते चले कि दिल्ली सरकार के विभिन्न विभागों में बड़ी संख्या में अनुबंध पर कर्मियों की तैनाती की जाती है। यह तैनाती आउटसोर्स कंपनियों के माध्यम से होती है। श्रम विभाग को विभाग में तैनात कर्मियों की तरफ से शिकायतें मिल रही थीं कि उन्हें नियोक्ता कंपनियों की तरफ से बोनस जैसी सुविधाएं नहीं मिलती हैं, जबकि बोनस भुगतान अधिनियम 1965 के मुताबिक बोनस देने का नियम सभी निजी प्रतिष्ठानों के अलावा राज्य सरकारों द्वारा स्थापित प्रतिष्ठानों पर भी लागू होता है, जिन्होंने लेखा वर्ष के दौरान किसी भी दिन 20 या अधिक श्रमिकों को रोजगार दिया है।

500 रुपए के ड्रग्स को लेकर एक दोस्त ने की दूसरे दोस्त की हत्या

नई दिल्ली। दिल्ली में एक 25 साल के युवक ने अपने ही दोस्त की हत्या कर दी। पुलिस ने बताया कि दोनों दोस्त ड्रग्स एडिक्ट थे। दोनों ड्रग्स का सेवन किया करते थे। दोनों दोस्तों में 500 रुपए को लेकर विवाद हो गया। विवाद बढ़ने की वजह से एक दोस्त ने दूसरे दोस्त की चाकू मारकर हत्या कर दी। पुलिस ने बताया कि 22 साल के शाहरुख की हत्या उसके दोस्त सलमान ने की है। पुलिस को यह जानकारी अस्पताल से मिली। पुलिस अस्पताल पहुंची तब तक शाहरुख की मृत्यु हो चुकी थी। पुलिस ने जांच में पाया कि शाहरुख एक फैक्ट्री में मजदूरी का काम करता था। जिस दिन उसकी हत्या हुई उस दिन आखिरी बार वो अपने दोस्त सलमान के साथ देखा गया था। पुलिस ने जांच में पाया कि शाहरुख और सलमान दोनों ड्रग्स का सेवन किया करते थे। उन दोनों को ड्रग्स की लत थी। ड्रग्स को लेकर दोनों दोस्तों में कहासुनी हो गई। पुलिस ने सलमान को पकड़ लिया है। सलमान ने कबूला है कि शाहरुख ने उसे 500 रुपए दिए थे। शाहरुख ने उसे ड्रग्स लाने के लिए पैसे दिए थे। इसी बात को लेकर दोनों में विवाद हो गया। कहासुनी इतनी बढ़ गई कि सलमान ने शाहरुख की हत्या कर दी। हत्या के बाद वो मौके से फरार हो गया। पुलिस ने उसे पकड़ लिया है। मामले की आगे जांच की जा रही है।

दिल्ली में 15 सेमी ऑटोमेटिक पिस्टल और 45 कारतूस के साथ हथियार तस्कर गिरफ्तार

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने एक 32 साल के कथित हथियार तस्कर को गिरफ्तार किया है। हथियार तस्कर के पास से 15 सेमी ऑटोमेटिक पिस्टल और 45 कारतूस जब्त किए गए हैं। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने बताया है कि जो 15 सेमी ऑटोमैटिक पिस्टल बरामद किए गए हैं वो आधुनिक तकनीक से बने हुए हैं जो बेहद खतरनाक हैं।

दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने बताया कि हथियार तस्कर इन हथियारों को दिल्ली और उत्तर प्रदेश के माफिया सरगनाओं को बेचने वाला था। इन हथियारों के खरीद और बिक्री के पीछे उत्तर प्रदेश के बागपत जिले का दिलशाद नामक युवक शामिल था।

पुलिस उपायुक्त (विशेष) राजीव रंजन सिंह ने कहा कि सोमवार को उन्हें सूचना मिली कि अंतरराज्यीय हथियार आपूर्तिकर्ता दिलशाद किसी अज्ञात खरीददार को बेचने के लिए अवैध हथियारों की बड़ी खेप के साथ धौला कुआं से रिंग रोड होते हुए नारायणा से गुजरेगा। उन्होंने बताया कि शाम करीब पांच बजकर 40 मिनट पर जब दिलशाद वहां पहुंचा तो उसे तुरंत पुलिस ने काबू में कर लिया।

अधिकारी ने बताया कि तलाशी लेने पर उसके पास से 15 सेमी ऑटोमेटिक पिस्टल और 45 कारतूस बरामद किए गए। सिंह ने कहा कि पूछताछ करने पर यह खुलासा हुआ कि दिलशाद उत्तर प्रदेश के कैराना में स्थानीय हथियार निर्माताओं से हथियार खरीदता था और उन्हें बागपत तथा शामली में बेचता था।

राजीव रंजन सिंह ने कहा, जब्त हथियारों की दिल्ली एवं उत्तर प्रदेश में विभिन्न माफिया सरगनाओं को आपूर्ति की जानी थी। आरोपी पर शस्त्र अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है और जांच शुरू कर दी गई है। उन्होंने कहा कि आरोपी को संबंधित निचली अदालत में पेश किया गया जहां से उसे चार दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया गया है।

आप विधायक अमानतुल्लाह खान की और 5 दिन की रिमांड

करीबी के घर मिले थे कैश-हथियार

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली वक्फ बोर्ड मामले में एक अदालत ने आप विधायक अमानतुल्लाह खान को गुरुवार को पांच और दिनों की पुलिस हिरासत में भेज दिया। ओखला विधायक विधायक को भ्रष्टाचार निरोधक शाखा की चार दिवसीय हिरासत में पूछताछ के अंत में शहर की अदालत में पेश किया गया।

एसीबी ने आप विधायक की 10 दिन की अतिरिक्त हिरासत की मांग करते हुए एक नया रिमांड आवेदन दिया था। एसीबी ने कहा कि खान अस्वस्थ थे और सीने में दर्द की शिकायत के बाद दो दिन उनके इलाज में बिताए गए।

अमानतुल्लाह पर दिल्ली वक्फ बोर्ड की संपत्ति में गड़बड़ी करने का आरोप है। अब पांच दिन बाद ही उनकी जमानत पर सुनवाई होगी। दिल्ली एसीबी ने भ्रष्टाचार के मामले में अमानतुल्लाह खान को गिरफ्तार किया गया था।

अमानतुल्लाह खान दिल्ली वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष हैं। एसीबी दिल्ली वक्फ बोर्ड में भर्ती में कथित अनियमितताओं की जांच कर रही है।

एसीबी ने शुक्रवार को आप विधायक अमानतुल्लाह खान के घर और उनके करीबियों के ठिकानों पर छापेमारी कर 24 लाख रुपये कैश और दो बिना लाइसेंस वाले हथियार बरामद किए थे।

अजनारा बिल्डर के दिवालिया घोषित होने की प्रक्रिया शुरू

नोएडा। अजनारा बिल्डर के दिवालिया घोषित होने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल (एनसीएलटी) ने 18 माह की सुनवाई के बाद मंगलवार को दिवाला समाधान पेशेवर (आईआरपी) नियुक्ति कर दिया। अब बिल्डर कोई भी काम बिना आईआरपी की अनुमति के नहीं कर सकेगा। अजनारा ग्रुप के प्रमोद गुप्ता अजनारा ने कहा, वह एनसीएलटी में अपील करेंगे। सेक्टर 118 के अजनारा एम्बोसिया प्रोजेक्ट में बुकिंग कराने वाले मनीष कुमार गुप्ता समेत 113 खरीदारों ने एनसीएलटी में वाद दायर किया था। इस पर चली सुनवाई के बाद यह फैसला आया है। इन खरीदारों ने वर्ष 2012 से 2019 के बीच में अजनारा इंडिया लिमिटेड को 50 करोड़ 47 लाख 48 हजार रुपये जमा किए थे। उन्हें तीन सालों में फ्लैट का कब्जा मिलना था पर ऐसा नहीं हुआ। इसके बाद ये एनसीएलटी चले गए। पीड़ित मनीष गुप्ता, रवि प्रकाश और मनोज ने बताया कि एनसीएलटी ने बिल्डर पर बड़ी कार्रवाई की है। गुप्ता ने कहा कि अजनारा को दिवालिया घोषित करने की प्रक्रिया प्रारम्भ करते हुए आईआरपी अमरपाल की नियुक्ति कर दी गई है। इससे सभी को अपना मकान मिलने की उम्मीद जगी है। गुप्ता ने कहा कि यह फैसला सभी के संघर्ष की जीत है। जानकारी के मुताबिक, बिल्डर्स के पास नोएडा के सेक्टर 118 में प्लाट नं जीएच 01 पर 1,42,967 स्क्वायर मीटर की जमीन थी और उसने यहां एक ग्रुप हाउसिंग प्रोजेक्ट बनाने के लिए कंपनियों और व्यक्तियों के साथ करार किया था। बिल्डर बायर एग्रीमेंट के तहत, बिल्डर को करार साइन होने के 3 साल के अंदर करीब 1,600 यूनिट्स बनाकर उनकी चाबी खरीदारों को सौंपनी थी। आदेश में केस को लेकर जानकारी दी गई है, उसके मुताबिक बिल्डर ने प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए खरीदारों से एडवांस पेमेंट लिया और कुल 50,47,48,426 रुपये का फाइनेंशियल डेट जुटाया।

एचएसएससी ने पीएम कोविड फ्रंटलाइन वर्कर कोर्स के तहत ग्रेजुएट लोगों के लिए कॉनवोकेशन सेरेमनी का आयोजन किया

आनंद राय/गौरवशाली भारत

नई दिल्ली। कोरोना महामारी में एक तरफ़ लोग ख़ुद को बचाने के लिए घरों में क़ैद थे तो वहीं दूसरी तरफ़ कोविड फ्रंटलाइन वर्क्स के रूप में वो लोग भी थे जो दिन रात लोगों की ख़िदमत में वक़्त गुज़ार रहे थे. इसी दौरान इस तरह के काम करने की इच्छा रखने वाले लोगों के लिए पीएम कोविड फ्रंटलाइन वर्कर (सीएफडब्ल्यू) के कोर्स शुरू किए गए थे. जिनके तहत ट्रेनिंग लेकर फ्रंटलाइन वर्कर बना जा सकता था. अपनी तरह की पहली ऐसी योजना के तहत अब हेल्थकेयर सेक्टर स्किल काउंसिल ने हाल ही में दिल्ली के इंडिया हैबिटेट सेंटर में हेल्थकेयर प्रोफेशनल्स की कॉनवोकेशन सेरेमनी का आयोजन किया. ये सेरेमनी 100 से ज़्यादा केंडिडेट्स को ग्रैजुएशन सर्टिफिकेट देने के लिए की गई.

कोविड 19 के ख़िलाफ़ देश की लड़ाई में इन लोगों के रोल का महत्व समझते हुए पीएम नरेंद्र मोदी द्वारा

कोविड फ्रंटलाइन वर्कर्स के लिए कोर्स लॉन्च किए गए थे. इसमें कोविड फ्रंटलाइन वर्कर (बेसिक केयर सपोर्ट), कोविड फ्रंटलाइन वर्कर (सैंपल कलेक्शन सपोर्ट), COVID फ्रंटलाइन वर्कर (इमरजेंसी केयर सपोर्ट) और COVID फ्रंटलाइन वर्कर (एडवांस केयर सपोर्ट) के लिए कोर्स शामिल थे.

कॉनवोकेशन सेरेमनी के इस मौक़े पर मुख्य अतिथि के रूप में मिनिस्ट्री ऑफ स्किल डेवलपमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप के सेक्रेटरी श्री राजेश अग्रवाल शामिल हुए. जिन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए स्कूली शिक्षा के साथ स्किल सर्टिफिकेशन पर ज़ोर दिया. उन्होंने वहाँ मौजूद लोगों को अपनी रुचि के क्षेत्रों पर ध्यान देने और ज़िंदगी में आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की सलाह दी. वहीं, हेल्थकेयर सेक्टर स्किल काउंसिल के सीईओ श्री आशीष जैन ने स्किल सर्टिफिकेशन कोर्स के महत्व पर बात करते हुए कहा कि लोगों को इस तरह की ट्रेनिंग देकर हमारे देश की स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत करना समय की एक मांग है. कोरोना महामारी के दौरान ट्रेंड और स्किल्ड लोगों की ज़रूरत बहुत बढ़ गई थी, जिसके चलते एचएसएससी द्वारा कोविड फ्रंटलाइन वर्कर्स की भूमिका के रूप में नौकरियों की शुरुआत हुई.

500 से अधिक उम्मीदवारों को Valeur Fabte& Pvt Ltd, Ma& Healthcare Institute, और Wipro GE Healthcare Pvt Ltd द्वारा ट्रेंड किया गया. स्किल इंडिया अभियान के तहत मूल्यांकन और सर्टिफिकेशन का ध्यान हेल्थकेयर सेक्टर स्किल काउंसिल द्वारा रखा गया.

इनमें से अधिकांश उम्मीदवारों को सफलतापूर्वक नौकरी पर रखा गया था और अन्य लोग रोजगार के अवसरों की सुविधा पाने की प्रक्रिया में थे. ये एसबीआई कार्ड्स एंड पेमेंट सर्विसेज लिमिटेड द्वारा प्रदान की गई एक सीएसआर परियोजना के तहत किया गया था. इसके अलावा एसबीआईसी कार्ड्स की चीफ पीपल ऑफिसर, सीमा कपाही ने बताया कि कैसे उन्होंने देश के लिए स्किल्ड यूथ की ज़रूरत को समझते हुए इस योजना के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की. कार्यक्रम के दौरान सफलता की कई कहानियां भी शेयर की गईं. सैंपल कलेक्शन सपोर्ट के लिए ट्रेनिंग ले चुके देवेंद्र घोटवाल ने बताया कि इस ट्रेनिंग के बाद वो कैसे अपने परिवार को आर्थिक रूप से समर्थन देने के काबिल हुए.

सांसद प्रवेश साहिब सिंह ने डीडीसी में केजरीवाल द्वारा अपने लोगों के अवैध नियुक्ती की उपराज्यपाल से जांच कराने की मांग की

दिल्ली डायलॉग कमिशन में बनाए गए उपाध्यक्ष और सदस्य सभी आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता हैं : प्रवेश साहिब सिंह

प्रफुल्ल राय/गौरवशाली भारत

नई दिल्ली। भाजपा सांसद श्री प्रवेश साहिब सिंह ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने अपने अधिकारों का दुरुपयोग कर दिल्ली डायलॉग कमिशन में आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं की नियुक्ती की है और उन्हें प्रशासनिक अधिकारियों के बराबर वेतन और सुविधाएं दी जा रही है। उन्होंने इस घोटाले की जांच उपराज्यपाल से कराने की मांग की है।

प्रवेश साहिब सिंह ने भाजपा के पूर्व विधायक श्री मनजिंदर सिंह सिरसा के साथ आज एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि दिल्ली डायलॉग कमिशन में जो

उपाध्यक्ष और सदस्य बनाए गए हैं वो सभी आम आदमी पार्टी के सोशल मीडिया के कार्यकर्ता हैं जिनका दिल्ली के विकास से कोई लेना-देना नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकारी खर्चे पर आप कार्यकर्ता उन राज्यों में जाकर आम आदमी पार्टी का कार्य करते हैं। उन्होंने कहा कि यह ना ही सिर्फ अनुचित है बल्कि जनता के पैसों का दुरुपयोग भी है। प्रवेश साहिब सिंह ने कहा कि केजरीवाल इस तरह के गलत कार्यों में माहिर हैं और वे अपने आप को कानून से ऊपर मानते हैं इसलिए इस तरह के गलत कार्यों को अंजाम देने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होती है। उन्होंने कहा कि उपराज्यपाल को इस संबंध में एक शिकायत देकर जांच कराने की मांग की गई है। उन्होंने आशा जताई कि मामले में जांच कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। मनजिंदर सिंह सिरसा ने दिल्ली के स्कूलों में शिक्षकों के बड़े पैमाने पर खाली पदों का मामला उठाते हुए आरोप लगया कि केजरीवाल सरकार स्कूलों में शिक्षकों की भर्ती ना कर उससे बच रहे पैसों को अन्य राज्यों में होने वाले चुनावों में अपनी पार्टी के प्रचार-प्रसार पर खर्च कर रही है। उन्होंने दिल्ली में छपे एक अखबार का हवाला देते हुए कहा कि दिल्ली के सरकारी स्कूलों में प्रधानाचार्य के 84 फीसदी, उप-प्रधानाचार्य के 34 फीसदी, टीजीटी शिक्षकों के 40 फीसदी और पीजीटी शिक्षकों के 22 फीसदी पद खाली पड़ी हुई है।

यातायात पुलिस की तरह अब निगम के सफाई निरीक्षक मशीनों से काटेंगे चालान

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस के यातायात विभाग की तरफ अब एकीकृत दिल्ली नगर निगम के सफाई निरीक्षकों के हाथों में चालान काटने के लिए मशीन दिखाई देंगी। दिल्ली नगर निगम में चालान काटने की मशीनें (स्मार्ट मोबाइल पेमेंट टर्मिनल मशीन) पहली बार सफाई निरीक्षकों को मुहैया कराई गई है जिनके माध्यम से वह मौके पर ही कूड़ा पड़ा होने पर चालान काटेंगे। बताया गया कि चालान मशीनें धीरे-धीरे सभी जोनों में मुहैया कराई जाएंगी। जानकारी के मुताबिक एकीकृत दिल्ली नगर निगम से पहले डेम्स विभाग में कार्यरत सफाई निरीक्षकों को घरों, सड़कों और दुकानों के सामने कूड़ा पड़ा होने पर चालान काटने के लिए चालान स्लीप दी जाती थीं। उसमें तीन कार्बन लगा कर तब चालान काटा जाता था इसके अलावा उसका पूरा रिकार्ड अलग से रखना पड़ता था। व्यक्ति को चालान कोर्ट में जाकर भुगतना पड़ता था। यह जानकारी देते हुए दिल्ली नगर निगम शाहदरा उत्तरी जोन के मुख्य स्वच्छता अधिकारी अनिल शर्मा का कहना है कि चालान काटने की मशीन मुहैया कराने की पहल उपायुक्त अमित कुमार शर्मा ने इस जोन में की है। उन्होंने बताया कि शाहदरा उत्तरी जोन के 34 सफाई निरीक्षकों को पहली बार चालान काटने वाली कम्प्यूटराइज मशीनें मुहैया कराई गई हैं। बृहस्पतिवार से सभी निरीक्षक हाथों मशीनें लेकर अपने-अपने वार्ड में कूड़े से संबंधित चालान करेंगे और ऑन द स्पॉट चालान राशि वसूल करेंगे। मशीनों से दो पर्ची निकलेंगी इनमें से एक पर्ची उस व्यक्ति को दी जाएगी जिसका चालान काटा जाएगा और दूसरी पर्ची निगम के रिकार्ड में रहेगी। साथ ही कम्प्यूटर मशीन में पूरा रिकार्ड रहेगा। डेम्स विभाग के अधिकारियों का कहना है कि चालान काटने की मशीनें धीरे-धीरे निगम के 11 जोनों में कार्यरत सफाई निरीक्षकों को भी मुहैया कराई जाएंगी।

रामायण सर्किट के तहत सीता मां जन्मभूमि पुनौराधाम के विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय मैथिली परिषद ने सौंपा ज्ञापन

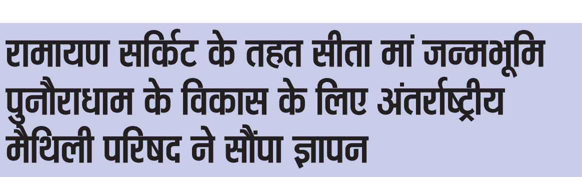

नई दिल्ली। भारत सरकार के अंतर्गत संस्कृति राज्य मंत्री एवं सांसद मीनाक्षी लेखी से अंतर्राष्ट्रीय मैथिली परिषद के अध्यक्ष शैलेन्द्र मिश्र ने मुलाकात कर बैठक किया एवं ज्ञापन दिया जिसमे सीता माता की जन्मभूमि पुनौराधाम में भव्य माँ जानकी मंदिर, जैसे अयोध्या में भगवान राम का मंदिर बन रहा है उसी तरह पुनौराधाम धाम में सीता माता की मंदिर बनाया जाने के सम्बन्ध में जानकारी दी गयी एवं रामायण सर्किट परियोजना के तहत राम-जानकी मार्ग (राम जन्मभूमि अयोध्या को सीता की जन्मभूमि जनकपुर) से पुनौराधाम से होते हुए मधुबनी जिला के उच्चैठ भगवती काली दास डीह से बाबा विद्यापति गांव विस्पी होते हुए कपलेश्वर स्थान से होते हुए भवानीपुर पुर के उगना महदेव से होते हुए राटी के एकादश रूद्र महादेव स्थान से कोयलक गांव भद्रकाली स्थान से होते हुए बाबा भैरव स्थान पट्टीटोल गांव से होते गौरी शंकर स्थान से अयाची मिश्र डीह से होते हुए बाबा विदेशवर स्थान से नवादा स्थान से बाबा कुशेस्वर स्थान से माता वाणेश्वरी स्थान से होते हुए अहल्या स्थान को राम-जानकी मार्ग से जोड़े एवं इस स्थान को पर्यटक स्थल घोषित करने का निवेदन किया गया. ज्ञापन में दरभंगा के संस्कृत विश्वविद्यालय को केंद्रीय दर्जा एवं वेद विश्वविद्यालय घोषित करने एवं दिल्ली के अकबर रोड का नाम बाबा विद्यापति मार्ग करने एवं दिल्ली एवं नोएडा में मिथिला समाज के लोगो का सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं विवाह जैसे कार्यक्रम को सुचारू रूप से पूरा करने के लिए बाबा विद्यापति भवन का निर्माण करने की जानकारी दी गई इसके अलावा दिल्ली में जमुना किनारे जितने छठ घाट है उसके सौंदीकरण आदि इन सभी बातों को मंत्री जी अपने संज्ञान में लिया और कहा मिथिला के जितने स्थान है उसको राम-जानकी मार्ग से जोड़ा जायेगा एवं इन सभी स्थान को बहुत जल्द पर्यटक स्थल घोषित किया जायेगा एवं और सभी मांगो को बहुत जल्द पूरा किया जायेगा।

मेडिकल हेल्थ चेकअप में सीनियर सिटीजन को मिला लाभ

वृद्ध महिला - पुरुष रोगियों की हुई निशुल्क स्वास्थ्य जांच, वरिष्ठ नागरिक सेवा केंद्र में लगाया स्वास्थ्य परीक्षण शिविर

कपिल शर्मा/गौरवशाली भारत

नाँगल चौधरी। सेवा सीनियर सिटीजन हॉम में वृद्धजनों की गरिमा हेतु और उनके स्वास्थ्य को रोगमुक्त/उपचार करने के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नारनौल एवं सिविल सर्जन नारनौल स्वास्थ्य विभाग के दिशा-निर्देशानुसार बुधवार 21 सितंबर को वरिष्ठ नागरिक सेवा केंद्र में चिकित्सा स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया।

इस शिविर में जिला एवं सत्र न्यायाधीश, चेयरमैन रजनीश बसंल व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव अंजली जैन और वरिष्ठ अधिवक्ता धर्मेश जोशी, डीएसडब्ल्यूओ ऑफिसर यशपाल शर्मा स्वास्थ्य जाँच शिविर में शामिल हुए।

वरिष्ठ नागरिकों के लिए लगाए गए मेडिकल हेल्थ चेकअप कैंप में नारनौल से सिविल सर्जन के आदेशानुसार ब्लॉक स्तरीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम टीम के चिकित्सकों ने भी इस शिविर में पूरे मेडिकल उपकरण सहित भाग लिया। नागरिक अस्पताल शहर नारनौल से हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. ओमप्रकाश खिच्ची, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ग्राम आंतरी से डेंटल सर्जन डॉ. सुषमा यादव, आरबीएसके टीम में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नांगल चौधरी से एएमओ डॉ. जिलेसिंह, एएमओ डॉ. कविता शर्मा, फार्मासिस्ट भावना, एएनएम अर्चना चिकित्सकीय दल के साथ वरिष्ठ नागरिक स्वास्थ्य जाँच शिविर में अपने दायित्व भूमिका का निर्वहन किया।

मेडिकल हेल्थ चेकअप कैंप से अवगत कराते हुए और राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए एएमओ डॉ. जिलेसिंह ने बताया वरिष्ठ नागरिक सेवा केंद्र में लगाए गए कैंप में सीनियर सिटीजन लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया गया है। बीपी, ब्लड शुगर ऑर्थो संबंधित रोगों की जाँच की गई है। साथ ही उपचार हेतु औषधि प्रदान की गई है। कुल 25 रोगियों की जाँच में 11 पुरुष और 14 महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया है।

इस जाँच शिविर में चीफ ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट-कम- सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नारनौल से पहुंचे अतिथी स्वरूप स्वजनों का सेवानिवृत्त अध्यापक रविन्द्र चौधरी द्वारा गुलदस्ता से अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर अधिक्षक पुनीत कुमार, काउंसलर सुमन, सचिव सत्यवीर स्वामी, गगनदीप व अन्य स्वजन उपस्थित रहे।

संपादकीय

जब बेटी हो बेटी की दुश्मन, तब बेटी को कौन बचाये ?

पुरुषों द्वारा महिलाओं पर अत्याचार, उनका शोषण व उत्पीड़न करने की अनेक घटनायें आये दिन सुर्ख़ियों में रहती हैं। अक्सर महिलाओं द्वारा संगठित होकर ऐसे अपराधों व अपराधियों के विरुद्ध आवाज़ भी उठाई जाती है। ऐसे अवसरों पर महिलाओं के प्रति सहानुभूति रखने वाले व उनके मान सम्मान व महिला अधिकारों की क़द्र करने वाले तमाम पुरुष, युवक व छात्र उनके साथ उनकी आवाज़ से आवाज़ मिलाते भी देखे जाते हैं। क्योंकि हर न्यायप्रिय मानवतावादी पुरुष यह भी जानता है कि वह भी किसी महिला का पुत्र उसका भाई, पति या पिता है। महिलाओं की शिकायतों के समाधान हेतु सरकार द्वारा महिला आयोग गठित किये गये हैं। कई जगह महिला थाने बनाये गये हैं। परन्तु हमारे ही देश में यह कहावत भी ख़ूब प्रचलित है कि औरत की सबसे बड़ी दुश्मन औरत ही होती है। ज़ाहिर है आम भारतीय परिवारों में प्रायः होने वाले सास-बहू, ननद-भाभी, जेठानी आदि से होने वाले घरेलू झगड़ों के चलते यह कहावत प्रचलन में आई होगी। यह भी सच है कि एक महिला अपनी बहू से बेटा पैदा करने के लिये जितनी आस लगाकर रखती है उतना उसका बेटा भी नहीं रखता। और ख़ुदा न ख़्वास्ता किसी औरत ने एक या दो तीन बेटियों को लगातार जन्म दे दिया तो सबसे अधिक सास की नज़रों में वह बहू खटकने लगती है। उसकी नज़रों से गिर जाती है। जहालत भरी इस सोच ने न जाने कितने घरों को बर्बाद किया है। तमाम बहुओं को इन्हीं परिस्थितियों में ख़ुदकशी तक करनी पड़ी है। नारी संबंधी अपराध की भी यदि पड़ताल करें तो हमारे ही समाज में अनेकानेक ऐसी महिलायें भी मिलेंगी जो कभी प्रेमिका के रूप में दूसरी महिला का घर उजाड़ देती हैं। कहीं महिलायें ही युवतियों को देह व्यापर में धकेल देती हैं, कहीं पेशेवर अपराधी बनकर महिलायें समाज को कलंकित करती और वह भी महिलाएं ही होती हैं जो अपने नवजात शिशुओं विशेषकर नवजात कन्याओं को कभी कूड़े के ढेर पर तो कभी नालों में कुत्तों के नोचने के लिये फेंक आती हैं। और यदि ऐसी ही विकृत व घृणित मानसिकता की कोई लड़की कॉलेज या विश्वविद्यालय तक पहुँच जाये तो कितनी ही लड़कियों की इज़्ज़त और उनकी ज़िन्दिगी से खिलवाड़ करने से भी नहीं हिचकिचाती।

ऐसी ही अपराधी व विकृत मानसिकता की एक लड़की पर आरोप है कि उसने पिछले दिनों चंडीगढ़ से 24 किलोमीटर दूर चंडीगढ़-लुधियाना राजमार्ग पर घंडुआ क़स्बे में स्थित चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी नामक एक निजी विश्व विद्यालय में लड़कियों के छात्रावास के बाथरूम में नहाते समय कथित तौर पर अपनी लगभग 60 साथी छात्राओं का गुप्त रूप से वीडियो बनाया था। छात्रा पर आरोप है कि उसने ऐसे आपत्तिजनक वीडियो बनाकर उन्हें अपने किसी युवक मित्र को शिमला भेज दिया। और उस लड़के ने कथित तौर पर इनमें से कुछ आपत्तिजनक वीडियो इंटरनेट के माध्यम से वायरल कर दीं। यह वीडियो वायरल होने के बाद विश्वविद्यालय के छात्र व छात्राएं ग़ुस्से में सड़कों पर उतर आये प्रदर्शन के दौरान कई लड़कियों के बेहोश होने की ख़बरें आईं। हॉस्टल के अंदर काफ़ी तोड़फोड़ हुई और अभियुक्त लड़की को इसी विश्वविद्यालय से व उसके मित्र सहित एक अन्य लड़के को शिमला से गिरफ़्तार कर लिया गया है। यह दोनों ही अभियुक्त रोहड़ू (हिमाचल प्रदेश) के रहने वाले बताये जा रहे हैं। इस घटनाक्रम में कुछ पीड़ित छात्राओं द्वारा आत्म हत्या किये जाने की भी अपुष्ट व भ्रामक ख़बरें आई थीं। परन्तु पुलिस व विश्वविद्यालय प्रशासन ने आत्म हत्या किये जाने की ख़बरों को महज़ अफ़वाह बताया। घटना की जांच हेतु पंजाब पुलिस ने तीन सदस्यों की महिला टीम गठित की है। परन्तु इस घटना के बाद छात्राएं ख़ुद को असुरक्षित ज़रूर महसूस कर रही हैं और चाहती हैं कि विश्वविद्यालय प्रशासन उनकी सुरक्षा के कड़े क़दम उठाए। घटना से क्षुब्द कई अभिभावक अपने बच्चों को छात्रावास से वापस बुला रहे हैं। अभिभावकों का कहना है कि विश्वविद्यालय में हालात सुधरने पर उन्हें वापस भेज दिया जायेगा। उधर इस मामले के सामने आने के बाद यूनिवर्सिटी में छुट्टी भी कर दी गई है।

सबको रुला गये हमेशा हंसाने वाले राजू श्रीवास्तव

कॉमेडी की दुनिया के सबसे चर्चित कॉमेडियन्स में से एक राजू श्रीवास्तव 21 सितंबर 2022 को 41 दिन से चल रही जीवन और मृत्यु के बीच की जंग हार गए। आज सुबह कॉमेडियन का दिल्ली के एम्स हॉस्पिटल में निधन हो गया। स्टैंड अप कॉमेडी के जरिए सबको हंसाने वाले राजू श्रीवास्तव के निधन की खबर से पूरे देश में शोक की लहर दौड़ पड़ी है। सभी जगह गम का मौहाल हैं, वे एक अच्छे कॉमेडियन होने के साथ साथ बहुत अच्छे इंसान भी थे। उन्होंने अपनी प्रतिभा एवं मेहनत से बहुत नाम कमाया। उनका एक विशिष्ट अंदाज था, उन्होंने अपनी अद्भुत प्रतिभा से सभी को न केवल प्रभावित किया बल्कि असंख्य दिलों पर राज किया। उनका निधन कला जगत के लिए एक बड़ी क्षति है। हंसते-हंसाते आप ऐसे चले गये कि मनोरंजन जगत में कभी न भरने वाला एक बड़ा शून्य छोड़ गये।

हास्य अभिनेता का अर्थ वह अभिनेता होता है जो अपने अभिनय के माध्यम से लोगों को हँसा देता है। हिंदी फिल्मों में कुछ लोग इसी कार्य के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं जैसे जॉनी वॉकर, महमूद, आदि। कुछ मुख्य पात्रों ने भी हास्य अभिनय का खूब प्रदर्शन किया है जैसे गोविन्दा, ऋतेश देशमुख, आदि कलाकार। इस दुनिया में सबसे मुश्किल काम है किसी को हंसाना। आप भावुक होकर किसी को रुला तो सकते हैं लेकिन खुद मजाक बनकर दूसरे को हंसाने के लिए काबिलियत की जरूरत पड़ती है, जिसकी कमी कम-से-कम बॉलिवुड में तो नहीं है। बॉलिवुड सितारे भी इस बात से इत्तेफाक रखते हैं कि उनके कॅरियर की सबसे मुश्किल भूमिका वहीं होती है जिसमें उन्हें दर्शकों को हंसाने का काम सौंपा जाता है। राजू श्रीवास्तव ने प्रतिभा, ईमानदारी और दृढ़ संकल्प से यह विलक्षण कार्य किया। कला का दायरा सारे बंधनों से परे है। राजू श्रीवास्तव खुद को सिर्फ हीरो नहीं बल्कि एक हास्य अभिनेता के रूप में स्थापित करना चाहते थें। वे भारत के प्रसिद्ध हास्य कलाकार थे। वे मुख्यतः आम आदमी और रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाओं पर व्यंग्य सुनाने के लिये जाने जाते थे।

राजू श्रीवास्तव का जन्म 25 दिसम्बर, 1963 को कानपुर में हुआ था। इनके पिता रमेश चंद्र श्रीवास्तव को बलाई काका कहा जाता था, क्योंकि वह एक कवि थे। उनके माता का नाम सरस्वती श्रीवास्तव हैं। राजू श्रीवास्तव ने शिखा श्रीवास्तव से शादी की हैं। उनका एक बीटा आयुष्मान श्रीवास्तव और बेटी अंतरा श्रीवास्तव हैं। राजू श्रीवास्तव बचपन से ही कॉमेडी करते थे और इसी में भविष्य बनाने की सोची। इन्होने बचपन से ही स्टेज शो करने लगे। उनका वास्तविक नाम सूर्यप्रकाश श्रीवास्तव था। वे गजोधर और राजू भैया के नाम से जाने जाते थे। दरअसल, राजू के ननिहाल में गजोधर नामक एक नाई था, जिससे वे अपने बाल कटवाते थे। राजू की मशहूर भूमिकाओं में एक गजोधर की भूमिका थी। उनके पसंदीदा अभिनेता अमिताभ बच्चन थे। जब राजू पहली बार मुम्बई आये थे तो उन्होंने अमिताभ बच्चन की नकल करके ख्याति प्राप्त की थी। राजू श्रीवास्तव 1993 से हास्य की दुनिया में काम कर रहे थे। उन्होंने कल्यानजी आनंदजी, बप्पी लाहिड़ी एवं नितिन मुकेश जैसे कलाकारों के साथ भारत व विदेश में अनेक स्टेज शो में काम किया है। वह अपनी कुशल मिमिक्री के लिए जाने जाते हैं। उनको असली सफलता ग्रेट इंडियन लाफ्टर चैलेंज से मिली। इस शो में अपने कमाल के प्रदर्शन की बदौलत वह जन-जन एवं घर-घर में सबकी जुबान पर छा गए। उन्होंने बिग बॉस 3 में हिस्सा लिया और 2 महीने तक घर में सबको गुदगुदाने के बाद 4 दिसम्बर 2009 को वोट आउट कर गए। उन्होंने अन्य टीवी धारावाहिकों जैसे शक्तिमान, बिग बॉस, कॉमेडी का महा मुकाबला, कॉमेडी सर्कस, कॉमेडी नाइट्स विद कपिल, इत्यादि में कार्य किया।

'भारत में एडटेक के बढ़ते कदम'

- डॉ दीपक कोहली-

पिछले कुछ वर्षों में भारत में, विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान, एडटेक (एडटेक - एजुकेशन + टेक्नोलॉजी) उद्योग का तेज़ी से विकास हुआ है। शिक्षा का 'वन-साइज़-फिट्स-ऑल' का पारंपरिक मॉडल लंबे समय से शिक्षकों, अभिभावकों और छात्रों के लिये एक बाधा रहा है, हालाँकि एडटेक व्यक्ति-अनुकूल कक्षाएँ प्रदान करता है और छात्रों को 'इंटरएक्टिव लर्निंग' के कई विकल्प प्रदान करता है। लेकिन भारत में 4 में से केवल 1 छात्र की ही डिजिटल लर्निंग तक पहुँच है। हालाँकि 'वर्चुअल लर्निंग' के लिये एडटेक समाधानों की वृद्धि हो रही है, फिर भी वे विभिन्न कारणों से लाखों परिवारों की पहुँच से बाहर हैं।

'इंटरएक्टिव और इनोवेटिव लर्निंग' के तहत व्याख्यान, मल्टीमीडिया ग्राफिक्स और इंटरएक्टिव तत्वों के साथ ऑनलाइन रूप से लर्निंग सीखने की प्रक्रिया को और अधिक आकर्षक बनाता है और एक विज़ुअल दृष्टिकोण के साथ सीखने की अवधारणाओं को संपुष्ट करता है। भारत में एडटेक के तीव्र विकास को उत्साही उद्यमियों की उपस्थिति से भी बल मिला है जो इतने विविध देश की आवश्यकताओं के अनुरूप बहुसांस्कृतिक दृष्टिकोण अपना रहे हैं और नवीन उत्पादों एवं दृष्टिकोणों को विकसित कर रहे हैं।

'ऑन-डिमांड लर्निंग' की आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य में जो छात्र पारंपरिक स्कूल प्रणाली की कठोर समय सारिणी से संगतता रखने में असमर्थ हैं, वे अपने घर से ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। विशेष रूप से प्रतियोगी परीक्षा के उम्मीदवार प्रायः काम और पढ़ाई एक साथ कर सकने में सक्षम हो पाते हैं।प्रायः कक्षा के समय और उनके कार्य समय के बीच ओवरलैपिंग की स्थिति होती है। ऑन-डिमांड प्रशिक्षण परिदृश्य को छात्रों के पक्ष में मोड़ देता है जहाँ वे कहीं भी, कभी भी और किसी भी माध्यम से पाठ्यक्रम और अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। पूर्व में एक प्राध्यापक अधिकतम 100 छात्रों तक के बैच को संभाल सकता था।एडटेक शिक्षकों को छात्रों की एक बड़ी संख्या के लिये स्वयं को उपलब्ध कराने में सक्षम बनाता है।अब ऐसे भौतिक स्थान की आवश्यकता नहीं रह गई है जहाँ छात्र और शिक्षक कक्षा सत्र के लिये एकत्र हों।

व्यक्ति-अनुकूल मूल्यांकन में छात्रों को उनके पिछले लर्निंग पैटर्न और प्रदर्शन के डेटा के आधार पर व्यक्ति-अनुकूल अनुशंसाएँ प्राप्त होती हैं।जिन छात्रों को सीखने की धीमी गति के कारण अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता होती है, उन्हें उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है। आयु बाधाओं की समाप्ति हो गई है। ऑनलाइन कार्यक्रम और पाठ्यक्रम किसी भी आयु वर्ग के लोगों को अपनी गति से, बिना किसी संकोच या असहजता के और अपनी अन्य प्रतिबद्धताओं से समझौता किये बिना लर्निंग की अनुमति देते हैं जो स्थिति पहले नहीं रही थी।

भारत का एडटेक उद्योग धीरे-धीरे अमीर और गरीब के बीच शिक्षा-गुणवत्ता की खाई को पाट सकता है, जिससे सभी पृष्ठभूमि के भारतीयों को सफलता के अधिक समान अवसर प्राप्त हो सकते हैं।एडटेक की लागत-प्रभावशीलता छात्रों को उनके और प्रीमियम शिक्षकों के बीच के पे-वॉल को दूर करने की अनुमति देती है और लर्निंग की यह वर्चुअल प्रकृति भौगोलिक बाधाओं को समाप्त करती है।'पे-वॉल' वह व्यवस्था है जहाँ किसी वेबसाइट पर केवल भुगतान करने वाले ग्राहकों को ही पहुँच प्राप्त होती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी संबंधी अध्ययन में सैद्धांतिक अध्ययन के पूरक के रूप में व्यावहारिक प्रयोगशाला सत्र, शोध प्रबंध परियोजनाएँ और क्षेत्र यात्राएँ भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती हैं।ऑनलाइन शिक्षा में सीखने का यह पहलू गंभीर रूप से सीमित होता है। शिक्षा का अर्थ केवल विषय संबंधी ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह छात्रों के बीच सामाजिक कौशल और खेल भावना के विकास का भी लक्ष्य रखती है जिनका विकास वर्षों की अंतःक्रिया के साथ होता है। पूर्णतः ऑनलाइन शिक्षा पर निर्भर रहने से बच्चों के समग्र विकास में बाधा आ सकती है और भविष्य में वे अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में निष्पादन की कमी की स्थिति प्रदर्शित कर सकते हैं।

यद्यपि भारत एक व्यापक भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता रखता है, यह एक वृहत सामाजिक-आर्थिक विभाजन से भी ग्रस्त है जिसमें डिजिटल अवसंरचना सुविधाओं की गैर-एकरूपता भी शामिल है। बाधित बिजली आपूर्ति और खराब या गैर-मौजूद इंटरनेट कनेक्टिविटी ज़मीनी स्तर पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रसार के मार्ग में बड़ी चुनौतियाँ हैं। ऑनलाइन शिक्षा से व्यापक लैंगिक असमानता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। बिहार के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले 733 छात्रों पर किये गए हाल के एक सर्वेक्षण में पता चला कि 36त्न बालकों के विपरीत केवल 28त्न बालिकाओं के घरों में स्मार्टफोन मौजूद था।बालिकाएँ बालकों की तुलना में घर के कामों में अधिक संलग्न भी पाई गईं और उनकी यह संलग्नता प्रायः इन पाठों के प्रसारण के समय से ओवरलैप होती थी।

डिजिटल शिक्षा के बढ़ते बाज़ार के साथ एडटेक कंपनियाँ अधिकाधिक उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिये विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक कदाचार में संलग्न होने की संभावना रखती हैं।हाल ही में भ्रामक विज्ञापनों और अनुचित व्यापार अभ्यासों के मुद्दे सामने आए हैं।स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग ने बताया है कि एड-टेक कंपनियाँ निःशुल्क सेवाएँ देने की आड़ में अभिभावकों को लुभा रही हैं और उनसे इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर (श्स्न्ञ्) मैंडेट पर हस्ताक्षर करा रही हैं या ऑटो-डेबिट सुविधा को सक्रिय कर रही हैं जहाँ विशेष रूप से भेद्य परिवारों को लक्षित किया जा रहा है।

मनोरंजन के लिये इंटरनेट का उपयोग करना आम बात है, लेकिन ऑनलाइन पाठों के लिये यह एक बड़ी चुनौती है।संभव है कि शिक्षक डिजिटल सामग्री के निर्माण में और इसे प्रभावी ढंग से ऑनलाइन प्रसारित करने में सुप्रशिक्षित न हों।इसके साथ ही, उनसे डिजिटल माध्यम के लिये तुरंत ही अपग्रेड होने और छात्रों से इसके अनुकूल होने की उम्मीद करना अनुचित है।

असम का ऑनलाइन करियर गाइडेंस पोर्टल कक्षा 9 से 12 तक के छात्रों के लिये स्कूल-टू-वर्क और उच्च शिक्षा संक्रमण को सुदृढ़ कर रहा है।झारखंड का डिजीसैट सुदृढ़ अभिभावक-शिक्षक-छात्र संबंध स्थापित कर व्यवहार परिवर्तन को आगे बढ़ा रहा है।हिमाचल प्रदेश की 'हरघर पाठशाला' विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (special needs children) को डिजिटल शिक्षा प्रदान कर रही है।मध्य प्रदेश का 'DigiLEP' सभी संकुलों और माध्यमिक विद्यालयों को कवर करने वाले 50,000 से अधिक व्हाट्सएप समूहों के साथ एक सुसंरचित तंत्र के माध्यम से लर्निंग संवर्द्धन के लिये सामग्री/कंटेंट वितरित कर रहा है।केरल की 'अक्षरवृक्षम' पहल खेल और अन्य गतिविधियों के माध्यम से लर्निंग एवं कौशल विकास का समर्थन करने के लिये डिजिटल 'शिक्षा-मनोरंजन' या 'एजुटेनमेंट' (Edutainment) पर ध्यान केंद्रित कर रही है।ऑनलाइन लर्निंग के विस्तार के लिये भारत में मौजूदा डिजिटल डिवाइड को दूर करना आवश्यक है। ओड़िशा सरकार का '5T' (Transparency, Teamwork, Technology, and Timeliness leading to Transformation) पहल इसके अंतर्गत सरकारी स्कूल परिवर्तन कार्यक्रम इस दिशा में एक सराहनीय कदम है।

महामारी के दौरान समावेशी शिक्षा नीतियों की आवश्यकता को वैश्विक स्तर पर चिह्नित किया गया है। ऑनलाइन शिक्षा को अधिक प्रभावी, सुलभ और सुरक्षित बनाने के लिये ऑनलाइन संसाधनों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और नवीन योजनाओं का विकास आवश्यक है।शिक्षण समुदाय शिक्षकों के एक राष्ट्रव्यापी अनौपचारिक और स्वैच्छिक नेटवर्क के निर्माण हेतु एक साथ आया है, जिसे 'ऑनलाइन शिक्षण चर्चा मंच' (Discussion Forum of Online Teaching- DFOT) का नाम दिया गया है। यह स्वागतयोग्य पहल है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अभिनव एवं व्यक्ति-अनुकूल दृष्टिकोणों के लिये नई संभावनाओं के द्वार खोल सकती हैं जो विभिन्न लर्निंग योग्यताओं के विकास में मदद करेंगी।आईआईटी खड़गपुर ने नेशनल एआई रिसोर्स प्लेटफॉर्म (NAIRP) विकसित करने के लिये अमेज़ॅन वेब सर्विसेज के साथ सहयोग स्थापित किया है। यह भविष्य में बेहतर टीचिंग और लर्निंग के लिये आँखों की गति, संकेत और अन्य मापदंडों की निगरानी जैसे तंत्रों का उपयोग करेगा।''What is Told is What is Sold'': एडटेक कंपनियों के भ्रामक विज्ञापनों के विरुद्ध चेतावनी और पारदर्शिता पर बल के साथ ही पेशेवर कदाचार की निगरानी और समयबद्ध शिकायत निवारण के लिये एक उपयुक्त तंत्र के निर्माण की आवश्यकता है।

एडटेक कोई जादू की छड़ी नहीं है जो भारत में लर्निंग संबंधी संकट को क्षण में दूर कर देगी। यह स्कूलों में शिक्षकों द्वारा शिक्षण का प्रतिस्थापन विकल्प भी नहीं है। वस्तुतः लर्निंग के ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों के बीच संतुलन रखना उपयुक्त दृष्टिकोण होगा।उल्लेखनीय है कि बायजूस और अनएकेडमी जैसे प्रमुख ऑनलाइन खिलाड़ियों ने अब ऑफलाइन या हाइब्रिड लर्निंग मॉडल की ओर भी कदम बढ़ाया है। यह तथ्य है कि एडटेक शिक्षा छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिये कई संभावनाओं के द्वार खोलती है, लेकिन यह भारत में सामाजिक असमानताओं को बढ़ावा भी दे सकती है।

गहलोत अगर कांग्रेस अध्यक्ष बन गये तब भी मुख्यमंत्री की कुर्सी पायलट को नहीं देंगे

रमेश सर्राफ धमोरा

गहलोत चाहते हैं कि यदि उनको पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनना पड़े तो भी मुख्यमंत्री की जिम्मेदारी उनके पास ही रहे। यदि मुख्यमंत्री बदलने की बात आती है तो उनकी राय को तवज्जो दी जाए। गहलोत किसी भी सूरत में सचिन पायलट को बर्दाश्त नहीं करेंगे। राजस्थान में विधानसभा के चुनाव होने में अभी एक साल से अधिक का समय बाकी है। मगर चुनाव लड़ने वाले राजनीतिक दलों ने अभी से अपनी तैयारियां शुरू कर दी हैं। राजस्थान में मुख्य मुकाबला कांग्रेस व भाजपा के बीच ही होता रहा है, क्योंकि यहां तीसरा मोर्चा नहीं बन पाया है। जिसका लाभ भी कांग्रेस व भाजपा को ही मिलता रहा है। इसी कारण 1993 से यहां एक बार भाजपा व एक बार कांग्रेस की सरकार बनती आ रही है। पिछले विधानसभा चुनाव में हनुमान बेनीवाल ने राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी बनाकर 58 सीटों पर चुनाव लड़ा था। मगर उन्हें तीन सीट व 2.4 प्रतिशत वोट मिले थे। इसी तरह भाजपा से बगावत कर घनश्याम तिवाड़ी ने भी भारत वाहिनी पार्टी के नाम से राजस्थान में 63 विधानसभा सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारे थे। मगर तिवाड़ी सहित सभी की जमानत हो गई थी। पिछले विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी (आप) ने भी पूरे जोर-शोर से चुनाव लड़ा था। मगर उनका कोई भी प्रत्याशी 1000 वोटों की संख्या पार नहीं कर पाया था। यहां तक कि पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष रामपाल जाट भी मात्र 628 वोट ले पाए थे। प्रदेश में आप को 136345 यानि मात्र 0.38 प्रतिशत वोट मिले थे। पिछले विधानसभा चुनाव में बसपा के छह विधायक जीते थे। मगर इसे बसपा का दुर्भाग्य ही कहेंगे कि हर बार की तरह इस बार भी बसपा के सभी 6 विधायकों ने दल बदल कर कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर ली थी। जिस कारण जीतकर भी बसपा खाली हाथ रह गई थी। पिछले चुनाव में बसपा को 4.03 प्रतिशत मत मिले थे।

आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर सत्तारुढ़ कांग्रेस पार्टी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में चुनाव लड़ने की पूरी तैयारी कर रही है। हालांकि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को कांग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने के चर्चा जोरों से चल रही है। ऐसे में यदि वह पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बन जाते हैं तो सचिन पायलट के मुख्यमंत्री बनने की सबसे अधिक संभावना जताई जा रही है। चूंकि अशोक गहलोत किसी भी स्थिति में पायलट को राजस्थान का नेतृत्व नहीं सौंपेंगे। ऐसे में गहलोत की पसंद का ही मुख्यमंत्री बनेगा। अभी राजस्थान में गहलोत बनाम पायलट का झगड़ा जोरों पर चल रहा है। दोनों के समर्थक एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप कर रहे हैं। हाल ही में गुर्जर नेता किरोड़ी सिंह बैंसला की श्रद्धांजलि सभा के दौरान पुष्कर में पायलट समर्थकों ने गहलोत समर्थक मंत्री अशोक चांदना व शकुंतला रावत के भाषण देने के दौरान नारेबाजी की व जूते चप्पलें उछालीं। इतना ही नहीं कार्यक्रम में उपस्थित मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के पुत्र वैभव गहलोत व राजस्थान पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह राठौड़ को बिना भाषण दिए ही वहां से जाना पड़ा। इन दिनों पायलट समर्थक अपने नेता के पक्ष में खुलकर मुखर हो रहे हैं। वह चाहते हैं कि राजस्थान की कमान पायलट को सौंपी जाए। गहलोत समर्थक और राजस्थान अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष खिलाड़ी लाल बैरवा भी खुलकर पायलट को मुख्यमंत्री बनाने की मांग करने लगे हैं। बैरवा का कहना है कि गहलोत को पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनना चाहिए तथा राजस्थान का मुख्यमंत्री सचिन पायलट को बनाया जाना चाहिए जिससे पार्टी मजबूत होगी। गत दिनों पायलट के जन्मदिन के अवसर पर गहलोत समर्थक सात विधायकों ने भी पायलट के घर जाकर उनको बधाई देकर सबको चौंका दिया था।

बंजी जम्पिंग करने का है मन, तो इन जगहों को करें एक्सप्लोर

ऋषिकेश में भारत में सबसे ऊंचा बंजी जंपिंग स्पॉट है, और यह एकमात्र गंतव्य है जहां से बंजी जंपिंग का एक अलग अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। इस स्थान का नाम जंपिंग हाइट्स है, जो मोहन चट्टी गांव, ऋषिकेश में स्थित है। जब भी घूमने की बात आती है, तो हर व्यक्ति की अपनी अलग प्राथमिकताएं होती हैं। जहां कुछ लोग ऐतिहासिक प्लेसेस को एक्सप्लोर करना पसंद करते हैं तो कुछ लोगों को एडवेंचर्स एक्टिविटीज करना अच्छा लगता है। अगर आप भी एडवेंचर्स स्पोर्ट्स में रूचि रखते हैं और बंजी जम्पिंग करना चाहते हैं तो आप भारत की इन जगहों को एक्सप्लोर कर सकते हैं- ऋषिकेश में भारत में सबसे ऊंचा बंजी जंपिंग स्पॉट है, और यह एकमात्र गंतव्य है जहां से बंजी जंपिंग का एक अलग अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। इस स्थान का नाम जंपिंग हाइट्स है, जो मोहन चट्टी गांव, ऋषिकेश में स्थित है। बंजी जंप की ऊंचाई लगभग 83 वर्ग मीटर है और बंजी जंपिंग करने के लिए न्यूनतम आयु सीमा 12 वर्ष है। लोनावाला भारत में सबसे अच्छे और सबसे सुरक्षित बंजी जंपिंग स्पॉट में से एक है। यह मुंबई और पुणे के निवासियों के लिए निकटतम स्थानों में से एक है और आप यहां पर वीकेंड पर जा सकते हैं। बंजी जंपिंग स्थान का नाम डेला एडवेंचर्स है, जो कुनेगांव, लोनावाला में स्थित है। यहां पर बंजी जंप की ऊंचाई 45 मीटर है और इसके लिए न्यूनतम आयु 10 वर्ष है। यह स्थान अत्यधिक रोमांच के दीवाने के लिए है क्योंकि इसमें अन्य गंतव्यों की तरह कूदने के लिए एक निश्चित मंच नहीं है। यहां, आपको एक क्रेन कूदना है, और अधिकांश भारतीयों को लगता है कि क्रेन से कूदना तय प्लेटफॉर्म की तुलना में जोखिम भरा है। इसीलिए, जब भारत में नॉन-फिक्स्ड बंजी जंपिंग की बात आती है, तो बैंगलोर में ओजोन एडवेंचर्स रेटिंग चार्ट में सबसे ऊपर है। यह सेंट मार्क रोड, बैंगलोर पर स्थित है। यहां पर बंजी जंप की ऊंचाई 25 मीटर प्लेटफॉर्म है और न्यूनतम आयु सीमा 18 वर्ष है।

महिलाओं के खिलाफ अपराध करने वाले राक्षसों को कठोरतम और तत्काल दंड सुनिश्चित करना जरूरी

दीपक कुमार त्यागी

लेकिन आज सोचने वाली बात यह है कि 21वीं सदी के भारत में हम किस तरह के संस्कार विहीन, असभ्य, बर्बर, जाहिल समाज की ओर बढ़ते जा रहे हैं, जिसमें कुछ लोगों के मन में नियम, कायदे, कानून का कोई भय या सम्मान ही नहीं बचा है।

जिस गौरवशाली संस्कृति वाले महान भारत में मातृशक्ति को आदिकाल से ही बेहद पूजनीय माना जाता रहा है, आज वहां पर मातृशक्ति के प्रति आये दिन बेहद जघन्य श्रेणी के अपराध घटित होना एक साधारण घटना व बेहद आम बात बनती जा रही है, जो ठीक नहीं है। आज हमारे सभ्य समाज के लिए बेहद चिंताजनक बात यह है कि हमारे प्यारे देश भारत में वर्ष दर वर्ष महिलाओं के प्रति घटित होने वाले अपराध कम होने की जगह बहुत तेजी के साथ बढ़ते ही जा रहे हैं। जबकि अब तो समाज के अधिकांश व्यक्ति यह बहुत अच्छे से जानते हैं कि सर्वशक्तिमान ईश्वर की पृथ्वी पर सबसे बेहतरीन व खूबसूरत रचना मातृशक्ति के रूप में ही है, जोकि इंसान को जन्म देने की शक्ति भी रखती है और मां, बहन, पत्नी व बेटी जैसे बेहद अनमोल रिश्ते को भी जन्म देती है।

हालांकि आज देश के कुछ बेहद व्यवसायिक लोगों के द्वारा अपने हितों को साधने के चक्कर में स्त्री को बाजारवाद के इस दौर में एक वस्तु मात्र बनाकर रखने का बेहद शर्मनाक मानसिक दिवालियेपन का गंदा खेल चल रहा है, जिसको हमें समय रहते रोकना होगा। वहीं देश में आज आधी अधूरी पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण के चलते व कुछ लोगों की बेहद ओछी सोच ने महिलाओं को उपभोग का एक खिलौना मात्र बनाने का दुस्साहस किया है, जिससे प्रभावित होकर कुछ लोग उनके मान सम्मान से आये दिन खिलवाड़ करने का निंदनीय और अक्षम्य अपराध करने का प्रयास करते हैं, जोकि हमारे सभ्य समाज के लिए बिल्कुल भी ठीक नहीं है। वैसे भी जिस तरह से आज देश में बेहद सुलभता से उपलब्ध इंटरनेट ने दुनिया को छोटे से मोबाइल में सिमेटने का कार्य किया है, उससे आम लोगों को भी अच्छा व बुरा सब कुछ बहुत ही आसानी से मोबाइल पर देखने को मिल रहा है, जिसका कुछ नादान लोगों के द्वारा बड़े पैमाने पर दुरुपयोग किया जा रहा है, जिसके चलते भी बहुत तेजी के साथ कुछ लोग संस्कार विहीन होते जा रहे हैं। वैसे धरातल पर निष्पक्ष रूप से देखा जाए तो भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों में पिछले कुछ वर्षों से बहुत ही तेजी से गिरावट आती जा रही है। नैतिक पतन के चलते ही आज देश में बच्चों, बच्चियों, नौजवानों, महिलाओं व बुजुर्गों के साथ भी आये दिन लोगों के दिलोदिमाग को झकझोर देने वाली बेहद शर्मनाक कृत्य वाली आपराधिक घटनाएं घटित होती रहती हैं, रोजाना ही देश के किसी ना किसी भाग से अपराध की बेहद चिंतित करने वाली खबरें आती रहती हैं। वैसा ही एक बेहद झकझोर देने वाला समाचार हाल के दिनों में उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जनपद से भी आया है। उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जनपद के निघासन थाना इलाके के तमोलीन पुरवा गांव में बुधवार 14 सितंबर को दो सगी नाबालिग बहनों के शव गांव के बाहर खेत में पेड़ पर संदिग्ध परिस्थितियों में लटके हुए मिलने से पूरे इलाके में सनसनी मच गयी थी। हर घटना की तरह ही ट्विटर पर आरोप प्रत्यारोप व बचाव करने के लिए ट्वीट-ट्वीट खेलने वाले बयानवीरों की बाढ़ इस घटना पर भी आ गयी थी, देश के कुछ दिग्गज राजनेता भी ट्विटर के इस खेल में शामिल थे, उनमें कोई तो उत्तर प्रदेश सरकार को जमकर कोस कर नाबालिग लड़कियों की लाशों पर अपनी राजनीतिक रोटियां सेंक रहा था, वहीं कोई उत्तर प्रदेश सरकार व पुलिस के बचाव में अपना पक्ष रख रहा था। खैर जो भी हो, हर घटना की तरह ही इस घटना पर भी देश में भरपूर राजनीति लंबे समय तक चलती रहेगी। पीड़ित पक्ष व अपराधियों की जाति व धर्म को विभिन्न तरह से निशाना बनाकर चर्चा चलती रहेगी, राजनेताओं के राजनीतिक पर्यटन के साथ-साथ संवेदना व्यक्त करने के लिए पीड़ित पक्ष के घर के दौरे भी शुरू हो जायेंगे, वह पीड़ित पक्ष के सामने अपने सच्चे व घड़ियाली आंसू जमकर बहाएंगे, सरकार व प्रशासन राजनेताओं के उस पर्यटन को कानून व्यवस्था खराब हो जाने का हवाला देकर रोकने का कार्य करेगी, फिर रोके जाने वाले राजनेताओं के दलों के भक्तों का सड़कों पर जमकर हंगामा बरपेगा, क्योंकि भाई उनको तो केवल अपनी राजनीति चमकानी है, शायद ही किसी राजनेता को वास्तव में परिवार के दुःख से सरोकार हो।

प्रशासन के द्वारा परिवार को सार्वजनिक रूप से बोलने से रोका जायेगा, उचित मुआवजा धनराशि देकर ज़ख्मों पर अलग ही तरह का मरहम लगाया जायेगा। लेकिन सोचने वाली बात यह है कि क्या तारीख़ पर तारीख़ के बाद मृतक बच्चियों के अपराधियों को जल्द कठोर से कठोर सजा दिलवाने का कार्य भी समय रहते हो पायेगा? क्या देश में अपराधियों के हौसले पस्त करने के लिए पीड़ित परिवार को समय से न्याय मिल पायेगा?

देश की राजधानी दिल्ली से मात्र 465 किलोमीटर दूर उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जनपद के निघासन इलाके के तमोलीन पुरवा गांव में जब से दो नाबालिग बच्चियों के शव पेड़ पर झूलते हुए मिले हैं, उसके बाद एक बार फिर इस नृशंस हत्याकांड ने हम सभी देशवासियों को बुरी तरह से झकझोर कर इंसानियत को शर्मसार करने का कार्य किया है। इस हैवानियत भरे मामले पर सभ्य समाज के सभी वर्गों के लोगों में बहुत गुस्सा देखा जा रहा है। घटना के बाद क्षेत्र के लोग व परिजन पुलिस पर लापरवाही का आरोप लगाकर के सड़क जाम करके, विरोध प्रदर्शन करके व विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर जल्द न्याय के लिए मुहिम चलाकर अपना आक्रोश व्यक्त करने कार्य कर रहे हैं। वैसे पुलिस ने इस मामले पर तत्परता दिखाते हुए 24 घंटे के अंदर ही खुलासा करते हुए, सभी 6 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है, गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान छोटू, जुनैद, सोहेल, हाफिजुल, करीमुद्दीन और आरिफ के रूप में हुई है। लेकिन फिर भी क्षेत्र के आम लोगों में जबरदस्त आक्रोश व्याप्त है।

आपके जादुई हाथों का हुनर

अपने जादूई हाथों में ये हुनर
रखना,
दिल का दरिया मिले उसे समंदर
करना।

खताओं को मेरी माफ करना,
दुआओं से अपनी मुझे सिकंदर
करना।

बहुत टूटा है तड़पता है दिल तुम्हारे
लिए,
रहम से अपनी मुझे तरबतर करना।

चीर के देख लो दिल आप ही आप
हैं,
बेवफाई मिले तो दिल से बाहर
करना ।

करिश्माई वजूद, रूहानी एहसास
है आपका,
मुझे भी खुदा की खिदमत में नजर
करना ।

दूर-दूर अजनबी यों से क्यों बैठे
हो,
जिस न सही रूप मेरी नजर करना।

फूल दे आये थे जिन हाथों में हम,
शुरू किया उन्हीं हाथों ने कलम
सर करना।

शार्ट न्यूज

संभल : क्लास रूम में ही 18 घंटे बंद रही छात्रा, जंगलों में होती रही रातभर तलाश

संभल गुन्नौर। संभल में स्कूल गई छात्रा देर शाम तक घर नहीं पहुंची तो खलबली मच गई। रातभर जंगलों में उसकी तलाश होती रही। अगले दिन सुबह छात्रा अपने ही स्कूल की क्लास में बंद मिली तो हड़कंप मच गया। 18 घंटे तक छात्रा बिना कुछ खाए पीए क्लास में ही बंद रही। बुधवार सुबह शिक्षक स्कूल पहुंचे तो छात्रा कमरे में चीख रही थी। चीख सुनकर सैकड़ों ग्रामीण इकट्ठा हो गए और शिक्षकों के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर हंगामा किया। मामला गुन्नौर विकास खंड क्षेत्र के गांव धनारी पट्टी बालूशंकर का है। नखासा क्षेत्र के गांव रहटौल निवासी ज्ञानसिंह की सात वर्षीय बेटी अनुष्का गुन्नौर विकासखंड की ग्राम पंचायत धनारी पट्टी बालूशंकर में मामा सत्यपाल सिंह के घर रहकर गांव के परिषदीय स्कूल में कक्षा दो में पढ़ाई कर रही है। मंगलवार को अनुष्का स्कूल में पढ़ने पहुंची। छुट्टी के समय अनुष्का को कमरे में नींद आ गई। छुट्टी होने पर शिक्षक वेदराम सिंह और सत्यपाल सिंह ने कमरों के ताले बंद किए और घर चले गए। छात्रा कमरे में ही सोती रह गई। छात्रा के घर नहीं पहुंचने पर परिवार के लोगों ने तलाश की लेकिन कहीं पता नहीं चल पाया। इस पर परिजन व ग्रामीण दिनभर जंगल में तलाश करते रहे। देररात तक छात्रा को तलाश किया लेकिन कहीं पता नहीं चल पाया। बुधवार सुबह शिक्षक स्कूल पहुंचे तो छात्रा कमरे में बिलख रही थी। छात्रा को बदहवाश देखकर शिक्षक भी घबरा गए। जानकारी पाकर छात्रा के परिजन व ग्रामीण मौके पर पहुंचे।

वाराणसी फिर शर्मसार: स्कूल बस में एलकेजी की बच्ची से छेड़छाड़, सीसीटीवी फुटेज में वारदात कैद, चार पर केस

बड़ागांव (वाराणसी)। वाराणसी में एक बार फिर शर्मनाक वारदात को अंजाम दिया गया है। यहां एलकेजी में पढ़ने वाली चार साल की बच्ची से स्कूल बस में छेड़छाड़ हुई है। बस में लगे सीसीटीवी कैमरे में कंडक्टर की शर्मनाक हरकतें कैद भी हो गई हैं। मामला बड़ागांव थाना क्षेत्र के तरना स्थित एक निजी विद्यालय का है। वारदात दस अगस्त को हुई। इसकी शिकायत भी स्कूल में की गई लेकिन कार्रवाई के नाम पर टाल-मटोल होती रही। इस पर बच्ची के परिजनों ने पुलिस अधीक्षक ग्रामीण से मिलकर शिकायत की। पुलिस अधीक्षक ग्रामीण के निर्देश पर बड़ागांव थाने में कंडक्टर के साथ ही स्कूल प्रबंधक और ट्रांसपोर्ट इंचार्ज समेत चार लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर पुलिस जांच शुरू कर दी है। लालपुर-पाण्डेयपुर थाना क्षेत्र के की रहने वाली 4 वर्षीय मासूम तरना स्थित स्कूल में एलकेजी में पढ़ती है। छात्रा के परिजनों का आरोप है कि जिस बस से छात्रा को उसके घर छोड़ा जाता था, उसमें मौजूद कंडक्टर स्वामीनाथ बच्ची के साथ छेड़छाड़ करता था। 27 जून से जब भी बच्ची अपने घर जाती थी तो वह डरी सहमी नजर आती थी। बच्ची ने बताया कि कंडक्टर उसे परेशान करता है और गंदी हरकत करता है।

मुख्तार अंसारी की बढ़ती मुश्किलें, जेलर को धमकाने मामले में 7 साल की सजा

लखनऊ। माफिया मुख्तार अंसारी की मुश्किलें और बढ़ती जा रही हैं। इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच ने राजधानी के आलमबाग थाने के एक आपराधिक मामले में माफिया मुख्तार अंसारी को दोषी करार दिया है। कोर्ट ने उसे 7 साल कारावास की सजा सुनाई है। यह निर्णय न्यायमूर्ति दिनेश कुमार सिंह की एकल पीठ ने राज्य सरकार की अपील को मंजूर करते हुए पारित किया। वर्ष 2003 में तत्कालीन जेलर एसके अवस्थी ने थाना आलमबाग में मुख्तार के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई थी। जिसके अनुसार जेल में मुख्तार अंसारी से मिलने आए लोगों की तलाशी लेने का आदेश देने पर उन्हें जान से मारने की धमकी दी गई थी। साथ ही उनके साथ गाली गलौज करते हुए मुख्तार ने उन पर पिस्तौल भी तान दी थी। इस मामले में ट्रायल कोर्ट ने मुख्तार को बरी कर दिया था, जिसके खिलाफ सरकार ने अपील दाखिल की थी।

आजम की जौहर यूनिवर्सिटी की दीवार से किताबों के बाद फर्नीचर भी बरामद

रामपुर। सपा नेता आजम खां की मुश्किलें बढ़ रही हैं। जौहर विश्वविद्यालय से चोरी की हजारों बेशकीमती किताबें बरामद होने के बाद अब फर्नीचर भी बरामद कर लिया गया है। दरअसल, आजम खान के बेटे और सपा विधायक अब्दुल्ला आजम के दो दोस्तों की निशानदेही पर पुलिस ने जौहर यूनिवर्सिटी में दीवार तोड़कर मदरसा आलिया से चोरी किए गए फर्नीचर को भी बरामद कर लिया। पुलिस ने दोस्तों की निशानदेही पर यूनिवर्सिटी के दो कर्मचारियों को भी हिरासत में ले लिया है, जबकि तीसरे की तलाश की जा रही है। इस कार्रवाई से यूनिवर्सिटी प्रशासन में भी हड़कंप मचा हुआ है। सपा विधायक अब्दुल्ला आजम के दो दोस्त सालिम व अनवार इन दिनों जुआ खेलने के साथ ही पालिका की रोड क्लीनर मशीन को गायब करने के मामले में पुलिस अभिरक्षा में हैं। पुलिस ने कोर्ट के माध्यम से सालिम व अनवार को अभिरक्षा में लिया था। उनकी निशानदेही पर पुलिसने बुधवार को जौहर यूनिवर्सिटी पहुंचकर खुदाई के बाद मदरसा आलिया से फर्नीचर बरामद कर लिया। एएसपी डा.संसार सिंह के अनुसार मदरसा आलिया से फर्नीचर बरामद कर लिया है। साथ ही यूनिवर्सिटी से दो कर्मचारियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।

दिनदहाड़े रुपए से भरा बैग ले गया चोर, पुलिस के सामने व्यापारी ने किया इनकार

कानपुर। यूपी में कानपुर के कलक्टरगंज थाने के सामने स्थित एक व्यापारी के ऑफिस में दिनदहाड़े ताला तोड़कर चोरी हो गई। हालांकि पुलिस ने तहरीर मांगी तो व्यापारी ने चोरी से इनकार कर दिया। व्यापारी नेता विनोद गुप्ता ने बताया कि कलक्टरगंज थानाक्षेत्र के नयागंज स्थित आर्यावर्त होटल में एक व्यापारी का ऑफिस है। वह कोलकाता के किसी व्यापारी की यहां पर गद्दी चलाते हैं। मंगलवार दोपहर वह ऑफिस में ताला डालकर स्टेपलरपिन लाने नीचे चले गए। आरोप है कि कुछ देर बाद जब वह लौटे तो कमरे का ताला टूटा मिला। मौके पर एक हथौड़ा भी पड़ा था। अंदर से एक बैग गायब था। व्यापारी ने साथियों से रुपये भरा बैग चोरी होने की बात कही। व्यापारी नेता ने मामले की जानकारी कलक्टरगंज एसीपी को दी तो मौके पर पहुंची पुलिस को सीसीटीवी कैमरे में एक युवक बैग टांगकर अंदर जाते देखा। वह दोपहर 12.45 पर कमरे के अंदर गया और 12.54 पर दो बैग टांगकर बाहर जाते दिखा। इस बीच व्यापारियों ने एसीपी कलक्टरगंज से दिनदहाड़े ऐसी घटना होने को लेकर नाराजगी भी जताई। एसीपी ने थाने में तहरीर देने और जल्द घटना के खुलासे का आश्वासन दिया। शाम को व्यापारी ने कलक्टरगंज थाने में कुछ भी चोरी नहीं होने का प्रार्थना पत्र देकर मामले से पलड़ा झाड़ लिया। कलक्टरगंज थाना प्रभारी ने इसकी पुष्टि की।

झांसी : दबंगों की पिटाई में युवक की मौत, लापरवाह चौकी इंचार्ज लाइन हाजिर

झांसी। उत्तर प्रदेश में झांसी के सीपरी बाजार थानाक्षेत्र में दंबगों की पिटाई से गंभीर रूप से घायल हुए युवक की इलाज के दौरान बुधवार को मौत हो गयी। इसके बाद परिजनों ने पुलिस पर लापरवाही बरतने का आरोप लगाते हुए जबरदस्त हंगामा किया। मामले की जानकारी होने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक के परिजनों को समझाया और जल्द ही कार्रवाई का आश्वासन भी दिया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) राजेश एस को जब पूरे मामले की जानकारी हुई तो उन्होने तत्काल कार्रवाई करते हुए इस मामले में लापरवाही बरतने वाले थाना सीपरी बााजार के ग्रासलैंड चौकी प्रभारी हिमांशु श्रीवास्तव को लाइन हाजिर कर दिया और मामले के जांच के आदेश दिये। गौरतलब है कि सीपरी बाजार थानाक्षेत्र के करारी गांव निवासी पंकज परिहार का गांव के ही कुछ लोगों से विवाद हो गया था। विवाद में दूसरे पक्ष के लोगों ने 11 सितंबर को पंकज पर लाठी डंडों से हमला कर दिया जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया ,जिसके बाद से पंकज अस्पताल में भर्ती था। इस दौरान परिजनों की तहरीर पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया था।

अखिलेश का तंज- योगी सरकार में मंत्री की ही सुनवाई नहीं

प्राइवेट चीनी मिलों पर किसानों का 3964 करोड़ बकाया

लखनऊ। यूपी में गन्ना मूल्य बकाया जहां हमेशा से मुद्दा रहा है। हालांकि योगी सरकार ने 2020-21 तक का लगभग पूरा भुगतान सुनिश्चित करा दिया है लेकिन प्रदेश की निजी चीनी मिलों पर पेराई सत्र 2021-22 का 3॰964.45 करोड़ रुपये बाकी होने की बात सामने आई तो पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सरकार पर हमला करने में देर नहीं लगाई। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार है, इसके बावजूद करीब चार हजार करोड़ रुपये किसानों का भुगतान नहीं हुआ और ये लोग किसानों के हितैषी बनने का दावा करते हैं। उन्होंने तंज किया कि मंत्री भुगतान करना चाहते हैं लेकिन इनकी भी सुनवाई नहीं हो रही है।

दरअसल, विधानसभा में मानसून सत्र के तीसरे दिन एक सवाल के जवाब में यूपी के गन्ना विकास एवं चीनी मिल मंत्री चौधरी लक्ष्मी नारायण बताया कि पेराई सत्र 2021-22 में निजी क्षेत्र की कुछ चीनी मिलों पर 3॰964.45 करोड़ रुपये का गन्ना मूल्य भुगतान का बकाया है। सपा मुखिया ने इसी को लेकर सरकार पर हमला बोल दिया। विधानसभा में बुधवार को प्रश्नकाल में समाजवादी पार्टी के सदस्य पंकज मलिक ने चीनी मिलों पर बकाया और भुगतान के बारे में प्रश्न किया था जिसके जवाब में उत्तर प्रदेश में मंत्री चौधरी लक्ष्मी नारायण ने कहा कि प्रदेश की सहकारी चीनी मिलों पर पेराई सत्र 2018-19॰ 2019-20 और 2020-21 का कोई गन्ना मूल्य बकाया नहीं है। उन्होंने कहा कि सहकारी चीनी मिलों पर सिर्फ पेराई सत्र 2021-22 का 440.67 करोड़ रुपये गन्ना मूल्य बकाया है। इसी प्रकार प्रदेश की निजी क्षेत्र की चीनी मिलों पर पेराई सत्र 2018-19 और 2019-20 का कोई गन्ना मूल्य बकाया नहीं है। पेराई सत्र 2020-21 का एकमात्र गड़ौरा (महराजगंज) चीनी मिल पर 11.44 करोड़ रुपये का गन्ना मूल्य बकाया है। उन्होंने बताया कि पेराई सत्र 2021-22 का निजी क्षेत्र की चीनी मिलों पर 3964.45 करोड़ रुपये का बकाया है।

पूरक प्रश्न में पंकज मलिक और राष्ट्रीय लोकदल के प्रसन्न कुमार ने पूछा कि क्या किसानों को ब्याज सहित भुगतान किया जाएगा और 14 दिन के भीतर जो मिल मालिक भुगतान नहीं कर रहे, उनपर क्या कार्रवाई की जाएगी। इस पर गन्ना मंत्री ने कहा कि अखिलेश यादव की सरकार में ब्याज माफ करने का एक आदेश हुआ था। वह मामला आज भी अदालत में लंबित है।

इस पर अखिलेश यादव ने हस्तक्षेप करते हुए कहा कि हमें सरकार से गये साढ़े पांच साल से ज्यादा हो गये हैं। हमने किन परिस्थितियों में इसे माफ किया था, उसे ध्यान में रखे बिना मंत्री बोल रहे हैं। उन्?होंने तंज किया कि मंत्री भुगतान करना चाहते हैं लेकिन इनकी भी सुनवाई नहीं हो रही है।

राजू श्रीवास्तव के निधन पर योगी ने जताया शोक

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को मशहूर हास्य कलाकार राजू श्रीवास्तव के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति और शोकसंतप्त परिजनों को यह कष्ट सहन करने की क्षमता प्रदान करने की कामना की है।

बीते दिनों दिल का दौरा पड़ने के बाद 58 वर्षीय राजू श्रीवास्तव का दिल्ली स्थित एम्स में इलाज चल रहा था। अस्पताल में आज उनका निधन हो गया।

योगी ने अपने शोक संदेश में कहा कि उप्र फिल्म विकास परिषद के अध्यक्ष के रूप में राजू श्रीवास्तव ने सराहनीय सेवा दी थी। वे एक अच्छे कलाकार थे। वे अपनी पीड़ा को दबा कर बिना किसी भेदभाव के सबका मनोरंजन करते रहे।

योगी ने कहा, ''आज वे हमारे बीच में नहीं हैं। मैं प्रदेश वासियों की ओर से दिवंगत आत्मा की शांति की कामना करता हूं। शोक संतप्त परिजनों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं। ईश्वर उन्हें सद्गति प्रदान करें, यही प्रार्थना करता हूं।

उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने राजू श्रीवास्तव के निधन पर दुख जताते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिये प्रार्थना की है। मौर्य ने ट्वीट कर कहा, फिल्म जगत में अपने सहज हास्य से एक अलग पहचान बनाने वाले प्रसिद्ध कॉमेडियन एवं हमारे अतिप्रिय भाजपा नेता श्री राजू श्रीवास्तव जी के असामयिक निधन से मन व्यथित है। उनका निधन कला एवं फिल्म जगत के लिए अपूरणीय क्षति है।

योगी ने राजभरों को एसटी का दर्जा दिलाने का भरोसा दिया

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में विपक्षी दलों के गठबंधन से अलग हुए सुभासपा के अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर ने कहा है कि राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राजभर समुदाय को अनुसूचित जनजाति (एसटी) का दर्जा दिलाने की उनकी मांग से सहमति जताते हुए इसे पूरा कराने का भरोसा दिलाया है।

राजभर ने योगी से मुलाकात के एक दिन बाद आज बुधवार को संवाददाता सम्मेलन में कहा कि मुख्यमंत्री के समक्ष उन्होंने राजभर जाति को एसटी का दर्जा दिलाने की मांग रखी। इस पर उन्होंने सहमति जताते हुए कहा कि राज्य सरकार ने इस आशय का प्रस्ताव केन्द्र सरकार के पास भेज दिया है। राजभर ने कहा, मैं कल मुख्यमंत्री योगी से मिला था। उन्होंने विस्तार से मुझसे बात की। मैंने भर और राजभर जाति के मामले में बात करते हुए इन जातियों को एसटी का दर्जा देने की मांग की। मेरी बात पर मुख्यमंत्री योगी सहमत हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री योगी ने इन जातियों के बारे में केंद्र सरकार को प्रस्ताव भेजा है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि राजभर समाज को एसटी का दर्जा दिया जायेगा। गौरतलब है कि मौजूदा व्यवस्था में राजभर समुदाय अन्य पिछड़ा वर्ग में शामिल है।

राजभर ने कहा, हम समाज की लड़ाई लड़ रहे हैं। भर और राजभर जाति के उत्थान के बारे में सपा ने सिर्फ सपना दिखाया था। अखिलेश जब सत्ता में थे, तो केन्द्र सरकार को क्यों नहीं प्रस्ताव भेजे। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी की तारीफ करते हुए कहा कि मोदी और योगी पिछड़ों के कल्याण के लिए काम कर रहे हैं। राजभर ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी ने राजभर जाति के मुद्दों को लेकर समाज कल्याण विभाग को आवश्यक निर्देश दिये हैं।

दहेज न मिलने पर पत्नी को घर से निकाला, वाट्सएप पर दिया तीन तलाक

सरायमीर। उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ में दहेज की मांग पूरी न होने पर शौहर ने अपनी बीबी को वाट्सएप पर तीन तलाक दे दिया। पति-पत्नी के बीच दहेज को लेकर काफी दिनों ने विवाद चल रहा था। तलाक के बाद पीड़िता ने शौहर के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है।

ये मामला आजमगढ़ के सरायमीर थाना क्षेत्र के संजरपुर का है। कबीर अहमद ने अपनी बेटी हेना बानो का निकाह महुआ कलां के रहने वाले शाह आलम के साथ साल 2017 में की थी।

पीड़िता ने बताया कि निकाह के कुछ दिनों बाद हीससुराल के लोग दहेज के लिए प्रताड़ित करने लगे। शौहर आए मारपीट करता था। एक दिन ससुराल के लोगों ने घर से निकाल दिया। जिसके बाद पीड़िता मायके में ही रहने लगी।

पीड़िता ने बताया कि 14 सितंबर को पति ने वाट्सएप एपर तीन तलाक दे दिया। जिसके बाद उसने पति शाह आलम, सास बदरून निशा, जेठ सलीम और ननदोई शमशाद के खिलाफ दहेज को लेकर मामला दर्ज कराया। दीदारगंज थानाध्यक्ष विजय प्रताप सिंह ने बताया कि पीड़िता के बयान दर्ज कर सभी पर कार्रवाई करने की तैयार की जा रही है।

पीड़िता ने पुलिस को दी तहरीर पर ससुराल पर दहेज के लिए मारपीट करने का भी आरोप लगाया है। हेना का आरोप है कि पति शाह आलम काफी दिनों से मायके वालो पर भी दबाव बना रहा था। शाह आलम सऊदी अरब में काम करता था लेकिन कुछ दिन पहले ही गांव आया जिसके बाद परेशान करने लगा था।

विवादों में घिरे बुलंदशहर के जिला आपूर्ति अधिकारी निलंबित

बुलंदशहर। उत्तर प्रदेश में बुलंदशहर के जिला आपूर्ति अधिकारी (डीएसओ) के खिलाफ स्याना सीट से विधायक देवेंद्र सिंह लोधी और राशन विक्रेता कल्याण समिति के लगाये गये आरोप प्रथम दृष्टया सही पाये जाने पर जिला प्रशासन ने उन्हें निलंबित कर दिया है।

बुलंदशहर के जिलाधिकारी चंद्र प्रकाश सिंह ने मंगलवार को बताया कि बुलंदशहर के डीएसओ अभय प्रताप सिंह के खिलाफ शिकायत सही पाये जाने पर उन्हें निलंबित किया गया है। उन्होंने बताया कि डीएसओ ने डेढ़ वर्ष पूर्व अपने पद का कार्यभार संभाला था। तभी से उन पर राशन विक्रेताओं से अवैध वसूली, सस्ते गल्ले के दुकानदारों पर फर्जी मुकदमे लगाने, स्टाफ से अभद्रता करने और महिला स्टाफ से अमर्यादित भाषा का प्रयोग करने के आरोप लगने शुरू हो गए थे। स्याना क्षेत्र के आपूर्ति निरीक्षक से भी उनका पुराना विवाद चल रहा था। गौरतलब है कि आपूर्ति निरीक्षक ने भी स्याना के विधायक देवेंद्र सिंह लोधी से डीएसओ की शिकायत की थी। इससे पूर्व यूपी फूड एंड सिविल सप्लाइज इंसपेक्टर्स व आफिसर्स एसोसिएशन, आपूर्ति स्टाफ, राशन विक्रेता कल्याण समिति ने शासन से उक्त आरोप लगाते हुए शिकायत दर्ज कराई थी। इस पर शासन ने खाद्य एवं रसद विभाग के विशेष सचिव मार्कंडेय शाही को डीएसओ के खिलाफ लगे आरोपों की जांच की जिम्मेदारी सौंपी थी। जांच में डीएसओ के खिलाफ की गयी शिकायतें प्रथम दृष्टया सही पायी गयीं। इस आधार पर खाद्य एवं रसद आयुक्त ने जांच रिपोर्ट का संज्ञान लेकर डीएसओ को निलंबित कर दिया है। इसके साथ ही उनके खिलाफ लगे आरोपों की विस्तृत जांच का जिम्मा अब सहारनपुर के संभागीय खाद्य नियंत्रक को सौंपी गई है।

सुलतानपुर के भाजपा नेता 6 महीने के लिए जिला बदर, दर्ज हैं कई मुकदमे

सुलतानपुर। सुल्तानपुर में भाजपा किसान मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष अवधेश पांडेय को जिला बदर करने का आदेश दिया गया है। अवधेश के विरुद्ध स्थानीय पुलिस की रिपोर्ट पर अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व ने जिला बदर की कार्रवाई की है। अवधेश के विरुद्ध गोसाईंगंज थाने में हत्या के प्रयास, मारपीट, बलवा और गुंडा एक्ट समेत आठ मामले दर्ज हैं. गोसाईंगंज क्षेत्र के पांडेयपुर सुरौली गांव निवासी अवधेश पांडे का क्षेत्र में डर है। उसके खिलाफ पूर्व में गुंडा एक्ट की कार्रवाई भी पुलिस द्वारा की गई है। लेकिन वो अपनी हरकत से बाज नहीं आया। उसने भाजपा में शामिल होकर क्षेत्र में हनक बनाना शुरू किया था। विधानसभा चुनाव के दौरान पार्टी विरोधी गतिविधियों में लिप्त होने के कारण उसे पार्टी से निकाल दिया गया। लेकिन चुनाव बाद वो स विधायक का करीबी बनकर भाजपा किसान मोर्चा में इंट्री कर गया।

प्रो. रामयत्न शुक्ल के निधन पर योगी और भूपेन्द्र ने शोक व्यक्त किया

एजेंसी

लखनऊ। विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष प्रो. रामयत्न शुक्ल के निधन पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह एवं प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

प्रो. शुक्ल का मंगलवार को देर रात निधन हो गया था। मुख्यमंत्री कार्यालय की ओर से जारी शोक संदेश में योगी ने कहा कि पद्मश्री से सम्मानित प्रो. रामयत्न शुक्ल संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान थे। संस्कृत भाषा तथा पारम्परिक शास्त्रों के संरक्षण व संवर्धन में सम्पूर्ण जीवन लगाने वाले प्रो. शुक्ल सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के व्याकरण विभाग के अध्यक्ष तथा संकाय प्रमुख रहे। उन्हें संस्कृत वांग्मय के अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। प्रो. रामयत्न शुक्ल के निधन से संस्कृत भाषा और साहित्य को अपूरणीय क्षति हुई है।

योगी ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति की प्रार्थना करते हुए प्रो. शुक्ल के शोक संतप्त परिजनों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की है।

उन्होंने ट्वीट कर कहा, संस्कृत के प्रकांड विद्वान, काशी विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष पद्म श्री प्रो. रामयत्न शुक्ल जी का निधन शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक जगत की अपूरणीय क्षति है। प्रभु श्री राम दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान व शोकाकुल परिजनों को यह दु:ख सहन करने की शक्ति दें। ?शांति।

कानपुर में गोली मारकर युवक का मर्डर

कानपुर। कानपुर में सरायमीता के पास युवक का शव लहूलुहान हालत में पड़ा मिला। परिजनों ने हत्या के बाद शव फेंके जाने का आरोप लगाते हुए पनकी थाने में तहरीर दी है। जबकि पुलिस का कहना है कि सड़क हादसे में मौत की आशंका है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। पनकी के सरायमीता निवासी नूर मोहम्मद का बेटा मोहम्मद आजम (35) सरायमीता की एक कंपनी में प्राइवेट नौकरी करता था। परिवार में पत्नी परवीन व 6 साल की बेटी आयु है। मंगलवार देर रात सरायमीता हाईवे किनारे मोहम्मद आजम लहूलुहान हालत में अचेत पड़ा मिला। राहगीरों ने मामले की जानकारी पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस घायल पड़े मोहम्मद आजम को हैलट में भर्ती कराया।

आगरा : भाजपा विधायक छोटेलाल वर्मा और पुत्र के खिलाफ मुकदमा दर्ज

आगरा। उत्तर प्रदेश में आगरा जिले के फतेहाबाद विधान सभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विधायक छोटे लाल वर्मा और उनके बेटे लक्ष्मीकांत वर्मा के खिलाफ पुलिस ने मंगलवार को एक महिला की शिकायत पर शारीरिक शोषण का मुकदमा दर्ज किया है।

लक्ष्मीकांत की दूसरी पत्नी होने का दावा करने वाली महिला ने वर्मा परिवार द्वारा उसका शोषण करने की शिकायत करत हुए यह मुकदमा दर्ज कराया है। विगत 12 सितंबर को क्षेत्राधिकारी पुलिस (सदर) के कार्यालय पहुंची पीड़िता ने शिकायत में कहा कि विधायक पुत्र ने उन्हें अपने प्रेम जाल में फंसाया। इस दौरान कई बार उसका शारीरिक शोषण किया गया। शिकायत में उसने विधायक और उनके बेटे, दोनों को नामजद किया है।

इस मामले से पल्ला झाड़ते हुए विधायक वर्मा ने कहा कि जबसे उनके बेटे ने दूसरी शादी की है, तभी से बेटे के साथ उनका कोई संपर्क नहीं है। उन्होंने कहा कि उनकी उक्त महिला से कभी भी कोई बात नहीं हुयी है। ऐसे में उसके आरोप निराधार हैं।

महिला ने शिकायत में कहा कि विधायक के बेटे पर जब उसने शादी का दबाव बनाया तब उसने 2009 में मंदिर में ले जाकर मांग भर कर कहा कि शादी हो गई। इसके बाद विधायक पुत्र उसे अपने घर ले जाने के बजाय किसी दूसरी जगह ले गया, जहां उसे पत्नी की तरह रखने लगा। महिला ने लक्ष्मीकांत से उसके दो बच्चे पैदा होने का भी दावा किया है। महिला ने कहा कि लक्ष्मीकांत ने उससे अपनी पहली शादी की बात छुपायी थी। पीड़िता ने कहा कि शादी के कुछ साल बाद उसे पता चला कि लक्ष्मीकांत पहले ही शादीशुदा है और पहली पत्नी को वह अपने परिवार के साथ रखता है। उसका आरोप है कि पीड़ित महिला ने जब अपने हक की बात कही तो उसके साथ मारपीट की गई।

पुलिस ने महिला की शिकायत पर विधायक छोटे लाल वर्मा और उनके पुत्र लक्ष्मीकांत वर्मा के खिलाफ आईपीसी की सुसंगत धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है।

लखनऊ में झमाझम बारिश : आगरा-कानपुर समेत 32 शहरों में रुक-रुक कर बरसेगा पानी

एजेंसी

लखनऊ। यूपी के 32 जिलों में आज यानी बुधवार को भारी बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। सुबह से लखनऊ, आगरा समेत कई शहरों में रुक-रुक कर पानी बरस रहा है। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक, यूपी के अधिकांश शहरों में बारिश का यह सिलसिला अगले चार दिन यानी 25 सितंबर तक जारी रहेगा। 24 घंटे में लखनऊ, आगरा और अलीगढ़ में औसतन 3.7 मिमी बरसात हुई। मौसम विभाग ने पहले ही दावा किया था कि 21 सितंबर को एक बार फिर से मौसम पूरी तरीके से करवट लेगा।

ये वीडियो लखनऊ में दोपहर 2 बजे की है। दिन में अचानक अंधेरा छाने से लोगों को अपनी गाड़ियों की हेडलाइट जलानी पड़ी। हालांकि, ऐसा मौसम पूरा दिन बने रहने का अनुमान है। (आप वीडियो आइकॉन पर क्लिक करके लखनऊ में मौसम का हाल देख सकते हैं।)

इन 32 जिलों में बारिश का अलर्ट

मौसम विभाग ने प्रदेश के 32 जिलों में बारिश का अलर्ट जारी किया है। इन जिलों में लखीमपुर खीरी, सीतापुर, बिजनौर, लखनऊ, आगरा, बदायूं, रामपुर, फर्रुखाबाद, शाहजहांपुर, हरदोई, पीलीभीत, बहराइच, बाराबंकी, गोंडा, सिद्धार्थनगर, बस्ती, संतकबीरनगर, कुशीनगर, महाराजगंज, कानपुर, उन्नाव, रायबरेली, अमेठी, प्रतापगढ़, जौनपुर, सुल्तानपुर, अयोध्या, अबंडेकरनगर, आजमगढ़, गोरखपुर, मऊ, चंदौली, वाराणसी हैं। इन जिलों में गरज-चमक के साथ पानी बरस सकता है।

लखनऊ में रुक-रुक कर हो रही बारिश

लखनऊ में बुधवार को भी बारिश का सिलसिला जारी रहा। यहां मंगलवार शाम से लगातार बारिश हो रही है। इससे लोगों को गर्मी और उमस से राहत मिली है। मौसम निदेशक जेपी गुप्ता ने बताया, बारिश का यह दौर अगले 4 दिन तक जारी रह सकता है। वहीं, लगातार बारिश से शहर में कई जगह जलभराव भी देखने को मिला। शहर में आज अधिकतम तापमान 31 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम 26 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान है।

कानपुर में भी रात से हो रही बरसात

कानपुर में रात से रुक-रुक कर बारिश जारी है। बारिश की वजह से तापमान में काफी कमी आ गई है। अधिकतम 26 डिग्री और न्यूनतम 23 डिग्री हो गया है। आज पूरे दिन और अगले 4 दिन मौसम ऐसा ही रहने का अनुमान है।

मेरठ में आज भी बरस सकता है पानी

मेरठ में मंगलवार को हुई बारिश से मौसम बदल गया। बुधवार सुबह भी बारिश जैसा मौसम है। मौसम विभाग ने अगले 3 दिन के लिए मेरठ और आस-पास के जिलों में मध्यम दर्जे की बारिश की संभावना जताई है।

सड़क पर बर्थडे पार्टी करने वाले पांच गिरफ्तार

एजेंसी

गाजियाबाद। देश के पहले सिंगल पिलर सबसे लंबे एलिवेटेड रोड पर एक बार फिर बर्थडे पार्टी मनाने की वीडियो सामने आई है। युवाओं के समूह ने कार सड़क पर खड़ी करके केक काटा और हुड़दंग मचाया। पुलिस ने वीडियो के आधार पर कार को ट्रेस करते हुए पांच लड़कों को गिरफ्तार कर लिया है।

साहिबाबाद पुलिस ने बताया कि पकड़े गए लड़के फईम, सददाम, अजीम, अमन और सोनू हैं। सभी की उम्र 19 से 23 साल के बीच है। ये सभी विजयनगर थाना क्षेत्र के रहने वाले हैं। पुलिस ने इन सभी के खिलाफ क्रिमिनल एक्ट में केस दर्ज किया है।

सब इंस्पेक्टर संदीप कुमार के अनुसार, कुछ लड़के 20 सितंबर की रात एलिवेटेड रोड पर वैगनआर कार के ऊपर खड़े होकर जन्मदिन का केक काट रहे थे और आने-जाने वाले लोगों को रोककर केक बांट रहे थे।

पुलिस के अनुसार, इन लड़कों ने कुछ राहगीरों और यात्रियों को रोककर गाली-गलौज और मारपीट की। इसके साथ ही कुछ गाड़ियों में तोड़फोड़ करते हुए एलिवेटेड रोड पर रखे गमले भी तोड़ दिए।

सब इंस्पेक्टर संदीप कुमार ने बताया, इस हुड़दंग से एलिवेटेड रोड पर लंबा जाम लग गया। गाड़ियों के अंदर मौजूद बच्चे जाम की वजह से चींख रहे थे। ऐसे में शांति व्यवस्था भंग हुई। जबकि गाजियाबाद में धारा-144 लागू है। पुलिस ने बताया कि इस मामले में पांच लड़कों को बुधवार को अर्थला पीर के पास से गिरफ्तार किया गया है।

एलिवेटेड रोड पर नाइट में हुड़दंग की लगातार वीडियो वायरल होने पर साहिबाबाद पुलिस ने मंगलवार देर रात तक इस रोड पर चेकिंग अभियान चलाया। इस दौरान 13 और लड़कों को गिरफ्तार किया गया।

शार्ट न्यूज

कोम्विया ने लांच किया ब्लूमार्बल कॉपैक्ट बीएसएस

नयी दिल्ली। मोबिलिटी सॉल्यूशन प्रदाता कोम्विया ने वृहद, क्लाउड आधारित और 5 जी रेड्डी सॉल्यूशन ब्लूमार्बल कॉपैक्ट बीएसएस लॉंच करने की घोषणा की है। कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि यह सॉल्यूशन माइक्रोसाफ्ट अजुरे, डायनमिक 365 और टीएम फोरम ओपन डिजिटल आर्किटेक्चर के लिए है। ब्लूमार्बल कॉपैक्ट बीएसएस सीएसपी को तेजी और दक्षता से काम करने में सक्षम बनाने वाला है। इसके माध्यम से सीएसपी आधुनिक, ओपन और सुरक्षित सॉफ्टवेयर आधारित आर्किटेक्चर के माध्यम से अपनी सेवायें दे पायेंगे और अपना राजस्व बढ़ा पायेंगे।

रुपया 22 पैसे लुढ़का

मुंबई। अमेरिकी फेड रिजर्व के ब्याज दर में 0.75 प्रतिशत बढ़ोतरी की प्रबल संभावना के मद्देनजर दुनिया की प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले डॉलर में आई तेजी के दबाव में आज अंतरबैंकिंग मुद्रा बाजार में रुपया 22 पैसे लुढ़ककर 79.96 रुपये प्रति डॉलर रह गया। वहीं, पिछले कारोबारी दिवस रुपया सात पैसे मजबूत होकर 79.74 रुपये प्रति डॉलर पर रहा था। कारोबार की शुरुआत में रुपया सात पैसे गिरकर 79.81 रुपये प्रति डॉलर पर खुला और सत्र के दौरान लिवाली के दबाव में 80.01 रुपये प्रति डॉलर के निचले स्तर तक टूट गया। हालांकि बिकवाली होने से यह 79.79 रुपये प्रति डॉलर के ऊंचे स्तर पर भी रहा। अंत में पिछले दिवस के 79.74 रुपये प्रति डॉलर के मुकाबले 22 पैसे की बड़ी गिरावट लेकर 79.96 रुपये प्रति डॉलर पर आ गया।

काइनेटिक ग्रीन की ईवी दोपहिया ऋण के लिए टाटा कैपिटल के साथ साझेदारी

नयी दिल्ली। इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) बनाने वाली कंपनी काइनेटिक ग्रीन एनर्जी ऐंड पावर सॉल्यूशंस लिमिटेड ने टाटा समूह की प्रमुख वित्तीय सेवा कंपनी टाटा कैपिटल के साथ साझेदारी की है। कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि इस साझेदारी के माध्यम से, पूरे भारत में काइनेटिक ग्रीन के इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर्स खरीदने के इच्छुक ग्राहकों को देशभर में स्थित काइनेटिक ग्रीन डीलरशिप में डिजिटल रूप से सक्षम लोन प्राप्त होंगे। इसके माध्यम से, ग्राहकों को दोपहिया के मूल्य के 85 प्रतिशत तक लोन राशि 36 महीने तक की चुकौती अवधि और ग्राहक पात्रता के अनुसार कम ईएमआई योजना की सुविधा मिलेगी। काइनेटिक ग्रीन के अभिनव, अत्याधुनिक उत्पादन के साथ टाटा कैपिटल की विविध वित्तीय ज़रूरतें पूरी करने की क्षमता से भारत के मोबिलिटी सेक्टर को विद्युतिकृत करने के लिए काइनेटिक ग्रीन के अग्रणी कार्यों को जारी रखने में मदद मिली है।

खाद्य तेलों में मिलाजुला रुख

नयी दिल्ली। वैश्विक बाजार की तेजी के बावजूद स्थानीय स्तर पर उठाव सुस्त रहने से आज दिल्ली थोक जिंस बाजार में खाद्य तेलों में मिलाजुला रुख रहा वहीं अन्य जिंसों के भाव पड़े रहे। तेल-तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का अक्टूबर वायदा 140 रिंगिट की तेजी लेकर 3816 रिंगिट प्रति टन पर पहुंच गया। इसी तरह इस दौरान अमेरिकी सोया तेल का अक्टूबर वायदा 0.67 सेंट चढ़कर 66.58 सेंट प्रति पौंड हो गया। इस दौरान सरसों तेल 147 रुपये प्रति क्विंटल महंगा हो गया जबकि मूंगफली तेल 146 रुपये और वनस्पति तेल 146 रुपये प्रति क्विंटल उतर गया। वहीं, सूरजमुखी तेल, सोया रिफाइंड और पाम ऑयल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ और वे पुराने स्तर पर टिके रहे। गुड़-चीनी : मीठे के बाजार में टिकाव रहा। इस दौरान चीनी और गुड़ के भाव स्थिर रहे। दाल-दलहन : दाल-दलहन के बाजार में स्थिरता रही। इस दौरान चना, चना दाल, मसूर दाल, मूंग दाल, उड़द दाल और अरहर दाल के भाव पड़े रहे। अनाज : अनाज मंडी में भी टिकाव रहा। इस दौरान गेहूं और चावल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ।

राधाकिशन दमानी की दौलत 280 प्रतिशत बढ़ी

नई दिल्ली। दिग्गज इनवेस्टर राधाकिशन दमानी अब भारत के पांचवें सबसे अमीर शख्स बन गए हैं। यह बात बुधवार को रिलीज हुई IIFL वेल्थ हुरुन इंडिया रिच लिस्ट 2022 में सामने आई है। रिटेल चेन DMart चलाने वाली कंपनी एवेन्यू सुपरमार्ट्स पर भी राधाकिशन दमानी का मालिकाना हक है। 1.75 लाख करोड़ रुपये की दौलत के साथ 67 साल के दमानी 2 पायदान ऊपर चढ़कर रिच लिस्ट में पांचवें नंबर पर पहुंच गए हैं। हुरुन इंडिया रिच लिस्ट 2022 में गौतम अडानी और मुकेश अंबानी का दबदबा है। पिछले पांच साल में दिग्गज इनवेस्टर राधाकिशन दमानी की वेल्थ 280 पर्सेंट या 1,28,800 करोड़ रुपये बढ़ी है। इकनॉमिक टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक, रिच लिस्ट का डेटा बताता है कि राधाकिशन दमानी ने हर दिन 57 करोड़ रुपये कमाए और पिछले एक साल में उनकी दौलत 13 पर्सेंट बढ़ी है। दमानी के कंट्रोल वाली एवेन्यू सुपरमार्ट्स के देश भर में 200 से ज्यादा DMart शॉप्स हैं। एवेन्यू सुपरमार्ट्स के शेयर 21 सितंबर 2022 को बीएसई में 4307.20 रुपये पर बंद हुए हैं।

सरकारी बैंक के शेयर खरीदने की लगी होड़

नई दिल्ली। बीते मंगलवार को भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने बताया कि सरकारी क्षेत्र के सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया को त्वरित सुधारात्मक कार्रवाई (पीसीए) प्रक्रिया की निगरानी सूची से बाहर कर दिया गया है। इस खबर के बाद बुधवार को सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के शेयर खरीदने के लिए निवेशकों में होड़ मच गई। इस वजह से इंट्रा-डे के दौरान शेयर 15 फीसदी तक चढ़ गया और निवेशकों ने खूब पैसे बनाए। कितना है शेयर भाव- रॉकेट की तरह तेजी और फिर मुनाफावसूली के बाद बुधवार को शेयर का भाव 21.70 रुपये पर ठहरा। एक दिन पहले के मुकाबले शेयर में 6.63त्न की तेजी है। हालांकि, कारोबार के दौरान शेयर का भाव 23 रुपये से ज्यादा हो गया था। आपको बता दें कि पिछले साल 30 सितंबर को शेयर का भाव 25 रुपये के पार बंद हुआ, जो 52 वीक का हाई लेवल है। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया को आरबीआई ने जून, 2017 में पीसीए के दायरे में रखने का फैसला किया था। शुद्ध गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (एनपीए) के ऊंचे स्तर और परिसंपत्तियों पर मिलने वाले कम रिटर्न की वजह से बैंक को पीसीए निगरानी सूची में रखा गया था। पीसीए दायरे में रखे जाने के बाद वह बैंक खुलकर कर्ज देने से कई तरह से रोक दिया जाता है और उसे कई तरह की बंदिशों के भीतर काम करना पड़ता है।

1900 रुपये तक जा सकते हैं बाबा रामदेव की कंपनी के शेयर

नई दिल्ली। बाबा रामदेव की कंपनी पतंजलि फूड्स के शेयरों में लगातार तेजी देखने को मिल रही है। कंपनी के शेयर बुधवार को अपने पुराने सभी रिकॉर्ड्स को तोड़ते हुए नई ऊचाईयों पर पहुंच गए। आज कंपनी के शेयर की कीमत बीएसई में शुरुआती कारोबार में 1471.50 रुपये के लेवल पर पहुंच गया। इस स्टॉक पर नजर रखने वाले एक्सपर्ट की माने तो कंपनी के शेयर के 1900 रुपये के लेवल तक जा सकते हैं। पतंजलि फूड्स के शेयरों में लगातार दूसरे दिन तेजी देखने को मिल रही है। मंगलवार को शेयर बाजार में कंपनी के स्टॉक नई ऊचाईयों पर पहुंच गए थे। लेकिन बुधवार को कंपनी ने मंगलवार के रिकॉर्ड को भी तोड़ दिया है। स्टॉक मार्केट के एक्सपर्ट के अनुसार पतंजलि समूह ने 5 साल का क्लियर प्लान और अगले 5 साल में 4 नए आईपीओ के घोषणा ने कंपनी के शेयरों को बुलिश बना दिया है। एक्सपर्ट के अनुसार कंपनी के शेयर की शॉर्ट टर्म में 1900 रुपये के लेवल तक जा सकता है। यानी निवेशकों को बड़ा फायदा हो सकता है। एक्सपर्ट 1200 रुपये स्टॉप लॉस के साथ पतंजलि फूड्स को होल्ड करने की सलाह दे रहे हैं।

पांच वर्ष में 15.4 गुना बढ़ी गौतम अडाणी की संपत्ति

एजेंसी

नयी दिल्ली। अडाणी समूह के प्रमुख गौतम अडानी 10,94,400 करोड़ रुपये की कुल संपत्ति के साथ देश के सबसे बड़े घनकुबेर बन गये हैं। पांच वर्षों में उनकी संपत्ति 15/4 गुना बढ़ी है।

अडाणी ने इस मामले में रिलायंस इंडस्ट्रीज के प्रमुख मुकेश अंबानी को पीछे छोड़ दिया है। आज जारी आईआईएफएल वेल्थ-हुरुन इंडिया रिच लिस्ट 2022 में देश के कुल 1103 अरबपति शामिल है जिनकी संपत्ति एक हजार करोड़ रुपये से अधिक है। इसमें 96 व्यक्ति पहली बार शामिल हुये है। बुधवार को जारी रिच लिस्ट 2022 के अनुसार श्री अडाणी ने प्रतिदिन 1,600 करोड़ रुपये जोड़कर रिलायंस समूह के मुखिया मुकेश अंबानी को पछाड़ दिया।

अंबानी की कुल संपत्ति 7,94,700 करोड़ रुपये के साथ सूची में दूसरे स्थान पर हैं। श्री अंबानी वर्ष 2021 में श्री अडाणी की कुल संपत्ति से दो लाख करोड़ रुपये आगे थे लेकिन वर्ष 2022 में श्री अडाणी उनसे तीन लाख करोड़ रुपये निकल गये।

रिपोर्ट के अनुसार साइरस पूनावाला अपनी संपत्ति में 41,700 करोड़ रुपये जोड़ते हुए 2,05,400 करोड़ रुपये की कुल संपत्ति के साथ तीसरे स्थान पर हैं। सॉफ्टवेयर क्षेत्र में काम करने वाले शिव नडार 1,85,800 रुपये की कुल संपत्ति के साथ सूची में चौथे स्थान पर रहे। इसके साथ ही वह दिल्ली के सबसे अमीर व्यक्ति हैं। राधाकृष्ण दमानी को सूची में पांचवा स्थान मिला है उनकी कुल संपत्ति 1,75,100 करोड़ रुपये जबकि विनोद शांतिलाल अडाणी की कुल संपत्ति 1,69,000 करोड़ रुपये है जिससे वह छठे स्थान पर हैं।

हिंदुजा समूह के एसपी हिंदुजा 1,65,000 करोड़ रुपये की संपत्ति के साथ सातवें स्थान पर है। इसी तरह 1,51,800 करोड़ रुपये की कुल संपत्ति के साथ एलएन मित्तल आठवें स्थान पर हैं। रिपोर्ट के अनुसार सन फार्मा के दिलीप संघवी 1,33,500 की कुल संपत्ति के साथ नौवें स्थान पर जगह बनाने में कामयाब रहे जबकि कोटक महिंद्रा बैंक के उदय कोटक 1,19,400 करोड़ रुपये के साथ 10वां स्थान बनाने में कामयाब रहे। ये दोनों नाम पहली बार टॉप 10 में शामिल हुए हैं। इस सूची में 12 लोग ऐसे हैं जिनकी संपत्ति एक लाख करोड़ रुपये से अधिक है।

इस सूची में 185 अरबपति हैं जिनकी संपत्ति 13.90 लाख करोड़ रुपये है। इस सूची भारत के सबसे अमीर व्यक्तियों का संकलन है, जिनके पास 1,000 करोड़ रुपये या उससे अधिक की संपत्ति है।

आईआईएफएल वेल्थ के संयुक्त सीईओ अनिरुद्ध तपारिया ने कहा, देश में दिल्ली सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और रिच लिस्ट 2022 में 185 अरबपति राजधानी से होना कोई हैरान कर देने वाली बात नहीं है। महिला धन सृजनकर्ताओं का योगदान लगातार बढ़ रहा है और विशेष रूप से दिल्ली में 12 महिला उद्यमी हैं जिन्होंने इस बार अमीरों की सूची में अपना स्थान हासिल किया है।

हुरुन इंडिया के प्रबंधन निदेशक और मुख्य शोधकर्ता अनस रहमान जुनैद ने कहा कि आईआईएफएल वेल्थ हुरुन दिल्ली रिच लिस्ट में प्रवेश करने वालों की संख्या दस साल में 25 से बढ़कर 185 हो गई है।

उन्होंने कहा, यूक्रेन युद्ध हो या मुद्रास्फीति दबाव के बावजूद देश के विकास की कहानी सभी बाधाओं के विपरीत जारी है क्योंकि 149 व्यक्तियों ने आईआईएफएल वेल्थ हुरुन इंडिया की 1,103 की अमीर सूची में प्रवेश किया, जिनके पास कुल मिलाकर 100 लाख करोड़ रुपये की संपत्ति है।

वेयरहाउसिंग लेन-देन रिकॉर्ड उच्च स्तर पर: नाइट फ्रैंक

नयी दिल्ली। देश के प्रमुख आठ शहरों में वित्त वर्ष 2021-22 में वेयरहाउसिंग की लीज 5.13 करोड़ वर्ग फुट के साथ रिकॉर्ड स्तर पर रही।

रियल स्टेट क्षेत्र में परामर्श देने वाली एजेंसी नाइट फ्रैंक इंडिया ने बुधवार को जारी इंडिया वेयरहाउसिंग मार्केट रिपोर्ट-2022 में कहा कि लीजिंग लेनदेन ने 62 प्रतिशत वार्षिक आधार पर वृद्धि के साथ कोरोना-पूर्व स्तर को पार करते हुए विस्तार योजनाओं को पुनर्जीवित किया।

रिपोर्ट के अनुसार क्षेत्रफल के हिसाब से सबसे अधिक राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में 91 लाख वर्ग फुट और मुंबई में 86 लाख फुट वेयरहाउसिंग के लिए लेन देन हुआ जबकि पुणे और हैदराबाद में वार्षिक आधार पर लीज में क्रमश: 166 और 128 प्रतिशत की वृद्धि हुयी।

वेयरहाउसिंग क्षेत्र में बैंगलोर में लेन-देन 38 प्रतिशत बढ़कर 59 लाख वर्ग फुट, अहमदाबाद में 81 प्रतिशत बढ़कर 53 लाख वर्ग फुट, चेन्नई में 44 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 51 लाख वर्ग फुट और कोलकाता में 41 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ 43 लाख वर्ग फुट रहा।

नाइट फ्रैंक की रिपोर्ट के अनुसार लगभग सभी क्षेत्रों ने वित्त वर्ष 2022 के दौरान वेयरहाउसिंग की मांग में अभूतपूर्व वृद्धि का प्रदर्शन किया है। रिपोर्ट में भारत में 18 द्वितीयक बाजारों में वेयरहाउसिंग गतिविधियों का आकलन किया है। रिपोर्ट के अनुसार 3पीएल क्षेत्र में सबसे अधिक1.49 करोड़ वर्ग फुट का लेन-देन हुआ जो इससे पिछले वित्त वर्ष की तुलना में 50 प्रतिशत अधिक है। जबकि अन्य उत्पादन क्षेत्र में 1.4 करोड़ वर्ग फुट, ई-कॉमर्स में 1.16 करोड़ वर्ग फुट, खुदरा में 56 लाख वर्ग फुट, अन्यों में 2.5 लाख वर्ग फुट, एफएमसीडी में 15 लाख वर्ग फुट और एफएमसीजी में 12 लाख वर्ग फुट वेयरहाउसिंग लीज का लेन-देन हुआ।

नाइट फ्रैंक इंडिया के अध्यक्ष और प्रबंधन निदेशक शिशिर बैजल ने कहा, भारत में संगठित वेयरहाउसिंग क्षेत्र की उच्च विकास दर इसकी बढ़ती सकल घरेलू उत्पाद और उपभोक्तावाद का परिणाम है। देश में वेयरहाउस लीजिंग पूर्व-महामारी के स्तर को पार करने के साथ, यह क्षेत्र दुनिया भर में अपने अधिक परिपक्व साथियों से मेल खाने के लिए एक बड़ी छलांग लगाने के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि निवेश के संदर्भ में वेयरहाउसिंग क्षेत्र ने वर्ष 2022 की पहली तिमाही में 1.2 करोड़ डॉलर की निजी इक्विटी प्राप्त की है जबकि इससे पिछले पूरे वर्ष 2021 में 1.3 करोड़ डॉलर की निजी इक्विटी प्राप्त की थी। यह पर्याप्त रूप से वैश्विक और भारतीय निवेशकों के इस क्षेत्र के भविष्य पर विश्वास का प्रदर्शन करता है। बैजल ने कहा कि बुनियादी ढांचे के विकास की दिशा में सरकार का जोर और भारत की नयी लॉजिस्टिक्स नीति से उछाल में मदद मिलेगी। द्वितीयक बाजारों में दर्ज की गई मजबूत मांग के साथ देश के शीर्ष आठ बाजारों से भी आगे भंडारण की गति बढ़ रही है और मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्कों के विकास से देश के भौगोलिक विस्तार को कवर करते हुए और अधिक वेयरहाउसिंग क्षेत्र तैयार होंगे।

अमेजन फ़ैशन ने मल्टी-डिज़ाइनर ब्रांड रिवर सीज़न 3 किया लांच

नयी दिल्ली। अमेजन फैशन ने डीबीएस लाइफस्टाइल एलएलपी के साथ मिलकर भारत में एक प्रीमियम मल्टी-डिज़ाइनर लक्ज़री ब्रांड रिवर सीज़न 3 पेश किया है।

कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि रिवर के पहले दो सीज़न की सफलता के बाद, इस ऑटम विंटर/फेस्टिव सीज़न 3 कलेक्शन में ट्रैवल और फेस्टिव वियर का एक अनोखा कलेक्शन देखने को मिलेगा। इस कलेक्शन को सेलिब्रिटी डिजाइनर नरेंद्र कुमार के सहयोग से तैयार किया जाएगा। पहली बार अक्टूबर 2004 में लॉन्च किया गया लेबल राजदीप राणावत, आज के समय में ग्लैमरस और आकर्षक महिलाओं का पर्याय बन गया है। रिवर सीजन 3 महिलाओं का एक खास कलेक्शन है जो ग्राहकों को अमेजन फैशन पर अपने पसंदीदा डिजाइनर लेबल की शॉपिंग करने में मदद करेगा।

यह खासतौर पर तैयार किया गया कलेक्शन महिलाओं के रोज़मर्रा के परिधानों से लेकर त्योहारों के परिधानों तक की जरूरत को पूरा करता है। इस कलेक्शन में रंगों और प्रिंटों का एक नया मिश्रण पेश किया गया हैं जो आपके त्योहार और ट्रैवल के लुक को और ग्लैमरस और खूबसूरत बना देगा। फेस्टिव कलेक्शन में ड्रेस, जंपसूट, टॉप और ट्राउजर के साथ दो नई कैटेगरीज़ कुर्ता/कुर्ती और कुर्ता सेट शामिल हैं।

एडीबी ने घटाया भारत का विकास अनुमान

नयी दिल्ली। एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने कमजोर वैश्विक मांग और महंगाई के बढ़ते दबाव को कम करने के लिए मौद्रिक नीति लायी जा रही कठोरता के कारण चालू वित्त वर्ष और अगले वित्त वर्ष के भारत के विकास अनुमान में क्रमश- 0.5 प्रतिशत और 0.8 प्रतिशत की कमी कर दी है। एडीबी ने आज भारत के लिए जारी अपनी आर्थिक परिदृश्य रिपोर्ट में कहा है कि उसने चालू वित्त वर्ष में भारत के विकास अनुमान को अप्रैल के 7.5 प्रतिशत से कम कर 7.0 प्रतिशत तथा अगले वित्त वर्ष लिए अनुमान को 8. 0 प्रतिशत से कम कर 7.2 प्रतिशत कर दिया गया है। एडीबी के भारत में कंट्री निदेशक टी कोनिशी ने कहा कि भारत का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) महामारी से पहले के स्तर के करीब पहुंच रहा है लेकिन फिलहाल वैश्विक नरमी और ऊंची महंगाई के कारण यह प्रभावित हो सकता है। उन्होंने कहा कि सरकार के कारोबारी नियामकीय माहौल में सुधार जारी रखने की उम्मीद है क्योंकि इंफ्रास्ट्रक्चर से निवेश में तेजी आयेगी और उससे रोजगार भी सृजित होंगे। रिपोर्ट में कहा गया है कि अगले दो वर्षों तक महंगाई दरें ऊंची रहेंगी। चालू वित्त वर्ष में यह 6.7 प्रतिशत पर और अगले वित्त वर्ष में कुछ नरम पड़कर 5.8 प्रतिशत पर आ सकती है। ऊंची मुद्रास्फीति के कारण रिजर्व बैंक नीतिगत दरों में बढोतरी कर सकता है जिससे पूंजी लागत बढ़ सकती है। मुद्रास्फीतिक दबाव से निजी उपभोग भी प्रभावित हो सकता है। हालांकि उर्वरक और गैस पर सब्सिडी, मुफ्त खाद्यान्न वितरण और उत्पाद शुल्क में कटौती से उपभोक्ताओं को कुछ राहत मिल सकती है। इसमें कहा गया है कि कोविड 19 प्रतिबंधों को हटाये जाने से सेवा क्षेत्र में तेजी बनी रह सकती है। हालांकि विनिर्माण क्षेत्र की गति लागत बढ़ने के कारण कुछ सुस्त हो सकती है। निर्यात पर भी असर पड़ सकता है लेकिन आयात के मूल्य में बढोतरी हो सकती है। एडीबी ने कहा कि निजी के स्थान पर सरकारी निवेश से इसमें तेजी आ सकती है। सरकार ने जीडीपी के 2.9 प्रतिशत पूंजीगत व्यय का प्रावधान किया है।

एडीबी के विकास अनुमान घटाने से शेयर बाजार की तेजी थमी

मुंबई। एशियाई विकास बैंक (एडीबी) के चालू वित्त वर्ष और अगले वित्त वर्ष में भारत का विकास अनुमान घटाने से हतोत्साहित निवेशकों की चौतरफा बिकवाली से शेयर बाजार की पिछले दो दिन से जारी तेजी आज थम गई और सेंसेक्स एवं निफ्टी करीब आधा प्रतिशत गिर गए।

एडीबी ने कमजोर वैश्विक मांग और महंगाई के बढ़ते दबाव को कम करने के लिए मौद्रिक नीति में लायी जा रही सख्ती के कारण चालू वित्त वर्ष और अगले वित्त वर्ष के भारत के विकास अनुमान को क्रमश- 0.5 प्रतिशत और 0.8 प्रतिशत कम कर दिया है। इससे हतोत्साहित निवेशकों ने बीएसई के 18 समूह में बिकवाली की, जिससे बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 262.96 अंक यानी 0.44 प्रतिशत लुढ़ककर 59456.78 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 97.90 अंक अर्थात 0.55 प्रतिशत उतरकर 17718.35 अंक पर आ गया।

इसी तरह मझौली और छोटी कंपनियों में भी बिकवाली के दबाव में बीएसई का मिडकैप 0.63 प्रतिशत गिरकर 25,777.85 अंक और स्मॉलकैप 0.69 प्रतिशत टूटकर 29,238.99 अंक पर रहा। इस दौरान बीएसई में कुल 3587 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 2176 में गिरावट जबकि 1282 में तेजी रही वहीं 129 में कोई बदलाव नहीं हुआ। एनएसई में 36 कंपनियां लाल जबकि 13 हरे निशान पर रही वहीं एक के भाव स्थिर रहे। बीएसई के गिरावट पर रहने वाले प्रमुख समूहों में यूटिलिटीज 2.31, पावर 2.19, कमोडिटीज 2.07, हेल्थकेयर 0.92, इंडस्ट्रियल्स 0.99, दूरसंचार 0.95, पूंजीगत वस्तुएं 1.36, धातु 0.91, तेल एवं गैस 1.33, रियल्टी 1.19, आईटी 0.74 और टेक 0.93 प्रतिशत शामिल है। वैश्विक बाजार में मिलाजुला रुख रहा। इस दौरान ब्रिटेन का एफटीएसई 0.65 और जर्मनी का डैक्स 0.03 प्रतिशत चढ़ गया जबकि जापान का निक्केई 1.36, हांगकांग का हैंगसेंग 1.79 और चीन का शंघाई कंपोजिट 0.17 प्रतिशत उतर गया।

शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स 216 अंक टूटकर 59,504.14 अंक पर खुला लेकिन लिवाली होने से थोड़ी देर बाद ही 59,799.04 अंक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। अचानक हुई बिकवाली से दोपहर तक यह 59,275.40 अंक के निचले स्तर तक लुढ़क गया। संभलने की तमाम कोशिशों के बावजूद अंत में यह पिछले दिवस के 59,719.74 अंक के मुकाबले 0.44 प्रतिशत उतरकर 59,456.78 अंक पर आ गया। इसी तरह निफ्टी भी 50 अंक फिसलकर 17,766.35 अंक पर खुला। सत्र के दौरान यह 17,838.70 अंक के उच्चतम जबकि 17,663.60 अंक के निचले स्तर पर रहा। अंत में पिछले सत्र के 17,816.25 अंक की तुलना में 0.55 प्रतिशत टूटकर 17,718.35 अंक पर रहा।इस दौरान सेंसेक्स की नुकसान उठाने वाली प्रमुख कंपनियों में इंडसइंड बैंक 3.19, पावरग्रिड 2.64, अल्ट्रासिमको 2.40, एलटी 1.88, एनटीपीसी 1.83, एचसीएल टेक 1.41, डॉ. रेड्डी 1.36, टीसीएस 1.30, टाटा स्टील 1.28, भारती एयरटेल 1.28, विप्रो 1.02, एचडीएफसी 0.99, इंफोसिस 0.85, एसबीआई 0.75, एक्सिस बैंक 0.71, मारुति 0.26 और आईसीआईसीआई बैंक 0.15 प्रतिशत शामिल है।

वहीं, हिंदुस्तान यूनीलीवर 1.60, आईटीसी 1.59, बजाज फाइनेंस 0.76, टेक महिंद्रा 0.42, रिलायंस 0.29, महिंद्रा एंड महिंद्रा 0.27, नेस्ले इंडिया 0.14 और एचडीएफसी बैंक 0.05 प्रतिशत के लाभ में रही।

एमपावर फाइनेंसिंग और एप्लाईबोर्ड इंक ने की रणनीतिक साझेदारी

एजेंसी

नयी दिल्ली। एमपावर फाइनेंसिंग और एप्लाईबोर्ड इंक (एप्लाईबोर्ड) ने विदेश में उच्च शिक्षा की तैयारी कर रहे छात्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए रणनीतिक साझेदारी की है।

कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि एमपावर फाइनेंसिंग एक मिशन के तहत कार्यरत फिनटेक फर्म है और अंतरराष्ट्रीय छात्रों को छात्रवृत्ति एवं शिक्षा लोन देने के मामले में अग्रणी है। अप्लाईबोर्ड एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है जो दुनिया भर के छात्रों को सबसे श्रेष्ठ उच्च शिक्षा प्राप्त करने में मदद करता है। दोनों कंपनियों के बीच साझेदारी से एप्लाईबोर्ड के माध्यम से अपनी शिक्षा के सफर को आगे बढ़ाने की योजना बना रहे छात्रों को एमपावर के फंडिंग विकल्पों का लाभ लेने का मौका मिलेगा।

एमपावर फाइनेंसिंग के उपाध्यक्ष एवं महाप्रबंधक अश्विनी कुमार ने कहा, विदेशी छात्रों के लिए प्रक्रिया बहुत जटिल होती है और इसमें समय भी बहुत लगता है। विशेष तौर पर जब लोन की बात हो, तो और भी मुश्किलें आती हैं। हमारी आसान सर्विस और लोन की सुविधा अब एप्लाईबोर्ड एवं उनके पार्टनर्स के लिए भी उपलब्ध है। इससे छात्रों का सफर आसान होगा। उन्होंने किसी को-साइनर या कोलैटरल की आवश्यकता नहीं होगी। एप्लाईबोर्ड के साथ मिलकर हम छात्रों एवं रिक्रूटमेंट पार्टनर्स के बीच भरोसे का निर्माण कर रहे हैं।

एप्लाईबोर्ड इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के बिजनेस ऑपरेशन प्रमुख करूण कंदोई ने कहा, विदेश में शिक्षा की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए फाइनेंशियल व्यवस्था सबसे बड़ी चुनौती होती है। हम एमपावर के साथ इस साझेदारी को लेकर उत्साहित हैं। इससे छात्रों को आसान वित्तीय विकल्प चुनने में मदद मिलेगी और वे बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकेंग।

दोनों कंपनियां टेक्नोलॉजी का भरपूर लाभ लेते हुए शिक्षा से जुड़े बैरियर्स को तोड़ रही हैं। एमपावर फाइनेंसिंग कनाडा एवं अमेरिका के 400 से ज्यादा विश्वविद्यालयों में प्रवेश की तैयारी कर रहे 200 से ज्यादा देशों के छात्रों को स्कॉलरशिप एवं नो-कोसाइनर लोन उपलब्ध करा रही है। एप्लाईबोर्ड विदेश में पढ़ाई की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए प्रक्रिया को आसान बनाती है और एक सिंगल प्लेटफॉर्म पर स्कूलों, रिक्रूटमेंट पार्टनर्स और छात्रों को जोड़ती है। 7 साल पुरानी कंपनी ने 400,000 से अधिक छात्रों को विदेश में अपनी पढाई पूरी करने में मदद की है। अंतरराष्ट्रीय स्टूडेंट रिक्रूटमेंट के लिए एप्लाईबोर्ड दुनिया का सबसे बड़ा ऑनलाइन प्लेटफार्म है।

डीआरआई ने जब्त किया 65.46 किलोग्राम सोना

नयी दिल्ली। राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) ने देश के विभिन्न स्थानों से 33.40 करोड़ रुपये के 65.46 किलोग्राम सोना जब्त किया है। वित्त मंत्रालय ने आज यहां बताया कि 394 विदेशी सोने की छड़ें जब्त की गयी हैं जिनकी तस्करी पड़ोस के पूर्वोत्तर देशों से की जा रही थी। खुफिया जानकारी मिली थी कि एक सिंडिकेट सक्रिय रूप से मिजोरम से विदेश से सोने की तस्करी की योजना बना रहा है जिसके लिए वो आपूर्ति श्रृंखला के घरेलू कूरियर कंसाइनमेंट और लॉजिस्टिक कंपनी (जिसे आगे लॉजिस्टिक्स कंपनी कहा गया है) का उपयोग करने जा रहा है।

इस गैर-कानूनी खेप को पकड़ने के लिए डीआरआई द्वारा 'ऑप गोल्ड रश' शुरू किया गया और मुंबई जाने वाली इस विशेष खेप को पकड़ा गया जिसे निजी सामान घोषित किया गया था। 19 सितंबर को भिवंडी (महाराष्ट्र) में इस खेप की जांच में लगभग 19.93 किलोग्राम वजन और 10.18 करोड़ रुपये के विदेशी सोने के 120 बिस्कुट बरामद किए गए।

जांच से पता चला कि ऐसे दो और कंसाइनमेंट मुंबई जा रहे हैं जिन्हें एक ही कंसाइनर द्वारा एक ही जगह से एक ही इंसान को भेजा गया है। और इसे उसी लॉजिस्टिक्स कंपनी के माध्यम से भेजा जा रहा था। फिर इन कंसाइनमेंट के स्थान का पता लगाया गया।

दूसरी खेप बिहार में स्थित थी और उसे वहीं पकड़ा गया था। उस लॉजिस्टिक्स कंपनी के गोदाम की जांच करने पर 172 सोने की छड़ें बरामद हुईं, जिनका वजन लगभग 28.57 किलोग्राम था और जिनकी कीमत लगभग 14.50 करोड़ रुपये थी। इसी तरह, तीसरी खेप को उस लॉजिस्टिक्स कंपनी के दिल्ली हब में पकड़ा गया और जांच की गई, जिसके नतीजतन लगभग 16.96 किलोग्राम वजन और लगभग 8.69 करोड़ रुपये मूल्य की 102 सोने की छड़ें बरामद हुईं। इन बरामदगियों की श्रृंखला से देश में पूर्वोत्तर हिस्से से लॉजिस्टिक्स कंपनी के घरेलू कूरियर मार्ग के जरिए भारत में विदेशी मूल के सोने की तस्करी के नए तौर-तरीकों का पता लगाने में सहायता मिली है। इस तरह की बरामदगी ने तस्करी के अनूठे और परिष्कृत तरीकों का पता लगाने और उनका मुकाबला करने की डीआरआई की क्षमता को पुष्ट किया है। कई शहरों में हुए ऑपरेशनों में कुल 394 विदेशी मूल की सोने की छड़ें बरामद और जब्त की गई हैं जिनका वजन लगभग 65.46 किलोग्राम है और जिनकी कीमत लगभग 33.40 करोड़ रुपये है।

अज्ञात क्षेत्रों में स्टार्टअप के लिए पर्याप्त अवसर

एजेंसी

नयी दिल्ली। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव अमित कुमार घोष ने कहा है कि देश में भले ही स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र तेज रफ्तार से बढ़ रहा है लेकिन अभी भी कई क्षेत्रों में अपार अवसर हैं। इन्हें अब तक उद्यमियों द्वारा अनदेखा किया गया है।

घोष ने राजधानी में मंगलवार को आयोजित दो दिवसीय उद्यमी वार्षिक सम्मेलन 2022 के उद्घाटन सत्र में कहा कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने में स्टार्टअप इंडिया की अहम भूमिका है।

उन्होंने कहा कि पिछले वर्ष देश में 43 स्टार्टअप यूनिकॉर्न बन गए, जबकि वर्ष 2020 में सिर्फ नौ थे। अब तक वर्ष 2022 में 20 से अधिक स्टार्टअप ने एक अरब डॉलर के मूल्यांकन क्लब में प्रवेश किया है।

घोष का विचार है कि बड़ी संख्या में स्टार्टअप बड़े पैमाने पर कुछ क्षेत्रों में केंद्रित हैं जिससे वे अन्य बड़े अवसरों से चूक जाते हैं।

उन्होंने कहा, कुछ क्षेत्रों में जैसे शिक्षा तकनीक, फिनटेक और सास जैसे स्टार्टअप्स की प्रधानता है। कई क्षेत्रों में बेहतरीन अवसर हैं लेकिन हमें वहां स्टार्टअप नहीं दिख रहे हैं।

स्टार्टअप इकोसिस्टम में मजबूत वृद्धि और देश में यूनिकॉर्न की बढ़ती संख्या का जिक्र करते हुए अधिकारी ने कहा, हम नवाचार और उद्यमिता के नवयुग की शुरुआत में हैं।

कार्यक्रम में एंटरप्रेन्योर मीडिया (एपीएसी एंड इंडिया) की मुख्य संपादक रितु मर्या ने कहा, भारत का वर्चस्व बढ़ रहा है, जिसमें पूरी दुनिया देश में रुचि रखती है। दुनिया भारत में निवेश करना चाहती है।

उनका विचार था कि पेटीएम और जोमैटो सहित कई भारतीय स्टार्टअप इतने परिष्कृत हैं कि वे दुनिया को समाधान दे सकते हैं।

मार्या ने कहा, अब समय आ गया है कि इन संगठनों को और अधिक वैश्विक सोचने की जरूरत है, क्योंकि उनके उत्पाद वास्तव में उच्च स्तर के हैं जिन्हें केवल भारतीय बाजार तक ही सीमित रहने की आवश्यकता नहीं है।

इस पैनल में प्रिस्टीन केयर के सह-संस्थापक हरसिमारभीर सिंह, शोरील के सह-संस्थापक और सीईओ सबीर भाटिया, ग्रेट लर्निंग के सह-संस्थापक हरि कृष्ण और अन्य गणमान्य शामिल हुए।

उल्लेखनीय है कि दो दिवसीय सम्मेलन का उद्देश्य उद्योग के दिग्गजों को बातचीत करना, सर्वोत्तम प्रथाओं पर ध्यान आकर्षित करना और उपभोक्ता हित को पकड़ने के लिए नवाचार को बढ़ावा देना है, जिससे उद्यमी उद्योग को विकसित करने में मदद करेगा।

शार्ट न्यूज

युवा खिलाड़ियों की मेहनत वरिष्ठों को प्रेरित करती है : सुशीला

बेंगलुरु। भारतीय महिला हॉकी टीम की अनुभवी सदस्य सुशीला चानू ने दिसंबर में होने वाले नेशन्स कप की तैयारियों के बीच युवा खिलाड़ियों की तारीफ करते हुए कहा कि उनकी मेहनत से वरिष्ठ खिलाड़ियों को भी प्रेरणा मिलती है।सुशीला ने कोर ग्रुप में शामिल हुए नये खिलाड़ियों की प्रशंसा करते हुए कहा, युवाओं का एक समूह है जो हर दिन प्रशिक्षण में अपना 100 प्रतिशत दे रहा है। यह देखकर अच्छा लगता है कि वे हमें भी अच्छा करने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्होंने कहा, निश्चित रूप से, वरिष्ठ खिलाड़ी के रूप में हम टीम में अपनी जगह को लेकर लापरवाह नहीं हो सकते। हमें भी यह दिखाने की जरूरत है कि हम बड़े टूर्नामेंट खेलने की तैयारी में हैं। मेरे अनुसार यह आंतरिक प्रतिस्पर्धा टीम के लिये अच्छी है और हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। भारतीय महिलायें बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेल 2022 में शानदार प्रदर्शन के बाद स्पेन के वैलेंसिया में होने वाले नेशन्स कप के लिये बेंगलुरु के राष्ट्रीय खेल प्राधिकरण (साई) में तैयारी कर रही है। भारत को पूल बी में कनाडा, जापान और दक्षिण अफ्रीका के साथ रखा गया है जबकि इटली, आयरलैंड, कोरिया और स्पेन पूल ए में हैं।

गढ़वाल का अजेय रिकार्ड बरकरार, दिल्ली एफसी को हराया

नयी दिल्ली। दिल्ली प्रीमियर लीग की पूर्व चैंपियन गढ़वाल एफसी ने मैन ऑफ द मैच सूरज और जयदीप सिंह के दर्शनीय गोलों से बुधवार को दिल्ली एफसी को 2-1 से परास्त कर प्रीमियर लीग की खिताबी दौड़ में वापसी कर ली। इस शानदार जीत के साथ गढ़वाल ने दिल्ली एफसी के विरुद्ध अपना अजेय रिकार्ड कायम रखा है। पराजित टीम का गोल फहाद तैमूरी के नाम रहा। दिन के दूसरे मुकाबले में फ्रेंड्स युनाइटेड ने मैन ऑफ द मैच संतोष कुमार और अजय सिंह की तिकड़ियों की मदद से हिंदुस्तान एफसी को 8-0 से हराकर पूरे अंक अर्जित किये। लीग की सबसे भारी हार वहन करने वाली हिंदुस्तान दौड़ से पहले ही बाहर हो चुकी है। विजेता टीम के दो गोल पवन प्रताप और अंकित रावत ने बांटे। दिल्ली एफसी 18 मैचों में 36 अंक जुटाकर वाटिका एफसी के बाद अंक तालिका में दूसरे स्थान पर है। वाटिका के 38 अंक हैं। रॉयल रेंजर्स 19 मैचों में 34 और गढ़वाल 18 मैच खेलकर 33 अंक पर है। महिला लीग के एक रोमांचक मुकाबले में हंस एफसी ने रेंजर्स को 4-2 से परास्त किया। हंस के लिये अनीता ने दो खूबसूरत गोल जमाए। लक्ष्मी ने एक गोल बनाया। पराजित टीम की कविता ने आत्मघाती गोल बनाया जबकि आरती और फूटी ने पराजित टीम के गोल जमाये।

विधायक परगट सिंह विक्टोरिया पार्लियामेंट में सम्मानित

जालंधर। ऑस्ट्रेलिया दौरे पर गए विधायक ओलंपियन परगट सिंह का मेलबर्न में विक्टोरिया पार्लियामेंट में विशेष सम्मान किया गया। उन्हें विक्टोरिया राज्य के सांसद पॉलीन रिचर्ड, टिन क्यू, ब्रूस एटकिंसन और एनवर एर्दोआन ने सम्मानित किया। इस मौके पर सांसद पॉलीन रिचर्ड ने हॉकी के क्षेत्र में ओलंपियन परगट सिंह के अहम योगदान का जिक्र करते हुए कहा कि दुनिया के महान खिलाड़ी आज विक्टोरिया पार्लियामेंट पहुंचे हैं, जो उनके लिए गर्व की बात है। इस अवसर पर इन सांसदों से बात करते हुए परगट सिंह ने कहा कि पंजाब को विक्रोटिया संसद से विशेष समर्थन की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि शिक्षा और खेल के क्षेत्र में विक्टोरिया राज्य से विशेष सहयोग की आवश्यकता है ताकि पंजाब के युवा लाभान्वित हो सकें। इन सांसदों ने परगट सिंह को आश्वासन दिया कि उनके द्वारा दिए गए सुझावों पर गंभीरता से विचार कर जल्द ही राज्य के प्रधानमंत्री की सलाह से पंजाब का दौरा करेंगे ताकि परगट सिंह द्वारा दिए गए सुझावों पर अमल करने की दिशा में कदम उठाया जा सके।

लंदन में होंगे टेस्ट चैंपियनशिप 2023, 2025 फाइनल

दुबई। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने बुधवार को खुलासा किया कि विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) 2023 का फाइनल जून में इंग्लैंड के ओवल में आयोजित किया जाएगा जबकि 2025 का फाइनल लॉर्ड्स क्रिकेट ग्राउंड में खेला जाएगा। आईसीसी ने कहा कि दोनों फाइनल की तारीखें भविष्य में तय की जाएंगी। न्यूजीलैंड और भारत के बीच पहला डब्ल्यूटीसी फाइनल 2021 में साउथैम्पटन में खेला गया था, जिसे कीवी टीम ने जीता था। इंग्लैंड की राजधानी लंदन में स्थित केनिंगटन ओवल जून 2023 में मौजूदा डब्ल्यूटीसी सत्र के फाइनल की मेजबानी करेगा, जिसमें विश्व टेस्ट चैंपियनशिप तालिका की शीर्ष दो टीमें आमने-सामने होंगी। इससे पहले ओवल में आईसीसी पुरुष चैंपियन्स ट्रॉफी के 2004 और 2017 संस्करणों के फाइनल आयोजित हो चुके हैं। ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका वर्तमान टेस्ट चैंपियनशिप तालिका के शीर्ष की दो टीमें हैं। ऑस्ट्रेलिया 70 प्रतिशत अंकों के साथ पहले स्थान पर है जबकि दक्षिण अफ्रीका 60 प्रतिशत के साथ दूसरे स्थान पर है। दोनों टीमें दिसंबर-जनवरी में तीन मैचों की टेस्ट शृंखला में एक-दूसरे के खिलाफ भिड़ेंगी, जिसके नतीजे अंक तालिका पर बड़ा फेरबदल कर सकते हैं।

टेलर की टीम से भिड़ेंगे लारा के धुरंधर

देहरादून। वेस्टइंडीज लीजेंड्स बुधवार को उत्तराखंड के देहरादून में राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में रोड सेफ्टी वर्ल्ड सीरीज 2022 के 13वें मैच में न्यूजीलैंड लीजेंड्स से भिड़ेगी। यह देहरादून में टूर्नामेंट का पहला मैच होगा। इंदौर में इंग्लैंड पर आठ विकेट की जीत के बाद वेस्टइंडीज लीजेंड्स आत्मविश्वास से भरी हुई है। क्रिसमार सैंटोकी और सुलेमान बेन की शानदार गेंदबाजी की बदौलत विंडीज ने पहले इंग्लैड के बल्लेबाजों को पांच विकेट पर 156 रन पर रोक दिया। बाद में ड्वेन स्मिथ और विलियम पर्किन्स के अर्धशतकों ने ब्रायन लारा की टीम को तीन मैच में पांच अंकों के साथ दूसरे स्थान पर पहुंचाया। स्मिथ टूर्नामेंट के रनों की मशीन के तौर पर सबसे आगे हैं और दाएं हाथ के बल्लेबाज का लक्ष्य न्यूजीलैंड की गुणवत्तापूर्ण गेंदबाजी के खिलाफ अपने फॉर्म को जारी रखना होगा। रॉस टेलर के नेतृत्व वाले न्यूजीलैंड लीजेंड्स को शुरुआती मैच में हार का सामना करना पड़ा था, जबकि भारत के खिलाफ इंदौर में पिछला मैच गीले आउटफील्ड के कारण रद्द हो गया। टी20 मैचों में न्यूजीलैंड और वेस्टइंडीज ने 19 बार एक-दूसरे का सामना किया है। इनमें से न्यूजीलैंड ने 11 जीते हैं जबकि विंडीज ने छह में जीत हासिल की है।

बाबर को पछाड़कर टी20 रैंकिंग में नंबर तीन पर पहुंचे सूर्यकुमार

दुबई। भारत के विस्फोटक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव ने आईसीसी टी20 रैंकिंग में पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम को पछाड़ते हुए तीसरा स्थान हासिल कर लिया है। आईसीसी की ओर से बुधवार को जारी नवीनतम रैंकिंग के अनुसार सूर्यकुमार 780 रेटिंग पॉइंट के साथ टी20 बल्लेबाजों की सूची में तीसरे स्थान पर हैं, जबकि 771 पॉइंट के साथ बाबर चौथे पायदान पर आ गये हैं। सूर्यकुमार ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मंगलवार को पहले टी20 मैच में 25 गेंदों पर 46 रन की विस्फोटक पारी खेली थी, जिसकी बदौलत वह शीर्ष रैंकिंग वाले मोहम्मद रिजवान के एक कदम करीब आ गये हैं। बाबर के हमवतन रिजवान और सूर्यकुमार के बीच केवल 45 रेटिंग पॉइंट का अंतर है। रिजवान ने अपनी शानदार फॉर्म को जारी रखते हुए इंग्लैंड के खिलाफ मंगलवार को कराची में खेले गये पहले टी20 मैच में अर्द्धशतक जड़ा, जिसकी बदौलत वह अपनी करियर की सर्वश्रेष्ठ 825 रेटिंग हासिल कर चुके हैं। दूसरी ओर, बाबर इस मैच में केवल 31(24) रन ही बना सके जिससे उनकी रैंकिंग पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

2023 में पहली बार भारत आयेगी मोटो जीपी विश्व चैंपियनशिप

एजेंसी

नयी दिल्ली। एफआईएम विश्व चैपिंयनशिप ग्रां प्री (मोटो जीपी) का आयोजन करने वाली स्पेन की डोरना स्पोर्ट्स ने खेल गतिविधि क्षेत्र में कार्य करने वाली भारतीय कंपनी फेयरस्ट्रीट स्पोर्ट्स के साथ मिलकर बुधवार को देश में पहली बार मोटो जीपी ग्रां प्री के आयोजन की घोषणा की।

आयोजकों ने यहां जारी विज्ञप्ति में बताया कि देश की पहली मोटो जीपी प्रतियोगिता ग्रां प्री ऑफ भारत का आयोजन नोएडा, उत्तर प्रदेश के बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट में 2023 में होगा। विज्ञप्ति में कहा गया कि आयोजन में 19 देशों के रेसर भाग लेंगे।

उत्तर प्रदेश में होने वाली रेस को लेकर राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है, यह राज्य के लिए गर्व की बात है कि वह वैश्विक स्तर के खेल आयोजन की मेजबानी करने जा रहा है। इससे न केवल पर्यटन क्षेत्र में वृद्धि होगी बल्कि यह उत्तर प्रदेश को वैश्विक मंच पर लाकर खड़ा कर देगा। इस आयोजन को कामयाब बनाने के लिए हमारी सरकार हर तरह की आवश्यक मदद करेगी।

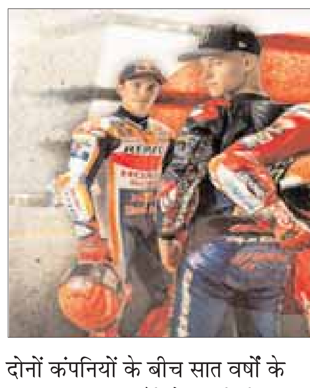

दोनों कंपनियों के बीच सात वर्षों के लिए हुए इस समझौते के जरिये डोरना का उद्देश्य है कि वह अन्य राज्यों की सरकारों के साथ कार्य करते हुए देश में मोटरसाइकिल वातावरण को प्रोत्साहित करें और अंतरराष्ट्रीय स्तर के भारतीय मोटर जीपी राइडरों को बढ़ावा दे। डोरना स्पोर्ट्स के प्रबंधन निदेशक कार्लोस एजपेलेटा ने कहा, मोटो जीपी लगातार नये दर्शक जोड़ रही है।

हमारी योजना में भारत प्रमुख है जो इसे नयी सीमाएं देगा। हम देश में ग्रां प्री ऑफ भारत के साथ दर्शकों के एक बड़े समूह को खेल की ओर आकर्षित करने का प्रयास कर रहे हैं।

फेयरस्ट्रीट स्पोर्ट्स के मुख्य परिचालन अधिकारी (सीओओ) पुष्कर नाथ ने कहा, देश में मोटरसाइकिलिंग को एक खेल के रूप में बड़े स्तर पर प्रशंसित किया जाता है। दुनिया के मशहूर मोटरसाइकिल रेस के आयोजन को यहां लाने पर हमें उम्मीद है कि इसे पसंद करने वालों की संख्या के बढ़ने के साथ ही युवा मोटरसाइकिल चालकों को इसे बतौर खेल चुनने में प्रोत्साहन मिलेगा।

उल्लेखनीय है कि मोटोजीपी भारत के रेसिंग परिदृश्य में मोटो-ई को भी पेश करने पर विचार कर रहा है। मोटो-ई मोटरसाइकिल रेसिंग का वह प्रारूप है जिसमें विद्युत-चालित मोटरसाइकिलों का प्रयोग किया जाता है।

एशिया कप के लिये जेमिमा की टीम में वापसी

एजेंसी

मुंबई। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने बुधवार को महिला टी20 एशिया कप 2022 के लिये टीम की घोषणा की, जिसमें हरफनमौला जेमिमा रॉड्रिगेज को शामिल किया गया है।

रॉड्रिग्स कलाई की चोट के कारण इंग्लैंड दौरे पर नहीं जा सकी थीं। वह फिलहाल बेंगलुरु की राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में तीन सप्ताह के स्वास्थ्य लाभ से गुजर रही हैं।

इंग्लैंड के खिलाफ टी20 शृंखला 2-1 से हारने वाली भारतीय टीम में रॉड्रिगेज के अलावा कोई बदलाव नहीं किया गया। इंग्लैंड शृंखला में अंतिम ओवरों में अपनी शानदार बल्लेबाजी से प्रभावित करने वाली ऋचा घोष ने प्रथम विकेटकीपर के रूप में टीम में अपनी जगह बरकरार रखी।

ऋचा के टीम में जगह बनाने के कारण राष्ट्रमंडल खेल 2022 में भारत की पहली विकेटकीपर रहीं तानिया भाटिया को सिमरन बहादुर के साथ अतिरिक्त खिलाड़ियों की सूची में रखा गया है। इंग्लैंड शृंखला के दौरान पदार्पण करने वाली शीर्ष क्रम की बल्लेबाज किरण प्रभु नवगीरे ने हरमनप्रीत कौर की अगुवाई वाली टीम में अपना स्थान बरकरार रखा है।

मेघना सिंह और रेणुका सिंह टीम की दो प्रमुख सीमर हैं, जबकि हरफनमौला पूजा वस्त्राकर तेज गेंदबाजी का तीसरा विकल्प हैं। भारत की स्पिन गेंदबाजी हालांकि काफी विविध है।

चयनकर्ताओं ने राजेश्वरी गायकवाड़ और राधा यादव के रूप में बाएं हाथ के दो स्पिनरों को स्क्वाड में जगह दी है, जबकि ऑलराउंडर स्नेह राणा और दीप्ति शर्मा दाएं हाथ से स्पिन गेंदबाजी कर सकती हैं।

महिला एशिया कप चार साल के अंतराल के बाद वापसी कर रहा है। सात टीमों का टूर्नामेंट राउंड-रॉबिन प्रारूप में खेला जाएगा। प्रत्येक टीम लीग चरण में छह मैच खेलेगी, जिसके बाद शीर्ष चार टीमें सेमीफाइनल में जगह पक्की करेंगी। हरमनप्रीत की टीम अपने अभियान की शुरुआत श्रीलंका के खिलाफ एक अक्टूबर से करेगी।

हमें खिलाड़ियों पर भरोसा करने की जरूरतः पांड्या

मोहाली। भारत के हरफनमौला खिलाड़ी हार्दिक पांड्या ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चार विकेट की करारी हार के बाद कहा है कि टीम को अपने खिलाड़ियों पर भरोसा जताना होगा।

उल्लेखनीय है कि भारत को अगले महीने होने वाले टी20 विश्व कप 2022 में 23 अक्टूबर को अपना अभियान शुरू करना है, लेकिन पिछले कुछ मैचों के नतीजे टीम के लिये चिंताजनक रहे हैं। भारत ने जसप्रीत बुमराह की अनुपस्थिति में अपने पिछले चार में से तीन मैच डेथ ओवरों में खराब गेंदबाजी के कारण हारे हैं। मोहाली में मंगलवार को खेले गये टी20 मैच में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 208 रन बनाये थे, लेकिन गेंदबाज इस बड़े स्कोर की रक्षा नहीं कर सके।

पांड्या ने कहा, हम सभी जानते हैं कि जसप्रीत बुमराह टीम में क्या लाते हैं और वह हमारे लिए कितने महत्वपूर्ण हैं। हमारे लिये चिंतायें उभरेंगी, लेकिन हमें अपने खिलाड़ियों पर भरोसा करना होगा। ये देश में सबसे अच्छे 15 लोग हैं, इसलिए वे टीम में हैं। जसप्रीत के वहां होने से बहुत फर्क पड़ता है, लेकिन वह एक चोट के बाद वापस आ रहा है। यह महत्वपूर्ण है कि उसे लौटने के लिए पर्याप्त समय मिले और वह खुद पर ज्यादा दबाव न डाले। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मिली हार का रंग एशिया कप में श्रीलंका और पाकिस्तान के हाथों मिली शिकस्त से मिलता है। कंगारुओं को अंतिम चार ओवर में 55 रन चाहिये थे, लेकिन अपनी विविधता के लिये मशहूर हर्षल पटेल की वापसी के बावजूद भारत डेथ ओवरों में रनगति पर लगाम नहीं लगा सका और चार गेंदें रहते हुए हार गया।

पांड्या ने कहा, हम एक टीम के रूप में बेहतर होना चाहते हैं। हारना आपको बहुत कुछ सिखाता है। हम एक प्रक्रिया पर चलने वाली टीम हैं और जब तक विश्व कप आएगा, हम अपनी प्रक्रियाओं को बेहतर बनाएंगे और देखेंगे कि हम कहां सुधार कर सकते हैं। मैं खिलाड़ियों के बारे में बहुत आश्वस्त हूं। एकाध मैचों के नतीजे ज्यादा कुछ नहीं बदलते हैं।

पांड्या ने अंतिम ओवरों की गेंदबाजी पर कहा, हम किसी एक पर इलजाम नहीं रख सकते। यह एक खेल है। यह द्विपक्षीय सीरीज है, हमें दो और मैच मिलेंगे और हम बेहतर खेलने की कोशिश करेंगे।

पांड्या का फॉर्म में लौटना हालांकि भारत के लिए काफी सकारात्मक था। पहले टी20 में 30 गेंदों पर नाबाद 71 रन बनाने वाले पांड्या ने अपनी बल्लेबाजी को लेकर कहा, मैं नंबर पांच पर अपनी भूमिका देखता हूं। मुझे पांच पर बल्लेबाजी करने के लिए कहा गया है। इसमें कोई रॉकेट साइंस नहीं है। मुझे जहां भी और जब भी बल्लेबाजी करने का मौका मिलता है, मैं इसका आनंद लेता हूं। बल्लेबाजी मेरे दिल के बहुत करीब है, इसलिए मुझे जितनी गेंदें मिलें, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर मुझे 10 गेंदें बल्लेबाजी करने को मिलती हैं, तो वह भी ठीक है। उन्होंने कहा, मुझे पता है कि मेरे पास हाल ही में बहुत अच्छे दिन रहे हैं, लेकिन मेरे अच्छे दिनों में भी मेरा ध्यान इस बात पर है कि मैं कैसे बेहतर हो सकता हूं। आज मेरा खेल अच्छा था लेकिन यह मैच खत्म हो गया है। मुझे अगले मैच के लिए तैयार रहना होगा।

'प्रमोशन नहीं मिला तो बॉस समेत पूरे परिवार को उतारा मौत के घाट, 8 साल बाद हुआ गिरफ्तार

नई दिल्ली। आठ साल पहले अमेरिका के ह्यूस्टन में अपने बॉस समेत पूरे परिवार की हत्या करने वाले शख्स को गिरफ्तार कर लिया गया है। ह्यूस्टन क्रॉनिकल के अनुसार, फेंग लू को चीन से आने के कुछ ही समय बाद 11 सितंबर को गिरफ्तार किया गया था। फेंग लू ने अपने बॉस माओय और उसके परिवार के चार अन्य सदस्यों की 30 जनवरी, 2014 को हत्या कर दी थी। पुलिस ने इस हत्याकांड का अब खुलासा किया है। पता लगा है कि जॉब में प्रमोशन नहीं मिलने से नाराज फेंग लू ने अपने बॉस की परिवार समेत हत्या कर दी थी। सभी के शव बेडरूम में खून से लथपथ पाए गए थे। सभी को गोली मारी गई थी।

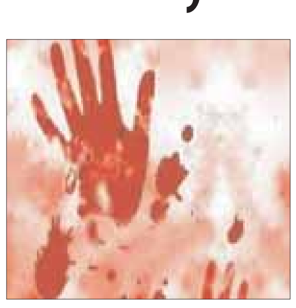

ह्यूस्टन पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, 30 जनवरी साल 2014 को माओय सन (50), मेईक्सी सन (49), टिमोथी सन (9) और टाइटस सन (7) के शव बेडरूम में पाए गए थे। सभी की गोली मारकर हत्या की गई थी। पुलिस ने अब हत्या के पीछे की वजह का खुलासा किया है। पुलिस ने कहा कि फैंग लू की गिरफ्तारी के बाद पूरे परिवार की हत्या पर से पर्दा खुल गया है। 58 वर्षीय फेंग लू का अपने कर्मचारियों के साथ व्यवहार थोड़ा अजीब था। वह इस बात को लेकर काफी तनाव में था कि ऑफिस में उसके रिपोर्टिंग मैनेजर माओय ने उसके प्रमोशन की सिफारिश नहीं की। पुलिस द्वारा दायर अदालती दस्तावेजों के अनुसार, फेंग कंपनी के अनुसंधान और विकास अनुभाग में अपना ट्रांसफर चाहता था। इसके लिए माओय द्वारा उसे रिकमेंट दिया जाता तो उसका काम बन जाता लेकिन, ऐसा नहीं हुआ। फेंग यू ने अपने कबूलनामे में पुलिस को बताया कि जब वह ऑफिस पहुंचा तो उसके सहकर्मियों का उसके साथ व्यवहार थोड़ा अजीब है। उसे संदेह हुआ कि माओय ने अन्य लोगों के पास उसकी चुगली की है। ह्यूस्टन क्रॉनिकल द्वारा प्राप्त दस्तावेजों के अनुसार, उन्होंने आगे सोचा कि शायद यही कारण है कि उन्हें पदोन्नति नहीं मिली। जांचकर्ताओं को फेंग यू के पास से हत्या में प्रयुक्त बंदूक भी मिल गई है। उसकी पत्नी ने जांचकर्ताओं को बताया कि फेंग का माओ से प्रमोशन को लेकर विवाद था। जांचकर्ताओं द्वारा उसे बताए जाने के बाद कि फैंग ने एक बन्दूक खरीदी थी। द डेली बीस्ट के अनुसार, फोरेंसिक टीम ने जब माओ के घर से नमूनों की जांच की तो वो फेंग यू से मेल खा गए। जब तक जांचकर्ता फेंग यू को धर पाते, तब तक वह अपने घर चीन लौट चुका था। लेकिन, जैसे ही आठ साल बाद वो वापस आया तो पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया।

आबे की राजकीय अंत्येष्टि के विरोध में बजुर्ग ने किया आत्मदाह का प्रयास

टोक्यो। जापान की राजधानी टोक्यो में बुधवार तड़के एक बुजुर्ग व्यक्ति ने कथित तौर पर अगले हफ्ते पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की राजकीय अंत्येष्टि के विरोध में प्रधानमंत्री कार्यालय के पास आत्मदाह का प्रयास किया। एक मीडिया रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। गौरतलब है कि जापान के पूर्व प्रधानमंत्री की 08 जुलाई को गोली मार कर हत्या कर दी गयी थी। आबे का अंतिम संस्कार 27 सितंबर को होगा जिसमें सैकड़ों विदेशी गणमान्य व्यक्तियों के शामिल होने की उम्मीद है। बीबीसी की रिपोर्ट के अनुसार आज टोक्यो में प्रधानमंत्री कार्यालय के पास एक व्यक्ति को आत्मदाह का प्रयास करने पर प्रत्यक्षदर्शियों ने पुलिस को इसकी सूचना दी। स्थानीय मीडिया के अनुसार पुलिस अधिकारियों ने आग पर काबू पा लिया और पीड़ित व्यक्ति को अस्पताल ले जाया गया। पीड़ित व्यक्ति स्वास्थ्य के बारे में अभी कोई जानकारी नहीं मिली है। जापानी मीडिया के अनुसार पीड़ित व्यक्ति की उम्र 70 वर्ष के आसपास है।

9 साल के बाद हिजाब पहनना जरूरी, अलग से पुलिस भी; जानें क्या हैं ईरान में हिजाब पर नियम

नई दिल्ली। हिजाब इन दिनों खूब चर्चा में है। महिलाओं के लिए हिजाब पहनने को लेकर शुरू हुआ विवाद भारत से ज्यादा ईरान में चर्चा में बना हुआ है। भारत में हिजाब पहनने का मुद्दा यूनिफॉर्म में इसे शामिल करने को लेकर है जबकि, ईरान में महिलाएं हिजाब की अनिवार्यता हटाने को लेकर आमादा हैं। 22 साल की अमीनी की मौत के बाद से महिलाओं में गुस्सा चरम पर है। हालांकि ऐसा पहले ऐसा नहीं था। कभी पश्चिमी देशों की तरह खुलापन के माहौल में जीने वाले ईरान में 1979 के बाद सबकुछ बदल गया। इस्लामिक क्रांति के बाद से देश में अयातुल्लाह खोमैनी ने सत्ता संभाली और शरिया कानून लागू किया। हिजाब की अनिवार्यता ईरान के अलावा सिर्फ तालिबान शासित अफगानिस्तान में है। इससे उलट दुनिया के 55 अन्य मुस्लिम बहुल देशों में ऐसे नियम नहीं हैं। ईरान में तो 9 साल की उम्र के बाद से हर महिला को हिजाब पहनना जरूरी है। इन नियमों के पालन के लिए बाकायदा अलग से पुलिस व्यवस्था भी है।

ईरान की धरती इस वक्त हिजाब के विरोध को लेकर दुनियाभर में चर्चा में बनी हुई हैं। यहां की महिलाओं ने हिजाब पहनने के खिलाफ एक अनोखा सोशल मीडिया कैंपेन शुरू किया है। नो टू हिजाब कैंपेन में महिलाएं सोशल मीडिया पर बिना हिजाब की तस्वीरें पोस्ट कर रही हैं। साथ ही हिजाब जलाते हुए और अपने बालों को काटते हुए सोशल मीडिया पर तस्वीरें-वीडियो जारी कर रही हैं।

इस्लामिक क्रांति के बाद बदल गया ईरान

दरअसल, ईरान पहले ऐसा नहीं था। ईरान के लोगों में पहले पश्चिमी देशों की तरह खुलापन था लेकिन, 1979 आई इस्लामिक क्रांति ने सबकुछ बदल दिया। शाह मोहम्मद रेजा पहलवी को हटाकर धार्मिक नेता अयातुल्लाह खोमैनी ने सत्ता संभाली और ईरान में शरिया कानून लागू कर दिया। हालांकि यह और बात है कि दुनिया के 195 देशों में से 57 मुस्लिम बहुल हैं। इनमें से 8 में शरिया कानून का सख्ती से पालन किया जाता है। जबकि सिर्फ दो ही देश ऐसे हैं जहां महिलाओं को घर से निकलने पर हिजाब पहनना जरूरी है। इन देशों में ईरान के अलावा अफगानिस्तान भी शामिल है। अफगानिस्तान में इस वक्त तालिबान का शासन है।

9 साल के बाद हिजाब पहनना अनिवार्य

ईरान में हिजाब की अनिवार्यता को लेकर नियम इतने कड़े हैं कि आप सुनकर ही चौंक जाएंगे। यहां अगर लड़की 9 साल पार कर गई है तो उसके लिए हिजाब पहनना जरूरी हो जाता है।

घर से निकलने से लेकर ऑफिस, रेस्तरां, सार्वजनिक स्थल, अस्पताल कुल मिलाकर हर जगह महिलाओं को हिजाब पहनना जरूरी है। इन नियमों का पालन कराने के लिए बाकायदा अलग से पुलिसिंग व्यवस्था भी है, जो सिर्फ शरिया कानून के पालन अच्छे से हो रहे हैं, इन पर नजर रखती है।

मातृभूमि की रक्षा के लिए हर जरूरी उपाय करेगा रूस, धोखे में न रहे पश्चिम : पुतिन

मास्को। रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमिर पुतिन ने रूस को परमाणु हथियार की धमकी देने वाले पश्चिमी देशों को कड़ा संदेश देते हुए बुधवार को कहा कि जो ऐसी धमकियां दे रहे हैं वे यह बात ध्यान में रखें कि अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए रूस वह सब कुछ करेगा जो जरूरी है । पश्चिमी देश किसी धोखे में न रहें। सरकारी एजेंसी 'तास' ने यह जानकारी दी। देश के नाम टेलीविजन पर दिये संदेश में रूसी राष्ट्रपति ने कहा जो हमें परमाणु हथियारों की धमकी दे रहें हैं उन्हें पता होना चाहिए कि हवा का रूख कभी भी मुड़ सकता है। अपनी मातृभूमि और लोगों की रक्षा के लिए हम वह सब कुछ करेंगे जो जरूरी होगा। अपनी आजादी की रक्षा के लिए मैं दोहराता हूं कि हम वह सब कुछ करेंगे जो जरूरी होगा। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ समय से पश्चिमी देश ऐसा दिखा रहे हैं कि वे रूस को बरबाद करना चाहते हैं और इसके लिए वह यूक्रेन के लोगों को युद्ध में बलि का बकरा बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा, हमारा उद्देश्य डोनबास क्षेत्र को आजाद कराना है। इसके लिए यूक्रेन के आजाद इलाकों में अपने लोगों की सुरक्षा के लिए और सेना भेजे जाने को लेकर मैंने रक्षा विभाग से भी बात की है। इसके लिए डिक्री पर हस्ताक्षर किये जा चुके हैं और बुधवार से सेना को भेजना शुरू कर दिया जायेगा।

बिडेन ने ईयू से बात करने की ट्रूज से की अपील

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बिडेन ने ब्रिटेन की प्रधानमंत्री लिज ट्रूज़ से अपील की है कि वह उत्तरी आयरलैंड में पोस्ट ब्रेक्जिट व्यापारिक व्यवस्थाओं को लेकर यूरोपियन यूनियन (ईयू) के साथ चल रहे तनाव को कम करने के लिए काम करें। व्हाइट हाउस की ओर से जारी बयान में यह जानकारी दी गयी। ट्रूज संयुक्त राष्ट्र के सम्मेलन में हिस्सा लेने न्यूयार्क की यात्रा पर थीं और वहीं पर दोनों नेताओ के बीच द्विपक्षीय वार्ता होगी। ब्रिटेन की विवादित योजना उत्तरी आयरलैंड प्रोटोकॉल को लेकर दोनों नेताओं के बीच तनाव है। सुश्री ट्रूज ने कहा कि वह इस सौदे में परेशानी खड़ी करने की इजाजत किसी को नहीं देगीं। सुश्री ट्रूज और श्री बिडेन ने कहा कि प्रोटोकॉल को लेकर बातचीत की गयी है। सुश्री ट्रूज ने न्यूयार्क में पत्रकारों से कहा कि ब्रिटेन को उत्तरी आयरलैंड में नयी सरकार के गठन से जुडी समस्याओं का समाधान करना चाहिए और उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम के बीच सुगम व्यापार सुनिश्चित करना चाहिए। अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षाा सलाहकार जेक सुलीवान ने मंगलवार को पत्रकारों को बताया कि उत्तरी आयरलैंड शांति समझौता - गुडफ्राइडे समझौते कीरक्षा के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति, ब्रिटेन और ईयू दोनों को एक समझौते पर पहुंचने के लिए प्रेरित करेंगे।

संपादक हत्या मामले में श्रीलंका दोषीः ट्रिब्यूनल

कोलंबो। नीदरलैंड के हेग स्थित पीपुल्स ट्रिब्यूनल ने 2009 में जाने माने पत्रकार एवं संपादक लसांथा विक्रमतुंगे की हत्या मामले में श्रीलंकाई सरकार को दोषी माना है। एक स्थानीय अखबार में बुधवार को दी गयी जानकारी के अनुसार पीपुल्स ट्रिब्यूनल ने पत्रकार की हत्या मामले में श्रीलंका सरकार को मानवाधिकारों के हनन का दोषी पाया है। रिपोटर्स विदआउट बॉर्डर्स, फ्री प्रेस अनलिमिटेड और पत्रकारों के संरक्षण के लिए गठित समिति द्वारा गठित इस ट्रिब्यूनल को हालांकि किसी को दोषी ठहराने का कोई न्यायिक अधिकार तो नहीं है, लेकिन इस ट्रिब्यूनल का उद्देश्य लोगों में जागरूकता बढ़ाना, सरकारों पर दबाव बनाना और सबूत एकत्र करना है। श्रीलंकाई पत्रकार की हत्या मामले में लगभग एक साल तक ट्रिब्यूनल में सुनवायी की गयी। पीड़ित के परिजनों, पत्रकारों और विशेषज्ञों सहित 50 से अधिक लोगों की गवाही ट्रिब्यूनल में करायी गयी। इसके बाद ट्रिब्यूनल ने 19 सितंबर को अपना फैसला सुनाया कि इस मामले में श्रीलंका सरकार को पत्रकार लसांथा विक्रमतुंगे के अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों विशेषकर जीवन के अधिकार, अभिव्यक्ति की आजादी और प्रभावी निदान के अधिकारों के हनन का दोषी पाया गया। ट्रिब्यूनल के जज एडुआर्डो बेरटोनी ने कहा, सरकार ने राजनीति आधार पर भेदभाव करते हुए विक्रमतुंगे के आजादी के अधिकार का हनन किया था।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं... से मुद्रित एवं , ब्लाक नं 23 मकान नं 399 त्रिलोक पुरी दिल्ली -91 से प्रकाशित
संपादकः प्रवीण कुमार सिंह, आरएनआई नं. ·DELHIN/2011/38334, किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट अंतर्गत उत्तरदायी, टेलीफोन नं.: 011-26700510/11 , ई-मेल : info@gauravshalibharat.com, समस्त विवादो का न्यायलय दिल्ली होगा

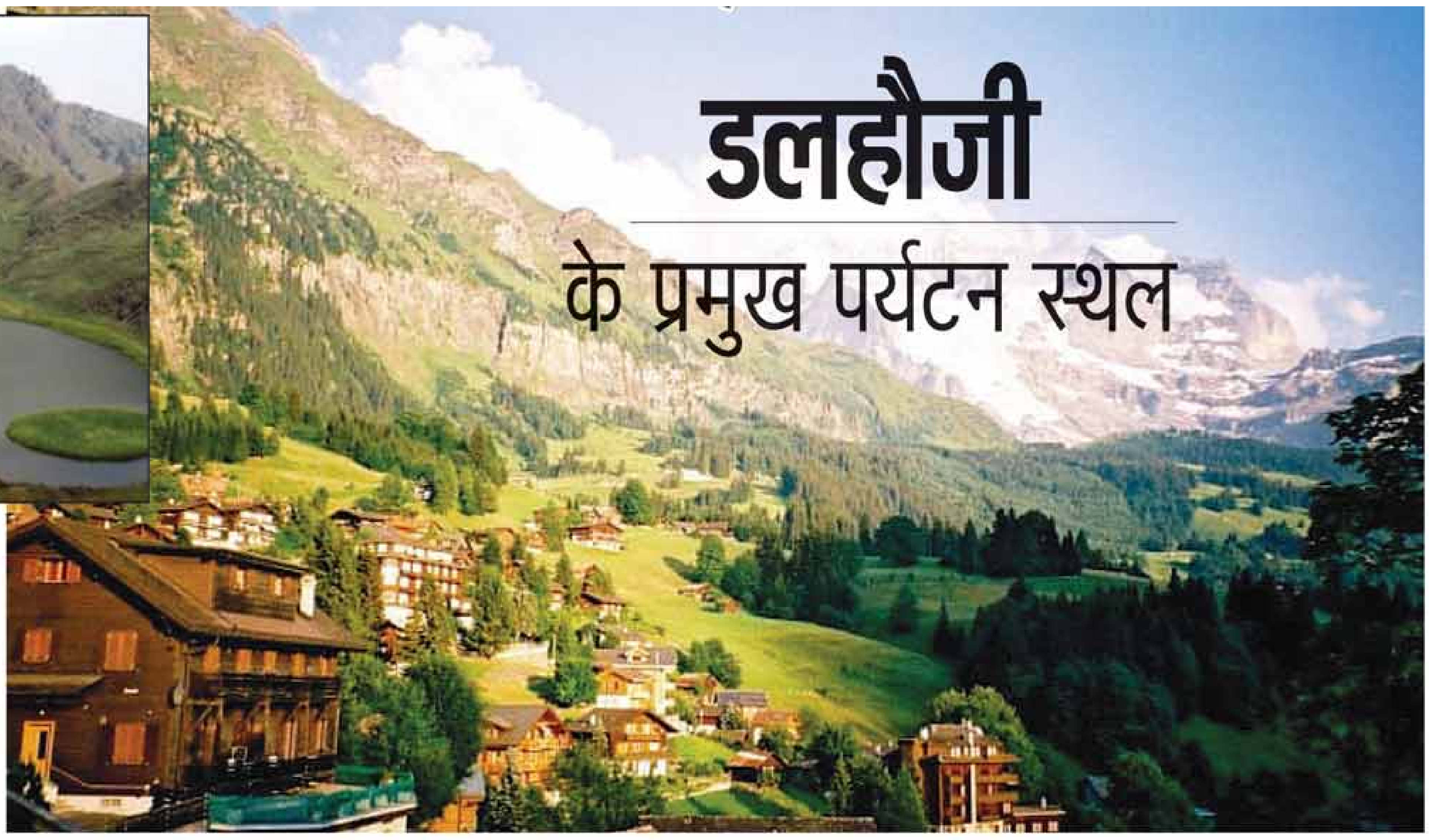

डलहौजी के प्रमुख पर्यटन स्थल

सतधारा झरना या फाल्स हिमाचल प्रदेश की चंबा घाटी में स्थित है, जो बर्फ से ढके पहाड़ों और ताजे देवदार के पेड़ों के शानदार दृश्यों से घिरा हुआ है। 'सतधारा' का मतलब होता है सात झरने, इस झरने का नाम सातधारा सात खूबसूरत झरनों के जल के एक साथ मिलने की वजह से रखा गया है। इन झरनों का पानी समुद्र से 2036 मीटर ऊपर एक बिंदु पर मिलता है। यह जगह उन लोगों के लिए एक खास है, जो शहर की भीड़-भाड़ वाली जिंदगी से दूर जाकर शांति का अनुभव करना चाहते हैं। सतधारा फाल्स अपने औषधीय गुणों की वजह से भी जानी जाती है, क्योंकि यहां के पानी में अभ्रक पाया जाता है, जिसमें त्वचा के रोग ठीक करने के गुण होते हैं।

भीड़-भाड़ वाली जिंदगी से दूर जाकर सतधारा फाल्स में लीजिए शांति का अनुभव

अगर आप डलहौजी के पास घूमने की अच्छी जगह तलाश रहे हैं तो सतधारा फाल्स आपके लिए एक अच्छी जगह है। इसे स्थानीय भाषा में 'गंडक' के नाम से जाना जाता है। यहां का पानी साफ क्रिस्टल और निर्मल है। राजसी सतधारा झरने का पानी की बूंदे जब चट्टानों पर टकराकर उछलती हैं तो पर्यटकों को बेहद आनंदित करती हैं। यहां पानी से गीली हुई मिट्टी की खुशबू हवा को ताजा कर देती है। सतधारा जलप्रपात को चारों ओर का दृश्य अपनी भव्यता के साथ दर्शकों को बेहद प्रभावित करता है। अगर आप सतधारा फाल्स घूमने के अलावा इसके पर्यटन स्थलों की सैर भी करना चाहते हैं तो इस आर्टिकल को पूरा जरूर पढ़ें, इसमें हमने सतधारा फाल्स जाने के बारे में और इसके पास के पर्यटन स्थलों के बारे में पूरी जानकारी दी है।

सतधारा जलप्रपात की मुख्य विशेषताएं

सतधारा जलप्रपात का अपना अलग औषधीय मूल्य है। स्प्रिंग्स में तत्व माइका तत्व पाया जाता है, जिसमें ऐसे औषधीय गुण होते हैं, जो संभावित रूप से कई बीमारियों का इलाज कर सकता है। यह चकाचौंध वाला झरने पंचपुला के रास्ते में स्थित हैं, जो डलहौजी में घूमने के लिए एक और बहुत ही लोकप्रिय जगह है। सतधारा झरने से सूर्यास्त का दृश्य बस शानदार दिखाई देता है, पर्यटकों को देखने में ऐसा लगता है कि एक पीली आग की नारंगी गेंद घूमती है और धीरे-धीरे पहाड़ियों के पीछे छुप जाती है।

सतधारा फाल्स घूमने के लिए टिप्स

- जब आप झरने के क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं और इसमें चारों ओर छींटे आपके कपड़ों को गीला कर सकते है, इसलिए अतिरिक्त कपड़े ले जाना न भूलें।
- फॉल्स से सूर्यास्त देखने के लिए वहां उपस्थित रहने की कोशिश करें।
- ऐसे जूते पहनें जो आपको अच्छी पकड़ और आराम दें, क्योंकि चट्टानों में काई से फिसलन होती है।
- अपने साथ कैमरा ले जाना न भूलें।

सतधारा फाल्स के आसपास के प्रमुख पर्यटन और आकर्षण स्थल

सतधारा फाल्स डलहौजी का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जो शहर से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। अगर आप इस फाल्स के अलावा डलहौजी के प्रमुख पर्यटन स्थलों की सैर करना चाहते है तो यहां दी गई जानकारी को जरूर पढ़ें।

बकरोटा हिल्स

बकरोटा हिल्स जिसे अपर बकरोटा के नाम से भी जाना जाता है, यह डलहौजी का सबसे ऊंचा इलाका है और यह बकरोटा वॉक नाम की एक सड़क का सर्किल है, जो खजियार की ओर जाती है। भले ही इस जगह पर पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए बहुत कुछ नहीं है, लेकिन यहां टहलना और चारों तरफ के आकर्षक दृश्यों को देखना पर्यटकों की आंखों को बेहद आनंद देता है। आपको बता दें कि यह क्षेत्र चारों तरफ से देवदार के पेड़ों और हरी-भरी पहाड़ियों से घिरा हुआ है।

सच पास

सच दर्रा पीर पंजाल पर्वत श्रृंखला के ऊपर 4500 मीटर की ऊंचाई से होकर जाता है और डलहौजी को चंबा और पांगी घाटियों से जोड़ता है। आपको बता दें कि डलहौजी से 150 किमी की दूरी पर यह मार्ग उत्तर भारत में पार करने के लिए सबसे कठिन मार्गों में से एक है, जो लोग एडवेंचर पसंद करते हैं तो अक्सर सच पास (जब यह खुला होता है) का दौरा करते हैं और यहां से बाइक या कार चलाने का रोमांचक अनुभव लेते हैं। अगर आप इस मार्ग से यात्रा करें तो जोखिम न लें और अपने साथ एक अनुभवी ड्राइवर लेकर जाएं। यह चंबा या पांगी घाटी तक पहुंचने के लिए लोगों का पसंदीदा रास्ता है और डलहौजी से ट्रेकिंग के लिए एक प्रसिद्ध बिंदु है।

सुभाष बावली

सुभाष बावली डलहौजी में गांधी चौक से 1 किमी दूर स्थित एक ऐसी जगह है, जिसका नाम प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी सुभाष चंद्र बोस के नाम पर रखा गया। सुभाष बावली एक और अपने खूबसूरत प्राकृतिक दृश्यों, दूर-दूर तक फैले बर्फ के पहाड़ों दृश्यों और सुंदरता के लिए जाना जाता है। सुभाष बावली वो जगह है, जहां पर सुभाष चंद्र बोस 1937 में स्वास्थ्य की खराबी के चलते आए थे और वो इस जगह पर 7 महीने तक रहे थे। इस जगह पर रहकर वे बिलकुल ठीक हो गए थे। आपको बता दें कि यहां पर एक खूबसूरत झरना भी है, जो हिमनदी धारा में बहता है।

डैनकुंड पीक

डैनकुंड पीक जिसे सिंगिंग हिल के नाम से भी जाना जाता है, जो डलहौजी में समुद्र तल से 2755 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। आपको बता दें कि यह डलहौजी में सबसे ऊंचा स्थान होने के कारण यहां से घाटियों और पहाड़ों के अद्भुत दृश्यों को देखा जा सकता है। प्रकृति प्रेमियों के लिए शांत जगह स्वर्ग के सामान है। डलहौजी क्षेत्र में स्थित डैनकुंड सचमुच देखने लायक जगह है, जो अपनी खूबसूरत बर्फ से ढकी चोटियों और हरे-भरे वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। डैनकुंड पीक हर साल भारी संख्या में देश भर से पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करती है।

गंजी पहाड़ी

गंजी पहाड़ी पठानकोट रोड पर डलहौजी शहर से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक सुंदर पहाड़ी है। इस पहाड का नाम गंजी पहाड़ी इसकी खास विशेषता से लिया गया था, क्योंकि इस पहाड़ी पर वनस्पतियों की पूर्ण अनुपस्थिति है। गंजी का मतलब होता है गंजापन। डलहौजी के पास स्थित होने की वजह से यह पहाड़ी एक पसंदीदा पिकनिक स्थल है। सर्दियों के दौरान यह इलाका मोटी बर्फ से ढक जाता है, जो मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है।

चामुंडा देवी मंदिर

चामुंडा देवी मंदिर देवी काली को समर्पित एक महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्र है। इस मंदिर के बारे में कहा जाता है कि यहां पर देवी अंबिका ने मुंडा और चंदा नाम के राक्षसों का वध किया था। इस मंदिर में देवी को एक लाल कपड़े में लपेटकर रखा जाता है, यहां आने वाले पर्यटकों को देवी की मूर्ति को छूने नहीं दिया जाता। इस क्षेत्र में पर्यटकों को कई सुंदर दृश्य भी देखने को मिलते हैं।

रॉक गार्डन

रॉक गार्डन डलहौजी में एक सुंदर उद्यान और एक लोकप्रिय पिकनिक स्थल है। इस पार्क में पर्यटक आराम करने के अलावा, इस क्षेत्र में उपलब्ध कई साहसिक खेलों का भी मजा ले सकते हैं, जिनमें जिप लाइनिंग आदि शामिल हैं।

खाज्जिअर

खाज्जिअर डलहौजी के पास स्थित एक छोटा सा शहर है जिसको 'मिनी स्विट्जरलैंड' या 'भारत का स्विटजरलैंड' के नाम से भी जाना जाता है। इस स्थान की खूबसूरती हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करती है। 6,500 फीट की ऊंचाई पर स्थित खाज्जिअर अपनी प्राकृतिक सुंदरता की वजह से डलहौजी के पास घूमने की सबसे अच्छी जगहों में से एक है। इस जगह होने वाले साहसिक खेल जोरबिंग, ट्रेकिंग पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

पंचपुला

पंचपुला हरे देवदार के पेड़ों के आवरण से घिरा एक झरना है, जो डलहौजी के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। पंचपुला वो जगह है, जहां पर पांच धाराएं एक साथ आती हैं। पंचपुला की मुख्य धारा डलहौजी के आसपास विभिन्न जगहों में पानी की पूर्ति करती है। यह जगह ट्रेकिंग और खूबसूरत दृश्यों की वजह से जानी जाती है। पंचपुला के पास एक महान क्रांतिकारी सरदार अजीत सिंह (शहीद भगत सिंह के चाचा) की याद में एक समाधि बनाई गई है, जहां उन्होंने अंतिम सांस ली थी। मानसून के मौसम में इस जगह के प्राचीन पानी का सबसे अच्छा आनंद लिया जाता है, जब पानी गिरता तो यहां का वातावरण पर्यटकों को आनंदित करता है।

डलहौजी जाने के लिए यह है सबसे अच्छा समय

डलहौजी अपनी आदर्श जलवायु की वजह से एक ऐसी जगह है, जहां आप पूरे वर्ष भर घूम सकते हैं। हालांकि, डलहौजी जाने का सबसे अच्छा समय मार्च-जून के बीच का होता है। मार्च और अप्रैल के महीनों में यहां पर बर्फ पिघलना शुरू हो जाती है और जब सूरज की किरणें बर्फ से ढके पहाड़ों और चरागाहों से टकराती है, तब इस जगह की चमक देखने लायक होती है। इस समय यहां का मौसम बहुत सुहावना रहता है आप मार्च और अप्रैल में ठंड का अनुभव कर सकते हैं और जून के महीने में यहां का तापमान थोड़ा बढ़ने लगता है। गर्मियों के महीनों में भी डलहौजी का मौसम काफी अच्छा होता है, जिसकी वजह से यह प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग के सामान है। मानसून भी यहां का मौसम सुहावना है, क्योंकि मध्यम वर्षा से आपकी योजनाओं में कोई रुकावट नहीं आती। डलहौजी में सर्दियां साहसिक गतिविधियों के लिए सही हैं।

हवाई जहाज से सतधारा फाल्स ऐसे पहुंचें: हवाई जहाज से डलहौजी पहुंचने कांगड़ा में गग्गल हवाई अड्डा इसका सबसे निकटतम घरेलू हवाई अड्डा है। यह हवाई अड्डा शहर से 13 किमी दूर है और यहां से डलहौजी हिल स्टेशन तक पहुंचने के लिए टैक्सी आसानी से उपलब्ध हैं। इसके अलावा आप अन्य हवाई अड्डे चंडीगढ़ (255 किमी), अमृतसर (208 किमी) और जम्मू (200 किमी) के लिए भी उड़ान ले सकते हैं।

रेलगाड़ी से सतधारा फाल्स ऐसे पहुंचें: डलहौजी का सबसे निकटतम रेल स्टेशन पठानकोट है, जो इस पहाड़ी शहर से 80 किमी दूर स्थित है और भारत के विभिन्न शहरों, जैसे दिल्ली, मुंबई और अमृतसर से कई ट्रेनों के माध्यम से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। पठानकोट रेलवे स्टेशन से डलहौजी पहुंचने के लिए आपको बाहर से टैक्सियां मिल जाएंगी।

सड़क मार्ग से सतधारा फाल्स ऐसे पहुंचें: डलहौजी सड़क मार्ग की मदद से आसपास के प्रमुख शहरों और जगहों से जुड़ा हुआ है। राज्य बस सेवा और लक्जरी कोच डलहौजी को आसपास की सभी प्रमुख जगहों और शहरों से जोड़ते हैं। दिल्ली से डलहौजी के लिए रात भर लक्जरी बसें भी उपलब्ध है। इस मार्ग पर टैक्सी और निजी वाहन भी मिल जाते हैं।

स्त्री की देह के आकार वाली है रेणुका झील

रेणुका झील हिमाचल प्रदेश के नाहन से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। रेणुका झील की समुद्र तल से ऊंचाई लगभग 2200 फीट है। यह एक अत्यंत रमणीक झील है, जो लगभग तीन किलोमीटर लंबी तथा आधा किलोमीटर चौड़ी एक अदभुत झील है। इस झील का आकार एक लेटी हुई स्त्री की देह के समान है। जो इसे अदभुत एवं अनोखा बनाता है।

इस झील के चारों ओर हरियाली एवं इसके पानी मे अठखेलियां करती मछलियां पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। इस झील की गणना एक पावन तीर्थ स्थल के रूप में भी की जाती है। हर वर्ष दिपावली के लगभग दस दिन बाद यहां एक विशाल मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें हजारों श्रद्धालु भाग लेते हैं। झील के किनारे मां रेणुका और परशुराम का प्रसिद्ध मंदिर है तथा एक छोटा सा चिडियाघर है, जो पर्यटकों को काफी पसंद आता है। झील में मनोरंजन के लिए बोटिंग करने की सुविधा उपलब्ध है, जिसमें बैठकर सैलानी झील के चारों ओर की प्राकृतिक सुंदरता के दर्शन कर सकते हैं, रेणुका झील का स्त्री रूपी आकार देखने के लिए यहा से आठ किलोमीटर ऊपर जामु चोटी पर जाना पड़ता है। जहां से रेणुका झील का आकार लेटी हुई स्त्री की देह के समान दिखाई पड़ता है।

रेणुका झील का इतिहास

रेणुका झील कैसे बनी और इसकी धार्मिक महत्व के पीछे कई मशहूर दंत कथाएं प्रचलित है। एक कहानी के अनुसार कहा जाता है कि बहुत समय पहले यहा राजा रेणु रहा करते थे। उनकी दो सुंदर पुत्रिया थीं, जिनमें से एक नैनुका तथा दूसरी पुत्री रेणुका थी। एक बार राजा ने दोनो पुत्रियों से प्रश्न किया कि वो किसका दिया खाती है, जिसके जवाब में नैनुका ने कहा कि वह अपने पिता का दिया खाती है। जबकि रेणुका ने जवाब दिया कि वह भगवान का दिया और अपने नसीब का खाती हूं। रेणुका के जवाब से राजा अप्रसन्न हो गए और उन्होंने रेणुका को सबक सिखाने का निर्णय लिया। कुछ समय बाद राजा ने बड़ी पुत्री नैनुका का विवाह बड़ी धूम-धाम से एक पराक्रमी राजा सहस्त्रबाहु से कर दिया और छोटी पुत्री रेणुका को सबक सिखाने रेणुका का विवाह एक सीधे साधे तपस्वी ऋषि जमदग्नि से कर दिया। हालांकि रेणुका राजसी ठाठ-बाट मे पली बढ़ी थी। फिर भी उसने ऋषि जमदग्नि को अपना पति स्वीकार किया और तन मन से उसकी सेवा करने लगी। एक दिन राजा सहस्त्रबाहु की दृष्टि रेणुका पर पड़ी तो वह उसे देखता ही रह गया। वास्तव मे रेणुका का रूप लावण्य उसके हृदय में उतर गया था। उसने उसी समय रेणुका को अपनी रानी बनाने का फैसला किया और रेणुका को पाने की युक्ति सोचने लगा। अपने षडयंत्र के तहत एक दिन वह चुपचाप ऋषि जमदग्नि के आश्रम पहुंचा और ध्यानमग्न जमदग्नि को उसने अपने बाण से मार डाला। उसके बाद वह रेणुका का चीरहरण करने उसकी तरफ बढ़ा। रेणुका सहस्त्रबाहु के अपवित्र इरादों को भांप गई और भागकर नीचे तलहटी मे जा पहुंची। सहस्त्रबाहु रेणुका का पीछा करता हुआ, उसके पीछे दौड़ा। इससे पहले वह रेणुका को पकड़ पाता। एकाएक धरती फटी और देखते ही देखते रेणुका उसमें समा गई। रेणुका के धरा मे समाते ही पानी की धाराएं फूट पड़ी और देखते ही देखते उस स्थान ने एक झील का रूप धारण कर लिया। तभी से यह झील रेणुका झील के नाम से प्रसिद्ध हो गई।

रेणुका झील कैसे पहुंचें

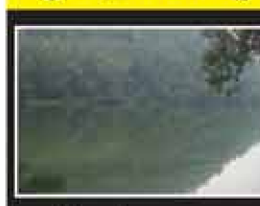

हवाई मार्ग

मुब्बार हटटी यहा का सबसे नजदीकी हवाई अड्डा है, जो यहा से 40 किमी की दूरी पर स्थित है। यहा से टैक्सी द्वारा जाया जा सकता है।

रेल मार्ग

यहा का सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन कालका है, जो लगभग 110 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां से आप बस या टैक्सी के द्वारा जा सकते है।

सड़क मार्ग

यह स्थल सड़क मार्ग से जुड़ा है।

CMYK CMYK CMYK CMYK